नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 301, नई दिल्ली, बुधवार 31 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पाँच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार।

03 शिव-शक्तिः सृष्टि के सनातन संतुलन का दिव्य दर्शन

06 अंतरिक्ष चिकित्सा शोधकर्ताओं को दूसरे अंतरिक्ष युग में लाती है

08 हेरोइन–आईसीई सप्लाई चेन का पर्दाफाश; 4 किलो हेरोइन, 1 किलो आईसीई....

पीडब्ल्यूडी दिल्ली की पहल - सुरक्षित सड़क, सुरक्षित दिल्ली

पिंकी कुंडू

लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) दिल्ली सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा और त्वरित सहायता को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से हर 500 मीटर पर हेल्पलाइन साइनबोर्ड लगाए जा रहे हैं।

अब सभी प्रमुख सड़क ज़ोन में स्ट्रीट हेल्पलाइन साइनबोर्ड अनिवार्य किए गए हैं, ताकि किसी भी आपात स्थिति में नागरिकों को तुरंत सहायता मिल सके।

यदि आपको सड़कों पर

➡ भटका हुआ पशु
➡ सड़क से जुड़ी कोई समस्या
➡ या कोई दुर्घटना दिखाई दे

तो सीधे हेल्पलाइन नंबर 155305 पर रिपोर्ट करें।

सड़कें हों अधिक सुरक्षित - सहायता हो और तेज़

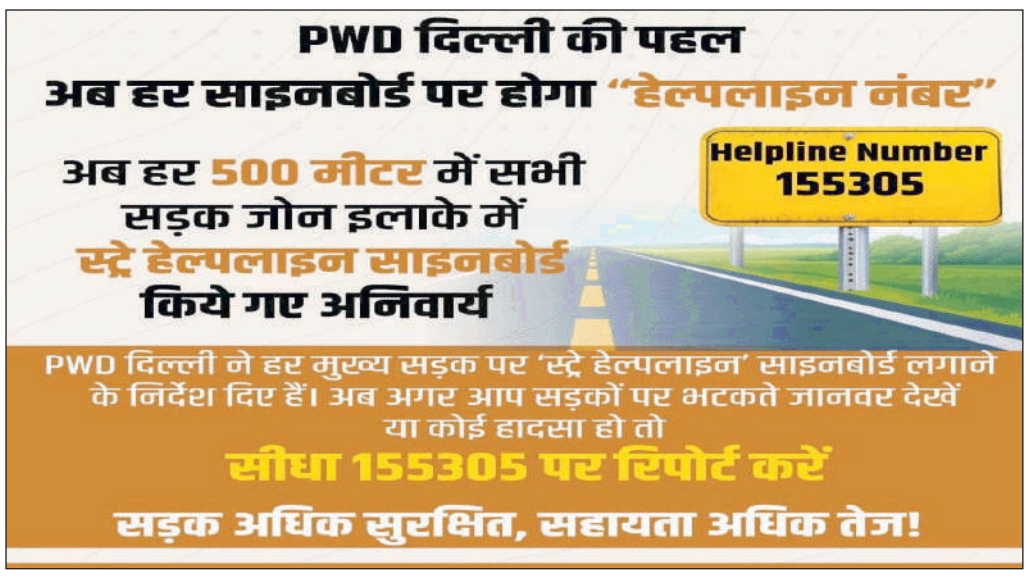

दिल्ली–एनसीआर, हरियाणा, पंजाब व राजस्थान में परिवहन क्षेत्र की दयनीय हालत

- सरकार की नीतियाँ बनीं ट्रक मालिकों, चालकों व परिवहन व्यवसायियों की सबसे बड़ी बाधा
– राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव की कलम से

नई दिल्ली/दिल्ली–एनसीआर।

देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहे जाने वाले सड़क परिवहन क्षेत्र की हालत आज दिल्ली–एनसीआर, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में अत्यंत चिंताजनक हो चुकी है। करोड़ों लोगों की रोज़ी-रोटी से जुड़े इस क्षेत्र में ट्रक मालिक, चालक और परिवहन व्यवसायी अभूतपूर्व संकट से गुजर रहे हैं। ईंधन की बढ़ती कीमतें, कठोर नियम-कानून, अव्यावहारिक पर्यावरणीय आदेश, भारी-भरकम टैक्स, टोल व जुर्माने, साथ ही प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने इस उद्योग को लगभग घुटनों पर ला दिया है।

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने केंद्र सरकार को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि अब भी इस स्थिति की गंभीरता को नहीं समझा गया, तो आने वाले समय में हालात "बद से बदतर" होने से कोई नहीं रोक सकता। यह केवल परिवहन क्षेत्र का संकट नहीं रहेगा, बल्कि इसका सीधा असर देश की आपूर्ति श्रृंखला, महँगाई, उद्योगों और आम जनता पर पड़ेगा।

परिवहन क्षेत्रः अर्थव्यवस्था की रीढ़, फिर भी उपेक्षित

भारत में 65 प्रतिशत से अधिक माल ढुलाई सड़क परिवहन के माध्यम से होती है। दिल्ली–एनसीआर, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान जैसे राज्य देश के औद्योगिक, कृषि और व्यापारिक केंद्र हैं। यहीं से अनाज, औद्योगिक कच्चा माल, उपभोक्ता वस्तुएँ और निर्यात योग्य उत्पाद पूरे देश में भेजे जाते हैं। इसके बावजूद इन राज्यों के ट्रक मालिकों और चालकों को सबसे अधिक प्रशासनिक दबाव और आर्थिक शोषण झेलना पड़ रहा है।

डॉ. यादव का कहना है कि सरकारें परिवहन क्षेत्र को केवल "रेवेन्यू कलेक्शन मशीन" समझ रही हैं, जबकि इस क्षेत्र को संरक्षण, सहूलियत और सम्मान की सबसे अधिक आवश्यकता है।

ईंधन कीमतेंः कमर तोड़ने वाली मार

डीज़ल की कीमतें पिछले कुछ वर्षों में रिकॉर्ड स्तर पर पहुँची हैं। एक ट्रक की औसत दैनिक खपत को देखें तो मालिक को केवल ईंधन पर ही हजारों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। भाड़ा दरें स्थिर हैं या कई जगहों पर घट रही हैं, जबकि परिचालन लागत लगातार बढ़ रही है।

डॉ. राजकुमार यादव के अनुसार, "डीज़ल पर टैक्स कम किए बिना परिवहन व्यवसाय को जीवित रखना असंभव होता जा रहा है। सरकार को समझना होगा कि ट्रक मालिक कोई मुनाफाखोर नहीं, बल्कि देश के लिए काम करने वाला श्रमिक वर्ग है।"

पर्यावरणीय नियमः समाधान या सज़ा?

दिल्ली–एनसीआर में लागू पुराने वाहनों पर प्रतिबंध, अचानक जब्ती और भारी जुर्माने ने हजारों ट्रक मालिकों को सड़क पर ला दिया है। करोड़ों रुपये खर्च कर खरीदे गए वाहनों को बिना वैकल्पिक समाधान दिए बेकार घोषित कर देना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

डॉ. यादव स्पष्ट कहते हैं कि पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है, लेकिन इसकी आड़ में गरीब ट्रक मालिकों को अपराधी की तरह ट्रीट करना अमानवीय है। सरकार को स्क्रैप पॉलिसी, सब्सिडी और चरणबद्ध बदलाव लागू करने चाहिए, न कि अचानक फरमान जारी कर पूरे क्षेत्र को तबाह करना चाहिए।

टोल, चालान और प्रशासनिक उत्पीड़न

हरियाणा, राजस्थान और पंजाब के नेशनल हाईवे पर टोल टैक्स की भरमार है। कई मार्गों पर हर 30–40 किलोमीटर में टोल प्लाज़ा है। इसके अलावा ओवरलोडिंग, प्रदूषण प्रमाणपत्र, परमिट, फिटनेस और अन्य नियमों के नाम पर चालकों को बार-बार रोका जाता है।

डॉ. यादव का आरोप है कि नियमों की आड़ में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार फल-फूल रहा है। "एक ट्रक चालक दिनभर सड़क पर मेहनत करता है और शाम तक आधी कमाई चालान व 'अनौपचारिक वसूली' में चली जाती है," उन्होंने कहा।

चालकों की स्थितिः शोषण और असुरक्षा

ट्रक चालक देश के सबसे उपेक्षित श्रमिकों में से हैं। न उनके लिए सुरक्षित विश्राम स्थल हैं, न शौचालय, न स्वास्थ्य सुविधाएँ। लंबी ड्यूटी, अनियमित समय और मानसिक दबाव के कारण दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ रही है।

डॉ. यादव ने कहा कि सरकार केवल सड़क सुरक्षा के नाम पर चालान बढ़ाने में लगी है, जबकि चालक कल्याण के लिए ठोस नीति कहीं दिखाई नहीं देती।

केंद्र सरकार को आईना

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी की ओर से डॉ. राजकुमार यादव ने केंद्र सरकार से सीधा सवाल किया है—

क्या देश की अर्थव्यवस्था बिना ट्रकों के चल सकती है?

यदि नहीं, तो फिर इस क्षेत्र के साथ सौतेला व्यवहार क्यों?

उन्होंने मांग की कि परिवहन नीति को जमीनी सच्चाई के अनुरूप बनाया जाए।

मुख्य मांगें

डीज़ल पर केंद्रीय करों में तत्काल कटौती।

पर्यावरण नियमों में व्यवहारिक और चरणबद्ध सुधार।

टोल टैक्स की समीक्षा और अनावश्यक टोल प्लाज़ा हटाए जाएँ।

चालान व्यवस्था में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार पर सख्त कार्रवाई।

ट्रक चालकों के लिए राष्ट्रीय स्तर की सामाजिक सुरक्षा योजना।

परिवहन संगठनों से नियमित संवाद।

चेतावनी और अपील

डॉ. राजकुमार यादव ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि सरकार ने अब भी आंखें मूंदे रखीं, तो आने वाले समय में परिवहन ठप होने जैसी स्थिति बन सकती है। इसका असर सीधे आम जनता तक पहुँचेगा—महँगाई बढ़ेगी, सप्लाई चेन टूटेगी और उद्योग प्रभावित होंगे।

उन्होंने अपील की कि सरकार परिवहन क्षेत्र को बोझ नहीं, बल्कि साझेदार के रूप में देखे। सम्मान, संवाद और सुधार ही इस संकट का एकमात्र समाधान है।

यह खबर केवल चेतावनी नहीं, बल्कि देश की सरकार के लिए एक आईना है—जिसमें परिवहन क्षेत्र की वास्तविक तस्वीर साफ दिखाई देती है।

जनकल्याण परिवहन सीरीज़: राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज़

(लेखक: संजय कुमार बाठला)

भाग 1: मिलावट का ट्रैफिक – भोजन से ईंधन तक विष का सफर

मुख्य विचार:

भोजन ही नहीं, बल्कि ईंधन और ऑटोमोबाइल उद्योग में भी मिलावट की प्रवृत्ति खतरनाक रूप से बढ़ रही है। नकली या निम्न-गुणवत्ता वाले पेट्रोल, डीजल और ल्यूब्रिकेंट्स न केवल इंजन को नुकसान पहुँचाते हैं, बल्कि वातावरण में ज़हरीले प्रदूषक छोड़ते हैं।

संदेश:

ईंधन गुणवत्ता नियंत्रण, BIS मानक, और निरीक्षण प्रणाली की सख्ती ही मिलावट की जड़ों पर प्रहार करेगी।

भाग 2: धुआँ और सांस – वाहन प्रदूषण से बढ़ता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

मुख्य विचार:

दिल्ली सहित भारत के प्रमुख शहरों में वाहन प्रदूषण फेफड़ों, हृदय और मस्तिष्क संबंधी बीमारियों का सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है।

संदेश:

स्वच्छ ईंधन नीति, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन, और सार्वजनिक परिवहन की मजबूती जनस्वास्थ्य की बुनियाद है। नागरिक का जिम्मेदार व्यवहार—जैसे नियमित वाहन जांच और साझा सफर—भी बदलाव ला सकता है।

भाग 3: सड़कें या रणभूमि – सुरक्षा में लापरवाही की कीमत

मुख्य विचार:

भारत में हर वर्ष लगभग 1.5 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं। दोष सिर्फ सड़कों का नहीं, बल्कि हमारी मानसिकता, अधूरी व्यवस्था और ट्रैफिक अनुशासन की कमी का भी है।

संदेश:

सड़क सुरक्षा केवल नीति नहीं, यह आचरण का प्रश्न है। हेलमेट, सीट बेल्ट, और औपचारिक ड्राइविंग शिक्षा—यही जीवनरक्षक राष्ट्रभक्ति है।

भाग 4: परिवहन और जनस्वास्थ्य – हर सांस की कीमत

मुख्य विचार:

प्रदूषित हवा सिर्फ पर्यावरणीय नहीं, बल्कि चिकित्सा आपदा (Public Health Disaster) बन चुकी है। बच्चे, बुजुर्ग और यात्री सबसे अधिक प्रभावित हैं।

संदेश:

समय आ गया है कि परिवहन व्यवस्था को स्वास्थ्य नीति का हिस्सा माना जाए। "क्लीन ट्रांसपोर्ट, हेल्दी सिटीज़" अब केवल नारा नहीं, राष्ट्रीय जननीति बने।

भाग 5: नैतिकता की गाड़ी – नागरिक ही असली चालक

मुख्य विचार:

कानून और नीतियाँ अपनी जगह हैं, पर नैतिकता और जिम्मेदारी ही बदलाव का इंजन हैं। नागरिक व्यवहार में ईमानदारी, दूसरों की सुरक्षा का सम्मान और जिम्मेदार उपभोग ही मिलावट-मुक्त भारत का रास्ता दिखाएँगे।

संदेश:

सच्ची देशभक्ति वही है, जो अपने कर्तव्य से राष्ट्र और मानवता—दोनों की रक्षा करे।

(श्रृंखला निष्कर्ष): परिवहन केवल गति नहीं, बल्कि जनजीवन की धड़कन है। यदि इस धड़कन में ईंधन, वायु, और नैतिकता की शुद्धता बनी रहे—तो राष्ट्र का शरीर स्वस्थ और आत्मा सशक्त रहेगी। यही सच्चा "परिवहन में जनकल्याण" होगा।

जनकल्याण परिवहन सीरीज, भाग:- 4

राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज़

परिवहन और जनस्वास्थ्य — हर सांस की कीमत

लेखक:- संजय कुमार बाठला

कभी सड़कें विकास का प्रतीक मानी जाती थीं; आज वही सड़कें हमारे फेफड़ों की परीक्षा ले रही हैं। भारत के नगरों की हवा अब सिर्फ धूल या धुएँ से नहीं, बल्कि लाखों इंजनों की अनवरत साँसों से विषैली होती जा रही है। दिल्ली जैसे महा-नगरों में, वाहन उत्सर्जन कुल वायु प्रदूषण का 35–40% तक जिम्मेदार कारक बन चुका है।

प्रदूषित हवा अब पर्यावरणीय नहीं, चिकित्सकीय आपदा है।

लैंसेट और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में हर वर्ष लगभग 14 लाख लोगों की मौत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वायुजनित प्रदूषण से होती है। फेफड़ों की बीमारियाँ, अस्थमा, हृदय रोग, और स्ट्रोक जैसी स्थितियाँ अब आमजन की त्रासदी बन चुकी हैं। बच्चे अधूरे फेफड़ों के साथ बड़े हो रहे हैं, बुजुर्गों की सांसें कमजोर हो चुकी हैं—और यह सब हमारे परिवहन ढांचे की जवाबदेही से जुड़ा यथार्थ है।

परिवहन मोड़ पर – तकनीक या व्यवहार?

भारत ईंधन गुणवत्ता के स्तर पर BS-VI तक पहुंच चुका है, लेकिन व्यवहार अब भी BS-I युग की मानसिकता में फँसा हुआ है। पुराने डीज़ल वाहनों का लंबा जीवनचक्र, जर्जर ऑटो और ट्रकों का निरंतर संचालन, तथा इलेक्ट्रिक वाहनों की धीमी स्वीकृति—ये सब मिलकर प्रदूषण की उस चादर को और गाढ़ा बना रहे हैं, जिसे हम रोज़ ओढ़ने को मजबूर हैं।

अब यह स्पष्ट है कि प्रदूषण घटाने का सवाल केवल तकनीकी उन्नयन का नहीं, बल्कि व्यवहार परिवर्तन का है।

नीति और नागरिक – साझा जिम्मेदारी

- सार्वजनिक परिवहन को स्वास्थ्य सुरक्षा नीति का अंग माना जाए, मात्र सुविधा का विषय नहीं।
- ईंधन गुणवत्ता, उत्सर्जन परीक्षण, और वाहन निरीक्षण की निगरानी पारदर्शी व जवाबदेह बने।
- इलेक्ट्रिक, हाइड्रोजन, और स्वच्छ ऊर्जा वाहनों को शहरी यातायात नीतियों के केंद्र में लाया जाए।
- नागरिक स्तर पर, अनावश्यक निजी वाहन उपयोग घटाना, साझा यात्रा (carpooling), और नियमित वाहन जांच अब समाजिक स्वास्थ्य दायित्व हैं।

सांख्यिकीय संदर्भ बॉक्स

सूचकांक	आँकड़ा / स्रोत
दिल्ली में वाहन प्रदूषण का योगदान	35–40% (CAQM, 2025)
वायु प्रदूषण से वार्षिक मौतें	14 लाख (WHO, 2024)
भारत के 10 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से 8	उत्तर भारत में स्थित (IQAir, 2024)
सबसे अधिक प्रभावित समूह	बच्चे, बुजुर्ग, और दैनिक यात्री

अंतिम संदेश : अब समय आ गया है कि परिवहन व्यवस्था को स्वास्थ्य नीति का अनिवार्य स्तंभ माना जाए। स्वच्छ हवा कोई विलासिता नहीं—यह जीवित रहने का मौलिक अधिकार है। भारत की नई नीति दृष्टि को यह स्वीकारना होगा कि—

"क्लीन ट्रांसपोर्ट, हेल्दी सिटीज़" सिर्फ नारा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय संकल्प बने।

तभी हर सांस को सच में आज़ादी मिलेगी।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

"आंध्र प्रदेश CID ने ₹20 करोड़ का सिम बॉक्स सिंडिकेट ध्वस्त किया – नागरिक संदिग्ध इंस्टॉलेशन तुरंत पुलिस को रिपोर्ट करें"

SIP कॉलिंग, सिम बॉक्स और अवैध एक्सचेंज – भारत की साइबरक्राइम फ्रंटलाइन

SIP कॉलिंग संक्षेप में

* SIP (Session Initiation Protocol) इंटरनेट पर वॉइस, वीडियो और मैसेजिंग को सक्षम करता है।

* व्यवसायों के लिए वैध, लेकिन अपराधी सिम बॉक्स + SIP सर्वर का उपयोग कर कॉल स्पूफिंग, टेलीकॉम गेटवे को बायपास और धोखाधड़ी करते हैं।

हाल के मामले (दिसंबर 2025)

1. आंध्र प्रदेश CID कार्रवाई – 14 आरोपी, जिनमें एक विदेशी नागरिक शामिल, गिरफ्तार। 6 राज्यों में छापों के दौरान 14 सिम बॉक्स, 1,496 सिम कार्ड, राउटर, कैमरे और मोबाइल जब्त। पीड़ितों को लगभग ₹20 करोड़ का नुकसान।

2. बेंगलुरु सिमबॉक्स रैकेट – पुलिस ने अवैध एक्सचेंज पकड़े जो अंतरराष्ट्रीय कॉल को स्थानीय में बदल रहे थे।

3. CBI FIR (दिल्ली) – कंपनी ने 20,000+ सिम अवैध रूप से खरीदे, डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले में इस्तेमाल। पीड़ितों को नकली कानून प्रवर्तन कॉल से डराया गया।

अपराधी SIP और सिम बॉक्स का उपयोग क्यों करते हैं

- कॉलर आईडी स्पूफिंग से विदेशी कॉल स्थानीय दिखती है।
- विदेश से रिमोट ऑपरेशन (कंबोडिया, थाईलैंड, कनाडा)।
- क्लाउड PBX से हजारों SIP लाइनें तुरंत सक्रिय।
- लेयर्ड रूटिंग से असली स्रोत छिपा रहता है।

SIP – दोधारी तलवार

- सभी डिवाइस, ऐप्स, ब्राउज़र पर काम करता है।
- लोकेशन फ्री, स्केलेबल, बहुउपयोगी।
- कस्टम रूटिंग से स्रोत छिपता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव

- आर्थिक नुकसानः टेलीकॉम राजस्व की हानि।
- नागरिक जोखिमः डिजिटल गिरफ्तारी, नकली CBI/बैंक कॉल।
- कानून प्रवर्तन चुनौतीः SIP रूट्स का पता लगाना कठिन।
- साइबर जोखिमः जासूसी और संगठित धोखाधड़ी गिरोह।

प्रतिरोधक उपाय

- DoTः स्पूफ किए गए अंतरराष्ट्रीय कॉल ब्लॉक करना।
- पुलिस/CBIः अवैध एक्सचेंज पर कार्रवाई।
- टेलीकॉम कंपनियाँः मज़बूत KYC और ट्रैफिक मॉनिटरिंग।
- वैश्विक सहयोगः विदेशों में SIP सर्वर ट्रैक करने के लिए आवश्यक।

नागरिक सुरक्षा सुझाव

- अज्ञात स्थानीय दिखने वाले नंबरों पर भरोसा न करें।
- सत्यापित करें: CBI, TRAI, बैंक कभी फोन पर पैसे नहीं मांगते।
- तुरंत रिपोर्ट करें: डायल 1930, विज़िट करें cybercrime.gov.in, या उपयोग करें संचार साथी चक्षु।
- यदि आप अपने क्षेत्र में सिम बॉक्स इंस्टॉलेशन देखें या संदेह करें – तुरंत पुलिस को सूचित करें।
- जागरूकता सबसे मज़बूत फ़ायरवॉल है—परिवार और सहकर्मियों को शिक्षित करें।

मुख्य संदेश

* सिम बॉक्स साधारण उपकरण नहीं हैं—ये साइबर अपराध के हथियार हैं।

* सतर्कता + तुरंत रिपोर्टिंग + जागरूकता = सबकी सुरक्षा।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

शीतल पेयों(Cold drinks)का मानव स्वास्थ्य पर गुप्त आक्रमण

आज के युग में, जहाँ प्यास बुझाने के लिए एक ठंडी, झागदार बोतल मात्र एक पल की दूरी पर है, कोल्ड ड्रिंक्स आधुनिक जीवन की सबसे आकर्षक लेकिन सबसे खतरनाक आदतों में से एक बन चुकी हैं। चमकीले रंग, मीठा स्वाद और त्वरित ताज़गी का वादा— ये सब मिलकर इन्हें निर्दोष प्रतीत कराते हैं। परंतु इस चमकदार आवरण के भीतर छिपा है एक धीमा, मौन और घातक विष, जो मानव शरीर की जीवन-लय को भीतर ही भीतर नष्ट करता चला जाता है।

यह केवल अतिरिक्त कैलोरी का प्रश्न नहीं है। नियमित रूप से कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन शरीर के चयापचय तंत्र, यकृत (लिवर), रक्त-वसा (ट्राइग्लिसराइड्स) और यहाँ तक कि आंतों में कैंसर तक को जन्म देने वाली परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है।

वर्ष 2025 तक के नवीनतम वैज्ञानिक निष्कर्ष इस सत्य को और भी स्पष्ट कर चुके हैं।

समग्र स्वास्थ्य पर हमलाः शरीर की संतुलन-व्यवस्था का विध्वंस

कोल्ड ड्रिंक्स में प्रचुर मात्रा में फ्रक्टोज़ और ग्लूकोज़ होते हैं। एक साधारण कैन में लगभग 10 चम्मच चीनी के बराबर शर्करा होती है। यह शर्करा रक्त में पहुँचते ही—

रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) को तेजी से बढ़ाती है

इंसुलिन का असामान्य स्राव कराती है

धीरे-धीरे इंसुलिन रेज़िस्टेंस, मोटापा और टाइप-2 डायबिटीज़ की नींव रखती है

सबसे खतरनाक तथ्य यह है कि तरल चीनी पेट नहीं भरती, बल्कि भूख और बढ़ा देती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति अधिक भोजन करता है, जिससे पेट की चर्बी (विसरल फैट) बढ़ती है और शरीर में दीर्घकालिक सूजन (क्रॉनिक इंफ्लेमेशन) उत्पन्न होती है।

2025 के अध्ययनों के अनुसार:

* प्रतिदिन एक कोल्ड ड्रिंक पीने से हृदय रोग का जोखिम लगभग 30% तक बढ़ जाता है

* स्ट्रोक, हार्ट फेल्योर और रक्तवाहिकाओं की गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ता है,

* यहाँ तक कि नियमित व्यायाम भी इस नुकसान को पूरी तरह निष्क्रिय नहीं कर पाता*

"डाइट" कोल्ड ड्रिंक्स भी सुरक्षित नहीं कृत्रिम मिठास (जैसे एस्पार्टेम) आंतों के सूक्ष्म जीवों (गट माइक्रोबायोम) को असंतुलित कर देती है, जिससे—

* मेटाबॉलिक विकार

* उच्च रक्तचाप

* हृदय संबंधी घटनाओं का जोखिम बढ़ जाता है

यकृत पर प्रहारः फैटी लिवर और ट्राइग्लिसराइड्स का विस्फोट जो लोग फैटी लिवर रोग (अब जिसे MASLD कहा जाता है) से ग्रसित हैं, उनके लिए कोल्ड ड्रिंक्स किसी धीमे ज़हर से कम नहीं।

वैज्ञानिक सच्चाई:

* फ्रक्टोज़ का चयापचय मुख्यतः लिवर में होता है

* अधिक फ्रक्टोज़ → अधिक

वसा निर्माण → लिवर में चर्बी का जमाव

यह स्थिति आगे चलकर फाइब्रोसिस, सिरोसिस और लिवर फेल्योर तक पहुँच सकती है

2025 के डेटा के अनुसारः

* प्रतिदिन 9 औंस या अधिक (Cold drinks/Sugary drinks) शीतल पेय/शुगर-ड्रिंक लेने से फैटी लिवर का जोखिम 50% तक बढ़ जाता है

* कृत्रिम मिठास वाले पेय भी जोखिम को 60% तक बढ़ा सकते हैं*

ट्राइग्लिसराइड्स की समस्या कोल्ड ड्रिंक्स

*लिवर में VLDL (खराब वसा कण) के निर्माण को बढ़ाती हैं, जिससेः

* रक्त गाढ़ा होता है

* धमनियाँ संकरी होती हैं

* हार्ट अटैक और पैंक्रियाटाइटिस का खतरा बढ़ता है

यह स्थिति विशेष रूप से युवाओं और किशोरों में भी देखी जा रही है— यह एक गंभीर चेतावनी है।

कैंसर का मौन निमंत्रणः कोलोरेक्टल कैंसर से संबंध कोल्ड ड्रिंक्स का खतरा केवल यकृत और हृदय तक सीमित नहीं है। नवीनतम शोधों ने इन्हें कोलोरेक्टल कैंसर (आंतों का कैंसर) से भी जोड़ा है।

कैसे बढ़ता है कैंसर का खतरा?

* अधिक शर्करा → अधिक इंसुलिन → अधिक IGF-1

* IGF-1 कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को तेज करता है

* फ्रक्टोज़ कैंसर कोशिकाओं के लिए ईंधन का कार्य करता है

2025 के प्रयोगात्मक अध्ययनों में पाया गयाः रोज़ एक कोल्ड ड्रिंक के सेवन से बराबर

* शर्करा से कैंसर कोशिकाओं की आक्रामकता बढ़ी

* युवाओं में अर्ली-ऑनसेट कोलोरेक्टल कैंसर का खतरा दोगुना तक हो सकता है

* यहाँ तक कि पैक्ड फ्रूट जूस, जिन्हें अक्सर स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, उच्च शर्करा के कारण समान जोखिम उत्पन्न कर सकते हैं।

2025 की आशा की किरणः समाधान और सुधार अच्छी खबर यह है कि विज्ञान ने केवल चेतावनी नहीं दी, बल्कि समाधान भी प्रस्तुत किए हैं।

*** नवीनतम सिफारिशें:**

* कोल्ड ड्रिंक्स पर कर (Sugar Tax) और सीमाएँ

* स्कूलों और अस्पतालों में प्रतिबंध

* पानी, बिना चीनी वाले पेय और प्राकृतिक विकल्पों को बढ़ावा

* शोध दर्शाते हैंः

* कोल्ड ड्रिंक्स छोड़कर पानी अपनाने से फैटी लिवर का खतरा 50% तक कम हो सकता है

* कैंसर रोगियों में शर्करा कम करने से मेटास्टेसिस की गति धीमी हो सकती है

निष्कर्षः ताज़गी नहीं, एक भ्रम कोल्ड ड्रिंक्स ताज़गी का नहीं, बल्कि धीमी बीमारी का भ्रम हैं। इनका ठंडा स्पर्श शरीर के भीतर गर्म तबाही मचाता है— लिवर को बोझिल करता है, रक्त को विषैला बनाता है और आंतों में कैंसर के बीज बो देता है।

सच्ची ताज़गी वहाँ है जहाँ —

* सादा पानी

* नींबू मिला स्पार्कलिंग वाटर

* हर्बल चाय

* प्राकृतिक पेय

को अपनाया जाए।

2025 की वैज्ञानिक चेतावनियाँ हमारा पथ प्रदर्शक बनें। फिज़ को त्यागिए, स्वास्थ्य को अपनाइए— क्योंकि जीवन की वास्तविक चमक बोतल में नहीं, संतुलन में है।

उम्र का पड़ाव 50 और क्या क्या

पिंकी कुंडू

* 50 साल के बाद धीरे-धीरे शरीर के जोडों मे से लुब्रीकेन्ट्स एवं केल्शियम बनना कम हो जाता है। जिसके कारण जोडों का दर्द ,गैप, केल्शियम की कमी, वगैरा प्रोब्लेम्स सामने आते है,

* जिसके चलते आधुनिक चिकित्सा आपको जोइन्ट्स रिप्लेस करने की सलाह देते हैं तो कई आर्थिक रुप से सधन लोग यह मानते है कि हमारे पास तो बहुत पैसे हैं।

* तो घुटनां चेंज करवा लेते है।

* किंतु क्या आपको पता है जो चीज कुदरत ने हमे दी है, वो आधुनिक विज्ञान या तो कोई भी साइंस नही बनां सकती।

* आप कृत्रिम जॉइन्ट फिट करवा कर थोडे समय २-४ साल तक ठीक हो सकते हैं लेकिन बाद मे आपको बहुत ही तकलीफ होगी।

* जॉइन्ट रिप्लेसमेंट का सटीक इलाज आज में आपको बता रहा हूँ वो आप नोट कर लीजिये और हां ऐसे हजारों जरुरतमंद लोगो तक पहुचाये जो रिप्लेसमेंट के लाखो रुपये खर्च करने मे असमर्थ हैं।

* बबूल नामके वृक्ष को आपने जरुर देखा होगा, यह भारत मे हर जगह बिना लगाये ही अपने आप खडा.हो जाता है, अगर यह बबूल नाम का वृक्ष अमेरिका या तो विदेशों मे इतनी मात्रा मे होता तो आज वही लोग इनकी दवाई बनाकर हमसे हजारों रुपये लूटते। लेकिन भारत के लोगों को जो चीज मुफ्त मे मिलती है उनकी कोइ कदर नही है।

* प्रयोग इस प्रकार करना है बबूल के पेड़ पर जो फली (फल) आती है उसको तोड़कर लाये और उसको सुखाकर पाउडर बना लें और सुबह १ चम्मच की मात्रा में गुनगुने पानी से खाने के बाद, केवल 2-3 महिने सेवन करने से आपके घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा।

*** आपको घुटने बदलने की जरुरत नही पड़ेगी।**

बदलते मौसम में बचें सर्दी जुकाम खाँसी से

मौसम बदल रहा है थोड़ा अपना और अपनों का ख्याल रखें

◆ सर्दी-जुकामः

सर्दी-जुकाम में आगे के प्रकरण के अनुसार उपवास करें।

◆ पहला प्रयोगः

गर्म दूध में 1 से 2 ग्राम पिसी सोंठ मिलाकर अथवा तुलसी के पत्ते का 2 से 10 मि.ली. रस एवं अदरक के 2 से 20 मि.ली. रस में एक चम्मच शहद मिलाकर दिन में दो तीन बार लेने से सर्दी में लाभ होता है।

◆ दूसरा प्रयोगः

5 से 10 ग्राम पुराना गुड़ एवं 2 से 10 ग्राम अदरक मिलाकर खाने से अथवा आधी कटोरी दूध में 2 से 10 ग्राम काली मिर्च और 1 से 5 ग्राम हल्दी उबालकर देने से सर्दी में लाभ होता है।

◆ तीसरा प्रयोगः

शरीर ठण्डा होने पर बिना

छिलके के भूने चने का पाउडर एवं सोंठ का पाउडर सूखा-सूखा घिसने पर शरीर में गर्मी आती है।

◆ चौथा प्रयोगः

नींबू का रस गर्म पानी में मिलाकर रात को सोते समय पीने से सर्दी मिटती है।

◆ पाँचवाँ प्रयोगः

रात के समय नित्य सरसों का तेल या गाय के घी को गुनगुना गर्म करके नाक द्वारा एक- दो बूँद लेने से नजला-जुकाम नहीं होता है व मस्तिष्क स्वस्थ रहता है।

◆ छठा प्रयोगः

बड़ के कोमल पत्तों को छाया में सुखाकर कूट कर पीस लें। आधा लीटर पानी में एक चम्मच चूर्ण डालकर काढ़ा बनायें। जब चौथाई पानी शेष बचे तब उतारकर छान लें और पिसी मिश्री मिलाकर कुनकुना करके पियें। यह प्रयोग दिमागी शक्ति बढ़ाता है व नजले जुकाम में भी लाभदायक है।

◆ सातवाँ प्रयोगः

सर्दी के कारण होता सिरदर्द, छाती का दर्द एवं बेचैनी में सोंठ के पाउडर को पानी में डालकर गर्म करके पीड़ावाले स्थान पर थोड़ा लेप करें। सोंठ की डली डालकर उबाला गया पानी पियें। सोंठ का चूर्ण शहद में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा रोज चाटें। भोजन में मूँग, बाजरी, मेथी एवं लहसुन का प्रयोग करें। इससे भी सर्दी मिटती है।

◆ आठवाँ प्रयोगः

पुदीने का ताजा रस कफ, सर्दी में लाभप्रद है।

शरीर का उबटन एवं अभ्यंग

पिंकी कुंडू

आयुर्वेद में स्नान केवल बाहरी स्वच्छता की प्रक्रिया नहीं है, यह शरीर को शुद्धकरने, धातुओंको पोषित करने और वात को स्थिर करने का एक संस्कार है।

उबटन को आयुर्वेद में उद्वर्तन या उत्सादन कहा गया है इसका उद्देश्य त्वचा पर जमी मैल हटाना मात्र नहीं, बल्कि रोमछिद्रों को जाग्रत करना, रक्तसंचार को सक्रिय करना और त्वचा को संतुलन में लाना है।

* अभ्यंग, अर्थात औषधीय तैल से शरीर का स्नेहन,

* वात के रूक्ष और चंचल स्वभाव को शांत करता है।

* यह स्नायुओं, जोड़ों और त्वचा को स्थिरता देता है तथा शरीर को विश्राम और बल प्रदान करता है।

* जब अभ्यंग के बाद उबटन किया जाता है, तो तेल के साथ जमी अशुद्धियाँ बाहर निकलती हैं, त्वचा स्वाभाविक रूप से श्वास लेने लगती है और उसकी कांति भीतर से विकसित होती है।

यह कोई त्वरित सौंदर्य उपाय नहीं है।

यह एक नियमित, संयमित और समझदार दिनचर्या है, जो शरीर को धीरे-धीरे संतुलन की ओर ले जाती है।

आयुर्वेद हमें सिखाता है

सौंदर्य बाहर से नहीं आता, वह तब प्रकट होता है, जब शरीर भीतर से स्थिर, स्निग्ध और संतुलित होता है।

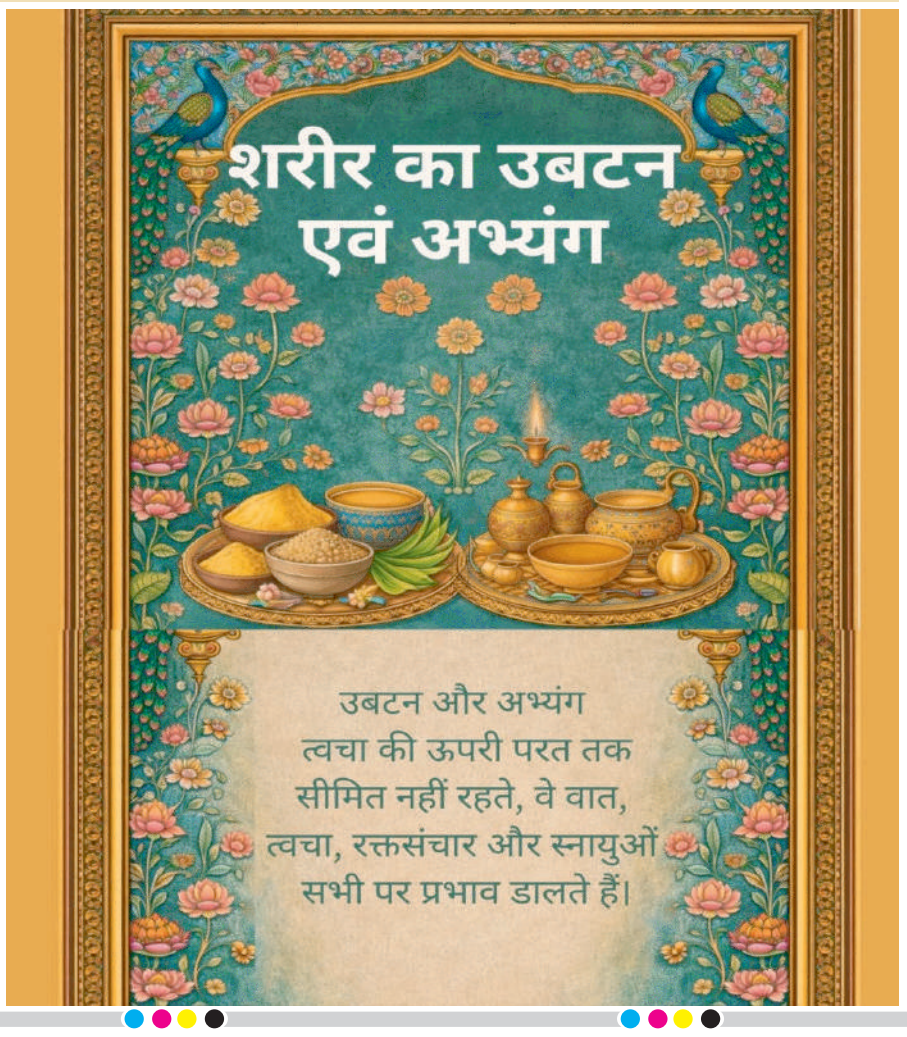

भारत में चिकित्सकीय लापरवाही

एक गहराई से जमी हुई प्रणाली गत चुनौती भारत में चिकित्सकीय लापरवाही— अर्थात जब चिकित्सक, अस्पताल या स्वास्थ्य-संस्था स्वीकृत चिकित्सा मानकों के अनुरूप उपचार प्रदान करने में विफल रहती है और उससे रोगी को क्षति या मृत्यु होती है—एक गंभीर किंतु अत्यंत कम रिपोर्ट की जाने वाली समस्या है।

यह केवल व्यक्तिगत भूलों का प्रश्न नहीं, बल्कि संरचनात्मक, प्रशासनिक, कानूनी और सांस्कृतिक विफलताओं का परिणाम है, जिसके कारण अधिकांश पीड़ित परिवारों को न तो न्याय मिल पाता है और न ही उचित प्रतिकार।

1. कमजोर स्वास्थ्य प्रशासन और निगरानी व्यवस्था भारत की विशाल स्वास्थ्य प्रणाली के बावजूद नियामक और निगरानी तंत्र अत्यंत कमजोर एवं बिखरा हुआ है।

* आज तक राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे मानकीकृत दिशा निर्देश लागू नहीं हो सके हैं, जो यह स्पष्ट रूप से निर्धारित करें कि चिकित्सकीय लापरवाही के मामलों की अस्पतालों के भीतर या अनुशासनात्मक कार्यवाही में जाँच कैसे की जाए।

* यहाँ तक कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के वर्षों बाद भी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने स्वीकार किया है कि ऐसे दिशानिर्देश अभी "विचाराधीन" हैं।

अधिकांश सरकारी अस्पतालों में आंतरिक जवाबदेही तंत्र

चिकित्सकीय त्रुटि रिपोर्टिंग सिस्टम

तथा अनिवार्य घटना-जाँच (Incident Investigation)

जैसी व्यवस्थाएँ या तो अनुपस्थित हैं या केवल कागज़ों तक सीमित हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि गलत रक्त चढ़ाने, आपातकालीन उपचार में देरी, या गलत निर्णय जैसी गंभीर त्रुटियाँ दर्ज तो हो जाती हैं, किंतु उनका गहन विश्लेषण नहीं किया जाता — जिससे भविष्य में उन्हें रोका जा सके।

राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत प्रोटोकॉल के अभाव में प्रणालीगत त्रुटियाँ छिपी रह जाती हैं, और रोगी-सुरक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण सबक कभी सीखे ही नहीं जाते।

2. पुलिस और आपराधिक जाँचः विशेषज्ञता व स्पष्ट प्रक्रिया का अभाव भारत में चिकित्सकीय

लापरवाही की आपराधिक जाँच एक अत्यंत जटिल और अस्पष्ट क्षेत्र बना हुआ है।

* दंड प्रक्रिया में ऐसे स्पष्ट वैधानिक नियम नहीं हैं, जो यह तय करें कि डॉक्टरों या अस्पतालों की लापरवाही की जाँच किस प्रकार और किन मानकों पर की जाए।

* परिणामस्वरूप पुलिस को प्रायः राज्य चिकित्सा परिषदों या मेडिकल बोर्डों पर निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि उनके पास चिकित्सा - विशेषज्ञता नहीं होती।

चिकित्सा विज्ञान की जटिलता, नैदानिक परिस्थितियाँ और उपचार निर्णयों की सूक्ष्मता को समझना —

अपराध जाँच में प्रशिक्षित पुलिस अधिकारियों के लिए अत्यंत कठिन होता है।

इस कारणः

* सही और गलत चिकित्सा निर्णय में अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है

* जाँच में अनावश्यक देरी होती है और

* निर्णय अक्सर व्यक्तिपरक या अपूर्ण विशेषज्ञ राय पर आधारित रह जाते हैं

* इससे जाँच की निष्पक्षता और गुणवत्ता दोनों प्रभावित होती हैं।

3. कानूनी बाधाएँ और न्यायिक दृष्टिकोण

कानूनी परिवर्तन

* भारतीय न्याय संहिता (BNS), 2023, जो 1 जुलाई 2024 से लागू हुई, ने IPC के कुछ प्रावधानों को प्रतिस्थापित किया है।

* धारा 106(1) के अंतर्गत लापरवाही से मृत्यु होने पर कारावास और जुर्माने का प्रावधान है—जिसमें चिकित्सक भी सम्मिलित हैं।

परंतुः

* सरकारी या पंजीकृत चिकित्सकों के लिए दंड की सीमा तय कर दी गई है और व्यवहार में इसका कार्यान्वयन असंगत और अस्पष्ट बना हुआ है

न्यायिक रुख कई उच्च न्यायालयों ने ऐसे निर्णय दिए हैं, जिनसे डॉक्टरों के विरुद्ध आपराधिक मुकदमा दर्ज करना और कठिन हो गया है।

* उदाहरणस्वरूप, राजस्थान उच्च न्यायालय ने यह कहते हुए एक FIR रद्द कर दी किः चिकित्सकों से जानबूझकर लापरवाही की अपेक्षा करना अव्यावहारिक है और जटिल चिकित्सकीय निर्णयों का बाद में मूल्यांकन करना न्यायसंगत नहीं।

* इस प्रकार, जब तक स्पष्ट और गंभीर दुराचार सिद्ध न हो, अदालतें अक्सर चिकित्सकीय निर्णयों को संरक्षण देती हैं।

4. रोगियों और आम जनता के लिए रिपोर्टिंग की बाधाएँ जमीनी स्तर पर कई कारणों से पीड़ित परिवार शिकायत तक नहीं कर पातेः

* अधिकारों की जानकारी का अभाव

* पुलिस, मेडिकल काउंसिल और उपभोक्ता अदालतों की जटिल प्रक्रिया

* लंबा समय, आर्थिक बोझ और मानसिक तनाव

* अस्पतालों द्वारा मेडिकल रिकॉर्ड देने में टालमटोल या अस्वीकृति

* इन सब कारणों से अधिकांश मामले रिपोर्ट होने से पहले ही दब जाते हैं।

5. उपभोक्ता न्याय बनाम आपराधिक जवाबदेही जहाँ आपराधिक जाँच कमजोर है, वहीं उपभोक्ता न्याय प्रणाली एक सीमित विकल्प प्रदान करती है।

* राष्ट्रीय और राज्य उपभोक्ता आयोगों ने कई मामलों में अस्पतालों को मुआवज़ा देने का आदेश दिया है।

* किंतु यह व्यवस्था केवल आर्थिक क्षतिपूर्ति तक सीमित रहती है और

* प्रणालीगत सुधार सुनिश्चित नहीं कर पाती

* इसके अतिरिक्त, बहुत से लोग इन मंचों के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ हैं।

6. हालिया प्रगति और सुधार की संभावनाएँ हालाँकि स्थिति गंभीर है, फिर भी कुछ सकारात्मक संकेत दिखाई देते हैंः

* स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा दिशानिर्देश तैयार करने की घोषणा

* उपभोक्ता आयोगों द्वारा लगातार मुआवज़ा आदेश

* कुछ राज्यों में डिजिटल मेडिको-लीगल रिपोर्टिंग सिस्टम

* उच्च न्यायालयों द्वारा स्वतः संज्ञान (Suo Motu) लेकर जाँच के आदेश

* ये संकेत दर्शाते हैं कि समस्या को अब संस्थागत स्तर पर पहचाना जाने लगा है।

7. सारांशः

* जाँच और रिपोर्टिंग दुर्लभ क्यों है

* कारण

* प्रभाव

* कमजोर स्वास्थ्य प्रशासन

* समान जाँच मानकों का अभाव

* स्पष्ट आपराधिक प्रक्रिया नहीं

* पुलिस की विशेषज्ञता पर निर्भरता

* कानूनी जटिलताएँ

* अभियोजन में हिचक

* सामाजिक व प्रशासनिक बाधाएँ

* शिकायत दर्ज न होना

* पारदर्शिता की कमी

* साक्ष्य अधूरे रहना

निष्कर्ष

* भारत में चिकित्सकीय लापरवाही केवल चिकित्सा का नहीं, बल्कि लोक-स्वास्थ्य, न्याय और मानवाधिकारों का प्रश्न है।

* स्वास्थ्य प्रशासन, पुलिस व्यवस्था और कानूनी ढाँचे की कमजोरियों के कारण अधिकांश मामले न तो ठीक से दर्ज होते हैं, न जाँचे जाते हैं और न ही न्याय तक पहुँचते हैं।

* यदि इस स्थिति को बदलना है, तो आवश्यक हैः

* राष्ट्रीय स्तर पर स्पष्ट और बाध्यकारी जाँच प्रोटोकॉल

* पुलिस और स्वास्थ्य विभाग में विशेषज्ञ क्षमता निर्माण

* रोगियों के लिए मजबूत कानूनी संरक्षण

* पारदर्शी रिकॉर्ड प्रणाली और सूचना तक आसान पहुँच

तभी चिकित्सकीय लापरवाही को व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि प्रणालीगत विफलता मानकर उसका वास्तविक समाधान संभव होगा — और तभी स्वास्थ्य-व्यवस्था में विश्वास, सुरक्षा और जवाबदेही स्थापित हो सकेगी।

पिंकी कुंडू

शिव-शक्ति: सृष्टि के सनातन संतुलन का दिव्य दर्शन

यह चित्र केवल एक चित्रण नहीं, बल्कि सृष्टि के सनातन संतुलन का सजीव दर्शन है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में वैराग्य और शक्ति, अनुशासन और करुणा का सामंजस्य कैसे बनाया जाए।

इस दर्शन का गहरा अर्थ:

महादेव (परम चेतना): जहाँ शिव हैं, वहाँ केवल वैराग्य नहीं, अपितु चेतना का अनंत विस्तार है। उनकी जटाओं में गंगा शुद्धि का और त्रिशूल सत्त्व, रजस और तमस पर नियंत्रण का प्रतीक है।

माँ पार्वती (शक्ति का स्वरूप): माँ पार्वती वह योगमाया हैं जिनके बिना शिव भी निष्क्रिय हैं। जब शक्ति करुणा से जुड़ती है, तभी वह लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

श्री गणेश (सिद्धि और पूर्णता): माँ की गोद में विराजमान गजानन संदेश देते हैं कि जहाँ शिव और शक्ति का संतुलन है, वहाँ विघ्न भी साधना बन जाते हैं और बाधाएँ मार्गदर्शक।

बाघ (अनुशासित शक्ति): यह नियंत्रित उग्रता का प्रतीक है। यह सिखाता है कि शक्ति का दमन नहीं, बल्कि उसका अनुशासन ही वास्तविक साधना है।

संदेश: सनातन परंपरा हमें उस मध्यम मार्ग पर चलना सिखाती है जहाँ एक गृहस्थ भी योगी है और एक योगी भी लोककल्याण में रत है। आइए, अपने अंतः करण को शिवमय करें।

छोटी-छोटी आदतें ही मिलकर किसी इंसान को राम बना देती हैं

पिंकी कुंडू

हम अक्सर पूछते हैं —"मेरे जीवन में बड़ा बदलाव कब आएगा?" और

उत्तर हम कहीं बाहर ढूँढते हैं — किसी चमत्कार में, किसी गुरु में, किसी घटना में।

लेकिन रामायण का उत्तर बहुत शांत है—"बड़ा परिवर्तन हमेशा बहुत छोटे कदम से शुरू होता है।

"श्रीराम कोई एक दिन में मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं बने। वे हर दिन—

* ₹पिता के वचन का सम्मान करते थे
* ₹गुरु की आज्ञा का पालन करते थे
* ₹छोटे भाई को स्नेह देते थे
* ₹प्रजा से प्रेम रखते थे

ये सब छोटी-छोटी आदतें थीं लेकिन इन्हीं आदतों ने मिलकर उन्हें राम बना दिया।

आज हम चाहते हैं—

* ₹एक भाषण में महान बन जाएँ
* ₹एक पोस्ट में मशहूर हो जाएँ
* ₹एक सफलता में जीवन बदल दें

पर रामायण कहती है कि "तुम जो रोज बनते हो, वही अंत में तुम बन जाते हो।"

हनुमान जी जन्म से इतने बलशाली थे, फिर भी उन्होंने अपने जीवन में—

* सेवा की आदत बनाई,
* विनम्रता की आदत बनाई,
* नाम-स्मरण की आदत बनाई।
* इसीलिए जब समुद्र सामने आया, तो शक्ति भी जाग गई।
* अगर हनुमान जी रोज नाम न जपते, तो लंका जाने का साहस भी न आता।

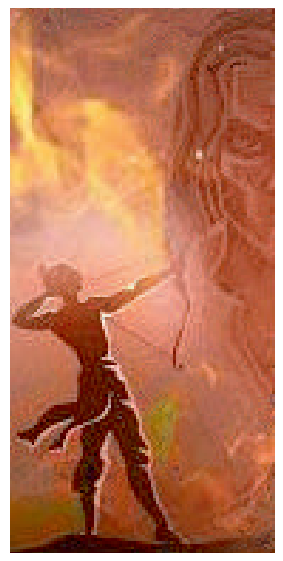

* आज का मनुष्य बाकी सब करता है, पर रोज़ साधना नहीं करता।
* फिर कहता है कि "मेरे अंदर ताक़त नहीं है।" ताक़त अचानक नहीं आती। ताक़त रोज़ बनाने से आती है।
* सीता जी केवल अग्नि परीक्षा की देवी नहीं थीं,
* वो हर दिन संयम में रहती थीं,
* मर्यादा में रहती थीं,
* विश्वास में रहती थीं।
* वन में भी उन्होंने अपना मन राजमहल में नहीं छोड़ा।
* उन्होंने परिस्थिति को अपना स्वभाव नहीं बिगाड़ने दिया।
* आज हम कहते हैं कि "परिस्थितियाँ ख़राब थीं इसलिए मैं बिगड़ गया।"
* रामायण कहती है कि "परिस्थिति नहीं बदलती, अगर तुम्हारी आदतें मजबूत हों।"
* रावण कोई एक दिन में राक्षस नहीं बना।
* वह भी रोज़ अहंकार को पालता रहा,
* स्त्री को वस्तु समझता रहा,
* शक्ति का घमंड करता रहा।
* उसकी भी आदतें थीं। बस दिशा गलत थी।
* और याद रखिए कि "छोटी गलत आदतें भी एक दिन पूरे जीवन को जला देती हैं।"
* हम सोचते हैं—

1. मैं एक दिन बहुत अनुशासित बनूँगा
2. एक दिन ध्यान शुरू करूँगा
3. एक दिन मोबाइल कम करूँगा
4. एक दिन अच्छा इंसान बनूँगा

* लेकिन रामायण एक दिन की कथा नहीं है। वह हर दिन की साधना की कथा है।
* आज का सवाल यह नहीं है कि "तुम क्या बनना चाहते हो?"
* आज का सच्चा सवाल है कि "तुम आज कैसा व्यक्ति बनकर सो रहे हो?"
* तुम जो रोज़ करते हो, वही तुम्हारी नियति बनता है तुम्हारी पहचान तुम्हारे इरादों से नहीं, तुम्हारी आदतों से बनती है।

भगवान भी तुम्हारी एक दिन की तपस्या से नहीं, तुम्हारी रोज़ की निष्ठा से प्रसन्न होते हैं।

आज से कोई बड़ा संकल्प मत लो, बस ये छोटे संस्कार शुरू करोः

1. रोज़ 5 मिनट नाम स्मरण
2. रोज़ 10 मिनट आत्मचिंतन
3. रोज़ एक अच्छा कर्म
4. रोज़ एक वाणी में संयम

बस इतना ही काफ़ी है क्योंकि राम एक दिन में नहीं बने थे। और तुम भी एक दिन में नहीं बनोगे।

तारा और चंद्रदेव: व्यभिचार, प्रेम और प्राचीन न्याय

पिंकी कुंडू

* प्रश्न क्या शारीरिक और मानसिक असंतोष व्यभिचार का आधार बन सकता है?
* प्रश्न जब एक पत्नी अपने बूढ़े, परम्परावादी पति को छोड़कर एक युवा, भावुक प्रेमी के पास चली जाती है, तो दोष किसका?
* इस गहन प्रश्न का उत्तर श्रीमद् देवी भागवतम्की तारा और चंद्रदेव की कथा में छिपा है।
* पति (बृहस्पति) - देवताओं के गुरु, वृद्ध, ज्ञानी, परम्परावादी ऋषि।
* पत्नी (तारा) - युवा, सुंदर, जीवंत, प्रेम और सुख की अभिलाषी।
* प्रेमी (चंद्रदेव) - युवा, आकर्षक, प्रेम-कौशल में निपुण, विद्रोही।

एक प्रेमहीन विवाह और अनैतिक प्रेम की ज्वालाः तारा, जो यौवन और सौंदर्य से भरी थीं, अपने पति गुरु बृहस्पति के साथ एक प्रेमहीन और नीरस जीवन जी रही थीं। वह अपनी आत्मा के लिए अधिक भावुकता और संतुष्टि चाहती थीं।

एक बार चंद्रलोक गई और वहां जाकर चंद्रदेव के युवा रूप, आकर्षण और प्रेम-कौशल पर मोहित हो गईं और निर्णय लिया कि वह अब वृद्ध ऋषि के पास वापस नहीं जाएंगी जो उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकता था।

बृहस्पति ने तारा को वापस भेजने का संदेश भेजा, तो स्वयं तारा ने इनकार कर दिया।

क्रोधित बृहस्पति स्वयं चंद्र के पास गए और शास्त्रों का हवाला दिया: ₹तारा मेरी पत्नी है — तुम्हारी गुरुपत्नी, माँ के समान। उसके साथ संबंध महापाप है !₹

गुरु-शिष्य का वाकयुद्धः परंपरा बनाम संतुष्टिः चंद्रदेव ने बृहस्पति की दलीलों का निर्भीकता से सामना कियाः चंद्रदेव ने हँसते हुए पूछा कि ऋषिगण केवल अपनी सुविधा के अनुसार ही शास्त्रों का उद्धरण क्यों दे रहे हैं?

चन्द्र तर्कों से भरे शब्दों में कहा कि उन्होंने तारा को मजबूर नहीं किया; तारा स्वेच्छा से उनके साथ रहना चाहती थीं। उन्होंने यहाँ तक कहा कि यह घटना आपके द्वारा अपनी पत्नी को संतुष्ट रखने की क्षमता पर भी सवाल उठाती है। बाद में, चंद्रदेव ने सीधे चुनौती दीः "जब आप उसे संतुष्ट नहीं कर सकते, तो आपको पत्नी के रूप में ऐसी युवा स्त्री की आवश्यकता ही क्यों है?"

भावनात्मक मोड़ः बृहस्पति को यह कड़वा सच स्वीकारना पड़ा कि उनकी पत्नी ने उन्हें स्वेच्छा से छोड़ा था। उनका गुस्सा जल्द ही दर्द और याद में बदल गया, और एक बार फिर तारा को वापस मांगने चंद्रलोक पहुँचे।

देवों का हस्तक्षेप और विवाद का चरमः निराश बृहस्पति ने देवताओं के राजा इंद्र से मदद मांगी।

इंद्र ने चंद्रदेव को तारा लौटाने का आदेश दिया।

चंद्रदेव ने इंद्र को उनके स्वयं के अनैतिक कृत्य (गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ संबंध) की याद दिलाई, यह तर्क देते हुए कि इस मामले में तारा स्वेच्छा से आई है।

यह वाकयुद्ध जल्द ही इंद्र और चंद्र के बीच एक भयंकर युद्ध (जिसे ताराकामय युद्ध के नाम से भी जाना जाता है) में बदल गया, जिसने देवताओं और असुरों दोनों को पक्षों में विभाजित कर दिया।

ब्रह्मा का 'न्याय': निर्णय और पितृत्व का रहस्यः ब्रह्मा जी को शांति स्थापित करने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा। उनका निर्णय निम्नलिखित थाःब्रह्मा ने फैसला सुनाया कि

* तारा को चंद्र को छोड़कर अपने पति बृहस्पति के पास वापस जाना होगा। (यहाँ तारा की इच्छा को अनदेखा कर दिया गया) ।वापसी के बाद यह ज्ञात हुआ कि तारा चंद्रदेव के पुत्र की माँ बनने वाली थीं।
* बृहस्पति और चंद्र दोनों ने बच्चे पर अपना दावा किया। अंततः, तारा ने घोषणा की कि बच्चा चंद्र का है।

इस तथाकथित "न्याय" में, जहाँ तारा को उनके प्रेम से अलग कर दिया गया, वहाँ ना तो तारा की निंदा की गई, और ना ही चंद्र को व्यभिचार का दोषी ठहराया गया।

सबसे महत्वपूर्ण बात, बच्चे के पितृत्व का निर्धारण करने के लिए तारा का कथन अंतिम सत्य माना गया।

कथा का गहन प्रश्नः प्राचीन काल की यह कथा आधुनिक समाज को दर्पण दिखाती है। इस कथा में:

* तलाक का विकल्प मौजूद नहीं था, लेकिन स्वैच्छिक व्यभिचार का चुनाव हुआ।
* स्त्री की संतुष्टि को वैध ठहराया गया, भले ही यह परंपरा और गुरुपत्नी के नियम के विरुद्ध था।
* नैतिकता से अधिक, बल और अंतिम निर्णय को महत्व दिया गया।

यह कथा पूछती है:

* क्या असंतुष्ट साथी के प्रेम की तलाश केवल व्यभिचार है, या यह मानवीय इच्छाओं की पूर्ति है?
* क्या पति/पत्नी द्वारा असंतोष पैदा करना भी धोखे का एक रूप नहीं है?

पात्रा सदन प्रयोग भगवती के साक्षात्कार का पूजन

पिंकी कुंडू

देवी सर्वमंत्र रूप तंत्र रूप यंत्र रूप है

आवाहन पुकार स्तुति में भाव पूर्ण हो तो जागृति और साक्षात्कार होता है

पूजा विधि पद्धति मन से नहीं होनी चाहिए

क्योंकि कुछ प्रोटोकॉल अगर किसी सेलिब्रिटी या नेता के होते है तो भगवती तो ब्रह्मांड नायिका है

उपचार की उपेक्षा भक्ति में हो सकती है साधना में नहीं

क्योंकि साधना तो मुलाकात है यहां क्रिया में पूर्णतः डूबना ही एक मात्र उपचार है

भक्त का ध्यान भटक सकता है

जबकि साधक का भाव एकाग्र रहता है भाव के साथ

साधक प्रकट करता है

और भक्त पुकार लगा सकता है

भक्त असहाय है साधक वीर होता है

आध्यात्म मार्ग यह दो पहलू है

एक है उस पर छोड़ देना

दूसरा है खुद को विलीन कर देना

मिटादे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे कि दाना खाक में मिलके गुले गुलजार होता है

जय माई की

ब्रह्मांड की सबसे कठिन परीक्षा: जब भक्त ने भगवान की छाती पर प्रहार किया

पिंकी कुंडू

यह केवल एक कथा नहीं, बल्कि सहनशीलता, क्षमा और प्रेम की वह पराकाष्ठा है जिसने तिरुमला के भगवान वेंकटेश्वर की लीला की नींव रखी।

1. ऋषियों का महा-सम्मेलन और एक प्रश्नः सरस्वती नदी के पवित्र तट पर एक विशाल यज्ञ का आयोजन हो रहा था। महान तपस्वी, ज्ञानी और ऋषि-मुनि एकत्रित थे। यज्ञ की पूर्णाहूति के समय एक धर्मसंकट आ खड़ा हुआ — ₹इस महायज्ञ का प्रधान फल किसे अर्पित किया जाए?"

सृष्टि में तीन महाशक्तियां हैं—

* ब्रह्मा (सृजनकर्ता)
* शिव (संहारक)
* विष्णु (पालनहार)

प्रश्न था कि इन तीनों में 'त्रिगुणातीत' (तीनों गुणों से परे) और 'परम सात्विक' कौन है?

जो क्रोध और अहंकार से मुक्त हो, वही इस यज्ञ का फल पाने का अधिकारी होगा।

निर्णय लेने का भार महर्षि भृगु को सौंपा गया। वे स्वयं ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे, परम ज्ञानी थे, किन्तु क्रोधी स्वभाव के भी थे। भृगु जी ने स्वीकार किया—"मैं तीनों लोकों में जाकर उनकी परीक्षा लूँगा।"

महर्षि भृगु सबसे पहले अपने पिता ब्रह्मा जी के पास सत्यलोक पहुँचे।

वहाँ ब्रह्मा जी दरबार में बैठे थे। भृगु ने जानबूझकर न उन्हें प्रणाम किया, न उनकी स्तुति की और न ही कोई सम्मान दिया। वे चुपचाप जाकर एक आसन पर बैठ गए।

पुत्र की ऐसी धृष्टता देख ब्रह्मा जी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने सोचा, ₹मैं इसका पिता हूँ, जगत का रचयिता हूँ, और यह मेरा अपमान कर रहा है?"

यद्यपि उन्होंने वाणी से कुछ नहीं कहा, परन्तु उनके मन में 'रजोगुण' (अहंकार और क्रोध) का ज्वार उठ खड़ा हुआ। भृगु ऋषि ने अपने तपोबल से उनके मन के भाव पढ़ लिए।

भृगु ने सोचा— ₹यहाँ मान-सम्मान की अपेक्षा है। जहाँ रजोगुण है, वहाँ परम शांति नहीं हो सकती ₹ वे बिना कुछ बोले वहाँ से चल दिए।

इसके बाद भृगु ऋषि बर्फीले कैलाश पर्वत पहुँचे।

वहाँ भगवान शिव अपने गणों और माता पार्वती के साथ बैठे थे। जैसे ही शिव जी ने अपने भाई (भृगु भी ब्रह्मा के पुत्र होने के नाते शिव के भाई तुल्य थे) को आते देखा, वे प्रसन्नता से उन्हें गले लगाने के लिए आगे बढ़े।

किंतु भृगु ने पीछे हटते हुए अपमानजनक शब्द कहे— "ठहरिये महादेव! आप शमशान वासी हैं, भस्म रमाते हैं, आप वेद-मर्यादा से बाहर हैं। मुझे स्पर्श मत कीजिये।"

भगवान शिव का प्रेम क्षण भर में प्रलयंकारी क्रोध में बदल गया। उनका तीसरा नेत्र खुलने को हुआ, हाथ में त्रिशूल चमक उठा। वे भृगु को भस्म करने ही वाले थे कि माता पार्वती ने उनके चरण पकड़ लिए और उन्हें शांत किया।

भृगु ने जान लिया—"₹यहाँ 'तमोगुण' (शीघ्र क्रोध) का वास है। जो इतनी जल्दी क्रोधित हो जाए, वह सृष्टि का सर्वोच्च पालक नहीं हो सकता।"

अंत में, महर्षि भृगु वैकुंठ धाम पहुँचे। यहाँ का वातावरण अद्भुत था।

भगवान नारायण शेषनाग की शैया पर योगनिद्रा में लीन थे। माता लक्ष्मी अत्यंत प्रेम से उनके चरण दबा रही थीं। भृगु ऋषि को लगा कि भगवान उन्हें देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं (जबकि वे सो रहे थे)।

ऋषि का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया। उन्होंने सोचा— ₹मैं एक ब्राह्मण द्वार पर खड़ा हूँ और यह सोने का नाटक कर रहे हैं? मुझे इनका अहंकार तोड़ना होगा।"

तभी वह अकल्पनीय घटना घटी जिसने तीनों लोकों को कम्पित कर दिया।

महर्षि भृगु ने आव देखा न ताव, दौड़कर भगवान विष्णु की वज्र समान कठोर छाती पर एक जोरदार लात मारी।

लात लगते ही भगवान नारायण हड़बड़ाकर जाग उठे।

सामने भृगु ऋषि को क्रोध में खड़ा देख, भगवान को न क्रोध आया, न ही उन्होंने दंड दिया। इसके विपरीत, वे जल्दी से शैया से उतरे और भृगु ऋषि के चरणों में गिर पड़े।

नारायण ने भृगु के पैर अपने हाथों में ले लिए और बड़े प्यार से सहलाते हुए बोले:

> "हे ब्रह्मर्षि! क्षमा करें। मुझे आपके आगमन का पता नहीं चला। मेरी छाती तो वज्र की तरह कठोर है और आपके चरण कमल की पंखुड़ी की तरह कोमल हैं। कहीं मेरे कठोर वक्षस्थल से आपके कोमल चरणों में चोट तो नहीं आई?"

> भगवान नारायण धीरे-धीरे उनके पैर दबाने लगे।

यह दृश्य देखकर भृगु ऋषि सन्न रह गए। उनका सारा क्रोध, सारा अहंकार पानी की तरह बह गया। उनकी आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे। वे समझ गए कि जो अपमान करने वाले के प्रति भी इतनी दया रखे, वही वास्तव में 'सर्वोत्तम' है।

जहाँ भृगु ऋषि नतमस्तक थे, वहीं माता लक्ष्मी का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था।

उन्होंने भगवान विष्णु से कहा — "स्वामी! यह कैसी उदारता?

इसने आपके वक्षस्थल पर प्रहार किया है। और हृदय तो पत्नी का निवास स्थान होता है। इस ऋषि ने आपकी छाती पर नहीं, मेरे घर पर लात मारी है, मेरे सौभाग्य का अपमान किया है। और आप उसे दंड देने के बजाय उसके चरण दबा रहे हैं?"

विष्णु जी ने मुस्कुराकर कहा — ₹देवी, ऋषियों का क्रोध भी आशीर्वाद होता है। क्षमा ही मेरा धर्म है।"

किंतु देवी लक्ष्मी का स्वाभिमान आहत हो चुका था। उन्होंने कहा —"₹जहाँ मेरे स्वामी का अपमान हो और उसे सहन कर लिया जाए, मैं उस स्थान पर एक क्षण भी नहीं रह सकती।"

उसी क्षण, माता लक्ष्मी वैकुंठ त्यागकर पृथ्वी लोक पर चली गईं। (यही वह घटना थी जिसके कारण भगवान विष्णु को लक्ष्मी जी को ढूँढने के लिए 'श्रीनिवास' बनकर पृथ्वी पर आना पड़ा और तिरुपति बालाजी की कथा का आरंभ हुआ।)

भृगु ऋषि ने लौटकर ऋषियों की सभा में घोषणा की:

> "मैंने तीनों लोकों को देखा है। ब्रह्मा जी मान चाहते हैं, शिव जी अपमान नहीं सह सकते, किन्तु नारायण ही ऐसे हैं जिन्होंने अपमान का बदला करुणा और प्रेम से दिया। अतः वही सर्वश्रेष्ठ हैं, वही सत्त्वगुणी हैं।"

>बड़प्पन शक्ति दिखाने में नहीं, बल्कि सहन करने और क्षमा करने में है। जो झुकता है, वही पूरी दुनिया को झुकाने की ताकत रखता है।

।।ॐ नमो नारायण।।

श्रीनवग्रह रूपलक्ष्मी स्तोत्रम!!

पिंकी कुंडू

1. सूर्य-लक्ष्मी
* सूर्ये तेजोमयीं देवीं भ्राजमानां सुवासिनीम्।
* ज्योतिर्मयीं जगदीश्वरीं नमामि दिव्यरूपिणीम्॥1॥
* भावार्थः तेजस्विनी, स्वर्णवर्णा, आत्मबल, स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा देने वाली सूर्यलक्ष्मी को नमन।

२. चन्द्र-लक्ष्मी
* चन्द्रे शीतलगात्रां तां सौम्यरूपां मनोहराम्।
* कल्याणदां च कौमुदीं नमामि चन्द्रमण्डले॥2॥
* भावार्थः श्वेतवर्णा, शीतल, सौम्य और मानसिक शांति देने वाली चन्द्रलक्ष्मी को प्रणाम।
*. मङ्गल-लक्ष्मी
* मङ्गले रक्तवर्णां तां शक्तिरूपां धृतव्रताम्।
* क्रियाशक्तिं समाश्रित्य नमामि पुण्यसञ्चयाम्॥*॥
* भावार्थः वीररूप, साहस, पराक्रम और ऊर्जा देने वाली मंगलालक्ष्मी को वंदन।
4. बुध-लक्ष्मी
* बुधे बुद्धिप्रदां लक्ष्मीं वाक्सिद्धिं ज्ञानरूपिणीम्।
* विद्याशक्तिं प्रकाशान्तीं नमामि बुधमूर्धीन॥4॥
* भावार्थः हरितवर्णा, बुद्धि, व्यापार और वाणी-कला देने वाली बुधलक्ष्मी को नमन।

5. गुरु-लक्ष्मी
* गुरौ धर्ममयीं देवीं ब्रह्मतेजस्विनीं पराम्। श्रद्धारूपां शिवां लक्ष्मीं नमामि ज्ञानदायिनीम्॥5॥
* भावार्थः पीतवर्णा, धर्म, ज्ञान, संतान और संस्कार देने वाली गुरुलक्ष्मी को प्रणाम।
6. शुक्र-लक्ष्मी
* शुक्रे कल्याणरूपां तां सौंदर्यायै स्वधारिणीम्।
* कामकलां सुधामूर्तिं नमामि लोकमानसीम्॥6॥
* भावार्थः गौरवर्णा, सौंदर्य, कला, वैवाहिक सुख और विलास देने वाली शुक्रलक्ष्मी को वंदन।
7. शनि-लक्ष्मी
* शनौ स्थैर्यगुणोपेतां कालशक्तिं निरीक्षणाम्।
* धैर्यप्रदां महासिद्धिं नमामि कर्मदायिनीम्॥7॥
* भावार्थः नीलवर्णा, संयम, कर्मफल, न्याय और स्थायित्व देने वाली शनिलक्ष्मी को प्रणाम।
8. राहु-लक्ष्मी
* राहौ श्यामधूम्रवर्णां लक्ष्मीं रहस्यमयीं पराम्।
* संरक्षिणीं च संकटघ्नीं नमामि मायिकेश्वरीम्॥8॥
* भावार्थः कृष्ण/धूम्रवर्णा, रहस्य, विदेश, छाया, चमत्कार और अप्रत्याशित लाभ देने वाली राहुलक्ष्मी को नमन।
9. केतु - लक्ष्मी
* केतौ धूम्रवर्णां लक्ष्मीं मुक्तिदात्रीं परां पराम्।
* तपःस्वरूपिणीं देवीं नमामि ज्ञानविग्रहम्॥9॥
* भावार्थः तपस्विनी, मोक्ष, गूढ़ज्ञान, अंतर्ज्ञान और ऋसिद्धि देने वाली केतु लक्ष्मी को प्रणाम।
10. फलश्रुति एवं नवग्रहाधिष्ठां लक्ष्मीं
* संग्रार्थयेद् धृदा।
* दोषग्रहप्रशमनं भवत्याशु न संशयः॥10॥
* सर्वाभीष्टप्रदां देवीं भक्त्या स्तौति स बुद्धिमान्।
* गृहदोषं विनाशय्य शीघ्रं श्रियं प्रयच्छते॥11
* भावार्थः यह स्तोत्र नवग्रह लक्ष्मियों की कृपा और गृहदोष निवारण, सुख, समृद्धि एवं आयुर्वृद्धि प्रदान करता है।

भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना, जापान को पीछे छोड़ा

संगिनी घोष विशेष संवाददाता परिवहन विशेष

भारत ने नाममात्र (नॉमिनल) जीडीपी के आधार पर जापान को पीछे छोड़ते हुए आधिकारिक रूप से दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल कर लिया है। यह उपलब्धि भारत की आर्थिक यात्रा में एक बड़ा मील का पत्थर है और वैश्विक निवेशकों के बीच देश की मजबूत होती साख को दर्शाती है।

यह सफलता दशकों में हुए क्रमिक आर्थिक बदलावों का परिणाम है। आज़ादी के बाद लंबे समय तक भारत एक कड़े रूप से नियंत्रित अर्थव्यवस्था के तहत चला, लेकिन 1990 के दशक की शुरुआत में उदारीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई, जिससे बाजार खुले, निजी क्षेत्र को बढ़ावा मिला और भारत वैश्विक व्यापार से जुड़ा। पिछले एक दशक में जीएसटी, दिवाला एवं शोधन अक्षमता कानून, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और बड़े पैमाने पर इंफ्रास्ट्रक्चर निवेश जैसे संरचनात्मक सुधारों ने विकास की रफ्तार को तेज किया और आर्थिक दक्षता बढ़ाई।

हाल के वर्षों में मजबूत घरेलू खपत, युवा कार्यबल, "मेक इन इंडिया" के तहत बढ़ता विनिर्माण क्षेत्र और डिजिटल भुगतान व सेवाओं में भारत की अग्रणी भूमिका ने अर्थव्यवस्था को निरंतर गति दी है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में बदलाव के बीच अंतरराष्ट्रीय कंपनियां भारत को दीर्घकालिक उत्पादन और निवेश केंद्र के रूप में तेजी से देख रही हैं।

आगे चलकर, यदि सुधारों की निरंतरता बनी रहती है और पूंजी निवेश व रोजगार सृजन विकास के अनुरूप होते हैं, तो भारत अपनी स्थिति को और मजबूत कर सकता है। बढ़ती शहरीकरण प्रक्रिया, तकनीक का तेजी से अपनाया जाना और हरित ऊर्जा के विस्तार के साथ, अर्थशास्त्रियों का मानना है कि आने वाले दशक में भारत दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं को चुनौती दे सकता है—बशर्ते वैश्विक स्थिरता और घरेलू नीतिगत अनुशासन बना रहे।

हालांकि प्रति व्यक्ति आय अब भी एक चुनौती बनी हुई है, लेकिन जीडीपी के इस पड़ाव को पार करना वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के बढ़ते महत्व को दर्शाता है और इसकी दीर्घकालिक विकास कहानी में विश्वास को और मजबूत करता है।

प्रति क्षण प्रभु की नित्य लीलाओं में निमग्न रहते हैं श्रीपाद बाबा महाराज : बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन ।मोतीझील स्थित श्रीराधा उपासना कुंज में ब्रज अकादमी के तत्वावधान में ब्रज के प्रख्यात संत श्रीपाद बाबा महाराज का 29 वें त्रिदिवसीय समाराधन महोत्सव के दूसरे दिन प्रातः काल महंत बाबा संतदास महाराज के पावन सानिध्य में समाज गायन किया गया ।तत्पश्चात वृहद सन्त-विद्वत सम्मेलन आयोजित हुआ ।जिसमें अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रीपीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज एवं महामंडलेश्वर स्वामी सत्यानंद सरस्वती महाराज (डॉ. अधिकारी गुरूजी) ने कहा कि सन्त प्रवर श्रीपाद बाबा महाराज प्रत्येक क्षण व हर घड़ी प्रभु की नित्य लीलाओं में निमग्न रहते हैं ।उन्हें सदैव ब्रज भूमि, गौ एवं ब्रज भाषा के उत्थान व संरक्षण का चिंतन रहता था।

अध्यक्षता करते हुए महामंडलेश्वर स्वामी कृष्णानंद महाराज एवं परम हितधर्मी डॉ. चन्द्रप्रकाश शर्मा ने कहा कि संत श्रीपाद बाबा महाराज को श्रीधाम वृंदावन, ब्रज संस्कृति एवं ब्रजवासियों से बहुत ही लगाव था ।उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इन्हीं की सेवा व संरक्षण के लिए समर्पित किया ।ऐसे दिव्य संत को हम बारंबार प्रणाम करते हैं।

श्रीराधा उपासना कुंज के महंत बाबा संतदास महाराज एवं ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया ने कहा कि ने कहा कि हमारे सदगुरुदेव श्रीपाद बाबा महाराज अत्यंत सेवाभावी व निःस्पृह संत थे ।वे पूर्ण समर्पण के साथ निर्धन, निराश्रित व दीन- दुखियों की सेवा करते थे ।उन जैसी विभूतियों का तो अब युग ही समाप्त होता चला जा रहा है।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं प्रख्यात भजन गायक पण्डित बनवारी महाराज ने कहा कि संत प्रवर श्रीपाद बाबा महाराज अनेकानेक सद्गुणों की खान थे ।हम लोग यदि उनके किसी एक गुण को भी अपने जीवन में धारण कर लें,तो हमारा कल्याण हो सकता है।

इस अवसर पर सन्त महेशानंद सरस्वती महाराज, संत सेवानंद ब्रह्मचारी, पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ, श्रीशुकाचार्य पीठाधीश्वर डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, पण्डित देवकीनंदन शर्मा, ब्रज अकादमी के निदेशक डॉ. बी.बी. माहेश्वरी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, स्वामी लेखराज शर्मा, पिंकी माथुर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।संचालन डॉ. गोपाल

चतुर्वेदी ने किया ।धन्यवाद ज्ञापन एवं सभी संतों-विद्वानों का स्वागत-सम्मान साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया ने किया।

सायं को प्रख्यात रासाचार्य स्वामी भुवनेश्वर वशिष्ठ के निर्देशन में रासलीला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया गया।

300 से ऊपर मार्क्स वितरण

नवदीप सिंह

किशनपुर जिला सुपौल बिहार मिथिलांचल अपने टीम के साथ समूह जीविका दीदी के साथ प्रदूषण से बचाव के लिए 300 से ऊपर मार्क्स वितरण किया महिलाएं को ठंड से बचने के लिए जुराब भी वितरण किया आपकी समाज सेविका राजकुमारी देवी लोगों को प्रदूषण से सुरक्षित रहने के सुझाव बताएं बच्चों और बुजुर्गों को सबका ध्यान रखें खुश रहे सबको खुश रखे टेंशन डिप्रेशन को कोसों दूर भगाएं सेवा ही आधार है मेरी जिंदगी का कर्म ही पूजा है आपका प्यार समर्थन आशीर्वाद ऐसे ही मिलते रहे हमें तो मेरी सेवा निरंतर जारी रहेगी सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

उ.प्र. अपराध निरोधक समिति ने जिला कारागार आगरा में जरूरतमंद बंदियों को प्रदान की राहत सामग्री

सेवा, सुधार और सहयोग को समर्पित है समिति का संकल्प : डॉ उमेश शर्मा, चेयरमैन उ.प्र. अपराध निरोधक समिति

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। भीषण शीतलहर के बीच उत्तर प्रदेश अपराध निरोधक समिति ने मानवता और सामाजिक सरोकार का परिचय देते हुए जिला कारागार आगरा में निरुद्ध जरूरतमंद बंदियों के लिए सहयोगात्मक पहल की। समिति द्वारा बंदियों को कंबल, गरम इनर्स, कैप तथा महिलाओं के साथ रह रहे बच्चों को गरम कपड़े, सूट आदि वितरित किए गए।

इस अवसर पर उ.प्र. अपराध निरोधक समिति के चेयरमैन डॉ. उमेश शर्मा, कोषाध्यक्ष अमित जैन एवं जिला सहसचिव राजकुमार जैन उपस्थित रहे। समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि उनका उद्देश्य केवल सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि बंदियों के सुधार, पुनर्वास एवं मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयास करना भी है। समिति लंबे समय से कारागार प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर बंदियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए कार्य कर रही है। कार्यक्रम के दौरान जिला कारागार प्रशासन ने समिति के इस सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया और आशा जताई कि भविष्य में भी जनहित एवं बंदी कल्याण से जुड़े कार्यों में इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा।

समिति के चेयरमैन डॉ. उमेश शर्मा ने कहा कि "बंदियों के सुधार और पुनर्वास हेतु हर संभव सहयोग अपराध निरोधक समिति द्वारा विगत वर्षों से किया जा रहा है और यह सेवा कार्य आगे भी निरंतर जारी रहेगा।"

नववर्ष 2026-व्यक्तिगत आकांक्षाओं से राष्ट्रीय संकल्प तक-वैश्विक जिम्मेदारी की ओर बढ़ता भारत- करना है ऐसा धमाल- दुनियाँ कहे वाह रे भारत माता के लाल!

हम वर्ष 2026 में अपने संकल्पों को ईमानदारी से कर्म में बदल पाए, तो न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन बेहतर होगा, बल्कि भारत भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर नई ऊँचाइयों को छुएगा-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत सहित हर देश में नया वर्ष जब दस्तक देता है, तो वह केवल दीवार पर टंगे कैलेंडर का एक पन्ना नहीं बदलता, बल्कि वह मनुष्य के भीतर सोई हुई उम्मीदों को जगाता है, बीते अनुभवों से उपजी आशंकाओं को सामने लाता है और भविष्य के लिए नए संकल्पों की ज़मीन तैयार करता है। हर व्यक्ति यही कामना करता है कि आने वाला वर्ष उसके जीवन में सुख, सफलता और स्थिरता लेकर आए, किंतु समय की मांग यही है कि 2026 में हम केवल अपने व्यक्तिगत भविष्य तक सीमित न रहें, बल्कि राष्ट्र और मानवता के भविष्य के बारे में भी गहराई से सोचें। यह वर्ष केवल एक और वर्ष नहीं, बल्कि भारत के लिए विज़न 2047 की ओर तेज़ी से बढ़ने का एक निर्णायक पड़ाव है,जहाँ हमारी सोच,हमारी प्राथमिकताएँ और हमारे कर्म,आने वाले दशकों की दिशा तय करेंगे। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि वर्ष 2026 ऐसे समय में प्रवेश कर रहा है,जब विश्व अभूतपूर्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।भू-राजनीतिक अस्थिरता,जलवायु संकट, तकनीकी क्रांति,आर्थिक पुनर्संरचना और लोकतांत्रिक मूल्यों की परीक्षा,ये सभी वैश्विक वास्तविकताएँ भारत के सामने भी हैं। ऐसे में नया वर्ष केवल शुभकामनाओं और उत्सवों तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि उसे कर्म-प्रधान, संकल्प- आधारित और राष्ट्र-केंद्रित सोच के साथ अपनाना होगा। यह समय है जब व्यक्तिगत सपनों और राष्ट्रीय उद्देश्यों के बीच सेतु बनाया जाए।

साथियों बात अगर हम नव वर्ष 2026 के आगमन की करें तो हर किसी की यह स्वाभाविक कामना होती है कि नया साल उसके लिए बेहतर अवसर लेकर आए,अच्छी शिक्षा,बेहतररोजगार आर्थिक सुरक्षा,स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन। लेकिन 2026 हमें यह भी याद दिलाता है कि एक सशक्त राष्ट्र के बिना व्यक्तिगत प्रगति भी अधूरी है। जब भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मज़बूत होता है,जब उसकी अर्थव्यवस्था स्थिर और समावेशी होती है, जब उसकी लोकतांत्रिक संस्थाएँ विश्व के लिए उदाहरण बनती हैं, तब उसका लाभ प्रत्येक नागरिक तक पहुँचता है। इसलिए इस बार नया साल केवल मेरे लिए क्या बेहतर होगा का प्रश्न नहीं, बल्कि मैं अपने राष्ट्र के लिए क्या बेहतर कर सकता हूँ का भी अवसर है।भारत आज विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था, उभरती हुई आर्थिक शक्ति और युवा आबादी वाला देश है। 2026 में दुनियाँ की निगाहें भारत पर और अधिक टिकेंगी,चाहे वह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में उसकी भूमिका हो,जलवायु नेतृत्व हो, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर हो या फिर शांति और कूटनीति में उसकी भागीदारी ।ऐसे में हर नागरिक का आचरण,हर नीति का प्रभाव और हर निर्णय का संदेश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पढ़ा जाएगा। नया वर्ष हमें यह समझने का अवसर देता है कि राष्ट्र की छवि केवल सरकारों से नहीं, बल्कि नागरिकों के व्यवहार से भी बनती है।

साथियों बात अगर हम जब नया वर्ष आता है,तो वह मनुष्य को आत्ममंथन का अवसर देता है,इसको समझने की करें तो यह वह क्षण होता है, जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं,हमने बीते वर्ष अपने लिए क्या किया, अपने परिवार के लिए क्या किया, अपने समाज के लिए क्या किया और इस धरती के लिए क्या किया। क्या हमने प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाया, या केवल संसाधनों का उपभोग किया? क्या हमने मानवता के मूल्यों,करुणा,सहिष्णुता और न्याय,को मजबूत किया, या केवल अपने हितों तक सीमित रहे? 2026 की दहलीज पर

खड़े होकर ये प्रश्न और भी प्रासंगिक हो जाते हैं ।वर्ष 2026 कर्म- प्रधान होने वाला है। यह वह दौर है,जब केवल योजनाएँ बनाना पर्याप्त नहीं होगा,बल्कि उन्हें ज़मीन पर उतारने की परीक्षा होगी। भारत के लिए यह समय है कि वह शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पर्यावरण और तकनीक के क्षेत्रों में ठोस परिणाम दिखाए। अंतरराष्ट्रीय समुदाय आज केवल घोषणाओं पर नहीं, बल्कि क्रियान्वयन की गुणवत्ता पर ध्यान देता है। नया वर्ष हमें यह संदेश देता है कि यदि हम वैश्विक मंच पर बुलंदियों को छूना चाहते हैं, तो हमें अपनी आंतरिक संरचनाओं को भी उतना ही मज़बूत बनाना होगा।

साथियों बात अगर हम नई संभावनाओं के साथ नई चुनौतियाँ भी आती हैं इसको समझने की करें तो, 2026 में भारत को जिस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है,उनमें आर्थिक असमानता,जलवायुपरिवर्तन के प्रभाव,तकनीकी बेरोज़गारी, सामाजिक ध्रुवीकरण और वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव प्रमुख हैं ।इन चुनौतियों से निपटने के लिए केवल सरकारों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। नागरिकों को भी सजग, जागरूक और जिम्मेदार भूमिका निभानी होगी। नया वर्ष हमें यह अवसर देता है कि हम मुकाबला करने का दृढ़ संकल्प लें,चाहे वह व्यक्तिगत स्तर पर हो या राष्ट्रीय स्तर पर ।विज़न 2047 केवल एक सरकारी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि एक सामूहिक राष्ट्रीय स्वप्न है,एक ऐसा भारत, जो आर्थिक रूप से समृद्ध,सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण,पर्यावरणीय रूप से संतुलित और वैश्विक रूप से सम्मानित हो। 2026 इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। यदि हम इस वर्ष अपने लक्ष्यों, प्राथमिकताओं और संसाधनों को सही दिशा में नहीं मोड़ते, तो 2047 का सपना केवल कागज़ों तक सीमित रह सकता है ।इसलिए नया वर्ष हमें यह चेतावनी भी देता है और यह अवसर भी।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय स्तरपर देखें तो 2026 में विश्व व्यवस्था तेज़ी से बहुध्रुवीय हो रही है। पारंपरिक महाशक्तियों के साथ-साथ नए क्षेत्रीय और उभरते देश वैश्विक निर्णयों में भूमिका निभा रहे हैं। भारत के पास यह ऐतिहासिक अवसर है कि वह केवल एक अनुसरणकर्ता न रहे, बल्कि नीति-निर्माता के रूप में उभरे। इसके लिए आवश्यक है कि भारत की आंतरिक नीतियाँ, शिक्षा से लेकर नवाचार तक, वैश्विक मानकों के अनुरूप हों। नया वर्ष हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम किस तरह का भारत दुनियाँ के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं ।नया साल आत्मनिरीक्षण का भी समय होता है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमने विकास की दौड़ में कई बार पर्यावरण, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की है। 2026 हमें यह याद दिलाता है कि विकास केवल जीडीपी के आंकड़ों से नहीं मापा जा सकता,बल्कि मानव विकास, खुशहाली और प्रकृति के साथ संतुलन से मापा जाता है। यदि हम धरती के साथ अन्याय करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ़ नहीं करेंगी। इसलिए नए वर्ष में यह संकल्प आवश्यक है कि विकास और संरक्षण साथ-साथ चलें।

साथियों बात अगर हम मानवता के स्तर पर भी 2026 एक परीक्षा का वर्ष हो सकता है इसको समझने की करें तो, युद्ध, विस्थापन, शरणार्थी संकट और मानवीय आपदाएँ दुनिया को लगातार चुनौती दे रही हैं। भारत की सभ्यतागत परंपरा वसुधैव कुटुम्बकम की रही है। नया वर्ष हमें यह अवसर देता है कि हम इस विचार को केवल भाषणों तक सीमित न रखें, बल्कि वैश्विक सहयोग, शांति प्रयासों और मानवीय सहायता में ठोस भूमिका निभाएँ। यही वह रास्ता है, जिससे भारत न केवल शक्तिशाली, बल्कि विश्वसनीय भी बनेगा। व्यक्तिगत स्तर पर 2026 हमें यह सिखाता है कि आत्मकेंद्रित सफलता अब पर्याप्त नहीं है। एक जागरूक नागरिक वही है,जो अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझे। मतदान से लेकर कर भुगतान तक, सार्वजनिक संपत्ति के संरक्षण से लेकर सामाजिक सद्भाव तक, ये सभी छोटे-छोटे कर्म मिलकर राष्ट्र के बड़े भविष्य का निर्माण करते हैं। नया वर्ष हमें यह अवसर देता है कि हम अपने आचरण को राष्ट्र निर्माण से जोड़ें ।जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हमें यह भी सोचना होगा कि हमने समाज के सबसे कमजोर वर्गों के लिए क्या किया। क्या हमारी प्रगति समावेशी रही, या कुछ वर्ग पीछे छूटते गए? 2026 में भारत के सामने यह नैतिक चुनौती है कि विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की साख तभी मज़बूत होगी, जब वह अपने भीतर सामाजिक न्याय और समान अवसर सुनिश्चित करेगा ।नया वर्ष हमें नए लक्ष्य तय करने का मौका देता है,ऐसे लक्ष्य, जो केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित न हों, बल्कि नैतिक और मानवीय मूल्यों से भी जुड़े हों। 2026 में यह आवश्यक है कि हम अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाएं, संकीर्ण हितों से ऊपर उठें और दीर्घकालिक सोच अपनाएँ। यही वह दृष्टि है, जो भारत को 2047 तक एक विकसित और विश्व-नेतृत्वकारी राष्ट्र बना सकती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे क़ि नया वर्ष 2026एक प्रश्न भी है और एक निमंत्रण भी। प्रश्न यह कि क्या हम केवल बेहतर भविष्य की कामना करेंगे,या उसके लिए आवश्यक कर्म भी करेंगे? निमंत्रण यह कि हम व्यक्तिगत आकांक्षाओं से आगे बढ़कर राष्ट्रीय संकल्प और वैश्विक जिम्मेदारी को अपनाएँ। यदि हम इस वर्ष अपने संकल्पों को ईमानदारी से कर्म में बदल पाए,तो न केवल हमाराव्यक्तिगत जीवन बेहतर होगा, बल्कि भारत भीअंतरराष्ट्रीय मंच पर नई ऊँचाइयों को छुएगा ।नववर्ष 2026 हमें यही सिखाता है कि समय बदलने से पहले हमें स्वयं को बदलना होगा ।जब नागरिक जागरूक होंगे,समाज संवेदनशील होगा और राष्ट्र संकल्पबद्ध होगा, तभी विज़न 2047 का सपना साकार हो पाएगा। यही नए वर्ष का सार है, यही उसका सत्य और यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती भी।

पुनरावलोकन 2025 : पांच की कसौटी पर '25'

डॉ घनश्याम बादल

2025 भारत के लिए केवल कैलेंडर का एक और पन्ना नहीं बल्कि एक ऐसा साल साबित रहा, जब सत्ता और विपक्ष आमने-सामने दिखे, खेलों में दुनिया ने भारत का जलवा देखा, सिनेमा ने मनोरंजन से आगे बढ़कर विमर्श रचा, सांस्कृतिक क्षेत्र ने परंपरा और आधुनिकता के बीच नया संतुलन खोजा और अर्थव्यवस्था ने वैश्विक अस्थिरता के बीच अपनी जड़ें और मजबूत कीं तथा गति से दुनिया को चौंकाया।

2025 को अगर एक वाक्य में समझना हो, तो कहा जा सकता है कि भारत ने इस साल खुद को परखा भी, संवारा भी और पेश भी किया ।

राजनीति :
स्थिर सत्ता, बेचैन विपक्ष कसौटी पर लोकतंत्र

अपने तीसरे कार्यकाल में एनडीए की सरकार ने 2025 में साफ कर दिया कि सत्ता में निरंतरता केवल उपलब्धि नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी है। नीतियों की रफ्तार तेज रही, लेकिन उनके सामाजिक असर पर सवाल भी उतनी ही मुखरता से उठे। विपक्ष की नजर में यह सरकार मनमानी करने वाली है धर्मी सरकार रही तो पक्ष ने इसे दृढ़ इरादों की सरकार बताया।

बिहार समेत कई राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणामों ने राजनीतिक जगत को चौंका कर रख दिया एनडीए को आशा से कहीं अधिक सिम मिला यहां तक कि नीतीश के खिलाफ एंटी इनकंबेंसी फैक्टर भी दिखाई नहीं दिया हालांकि विपक्ष ने एक बार फिर वोट चोरी के बल पर सत्ता पर कब्जा करने का आरोप लगाने में कोताही नहीं की।

महिला आरक्षण पर 2025 में चर्चा सिर्फ संसद तक सीमित नहीं रही। सवाल यह उठा कि क्या प्रतिनिधित्व सिर्फ संख्या से तय होगा या सामाजिक ढांचे में भी बदलाव आएगा? केंद्र बनाम राज्य व संघीय ढांचे की खींचतान पहले की तरह जारी रही तो जांच एजेंसियों, वित्तीय अधिकारों और प्रशासनिक फैसलों को लेकर टकराव बढ़ा। यह बहस सत्ता की सीमाओं और लोकतंत्र की आत्मा पर आकर ठहर गई।

यदि सत्ता पक्ष मजबूत बना रहा तो विपक्ष ने भी 2025 में शोर से ज्यादा रणनीति पर जोर दिया। पर जनता की उम्मीदों पर खरा उतरना 2025 में नहीं हो पाया।

अर्थ जगत :
गतिरोधों के बीच गति का चमत्कार:

2025 आर्थिक दृष्टि से भारत के लिए चुनौतियों के साथ-साथ गतिरोध एवं गति तथा उपलब्धियां से भरा रहा।

तेज़ विकास गति के बीच सामाजिक स्तर पर असमानता की चिंता बरकरार रही। भारत की उच्च विकास दर चर्चा में रही, पर सवाल यह भी रहाकिसके लिए विकास? स्टार्टअप और टेक्नोलॉजी का उभार आश्वस्त करता दिखाई दिया तो एआई और फिनटेक ने भी नए अवसर खोले। हालांकि अर्थव्यवस्था पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का दबाव बना रहा

नौकरियों पर भी बहस चुनावी मुद्दा बनी रही, वैश्विक मंदी में भारतीय अर्थव्यवस्था का संतुलन अपेक्षाकृत स्थिर रहा, यह बड़ी उपलब्धि थी।

ग्रीन एनर्जी अब नारा नहीं, नीति बनती दिखी।

कुल मिलाकर 2025 में वित्त वाणिज्य एवं अर्थ क्षेत्र में निराश नहीं किया हालांकि बहुत कुछ पाना शेष भी रहा।

खेल जगत :
लड़ता और बढ़ता भारत

खेल जगत की दृष्टि से भारत के लिए यह वर्ष उपलब्धियां से भरा रहा हालांकि विवाद भी पीछे-पीछे चलते रहे बहुत कुछ पाया तो कुछ खोयाभी । महिला क्रिकेट वर्ल्ड कप में सिर्फ जी उपलब्धि से ज्यादा सामाजिक संकेत बनकर सामने आई और एक बड़ा संदेश दे गई कि भारतीय खेल अब जेंडर की दीवारें तोड़ रहा है।

कबड्डी वर्ल्ड कप में भारत की बादशाहत ने साबित किया कि जड़ों से जुड़ाव कमजोरी नहीं, ताकत हो सकता है। जहां परंपरागत खेल कबड्डी ने गौरव दिलाया वहीं स्क्वैश वर्ल्ड कप/टीम चैंपियनशिप की जीत ने दिखाया कि भारत अब चुनिंदा खेलों का देश नहीं रहा।

चैंपियंस ट्रॉफी मैं जितने एक बार फिर भारतीय क्रिकेट के दीवाने देश को खुशी दी लेकिन फाइनल में जीत के बावजूद पाकिस्तान के रवि है पर विरोध जताते हुए टीम ने हाथ में लाया ने ट्रॉफी ली जो इस बात का सबूत है कि अब भारत अपनी शर्तों पर ही जीतना सीख गया है

पैरा-स्पोर्ट्स असली प्रेरणा बनकर सामने आए

रिकॉर्ड पदकों ने यह सवाल भी खड़ा किया क्या हमारा सिस्टम इन खिलाड़ियों को वह सम्मान देता है, जिसके वे हकदार हैं? उम्मीद है 2026 में इस सवाल का उत्तर ज़रूर मिल जाएगा।

फिल्म जगत :
मनोरंजन नहीं, संदेश भी

साल के बीच से बीते सिने जगत ने 'धुरंधर' की रिकॉर्ड तोड़ धुआंधार बॉक्स ऑफिस सफलता का आनंद लिया और यह फिल्म 1000 करोड़ का भी आंकड़ा पार कर गई। इस फिल्म की सफलता ने यह साफ किया कि दर्शक अब सिर्फ स्टार नहीं, ठोस कहानी भी चाहते हैं।

जहां धुरंधर ने अपने एक्शन से सिल्वर स्क्रीन पर राज किया, वहीं छावा जैसी फिल्मों ने इतिहास को महज गौरवगान नहीं, बहस का विषय बनाया। कांतारा की सफलता से फिल्मों में भाषाई दीवारें टूटीं और बाजार और भी बड़ा हुआ। लेकिन ओटीटी बनाम थिएटर : सह-अस्तित्व की कहानी रच गए 2025 ने सिखाया कि दोनों एक-दूसरे के दुश्मन नहीं हैं।

संस्कृति :
बनी रही परंपरा और आस्था :

संस्कृति परंपरा एवं धर्म तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में भी 2025 उल्लेखनीय रहा। महाकुंभ 2025 : आस्था और अर्थव्यवस्था का संगम बनकर सामने आया । धार्मिक आयोजन वैश्विक पर्यटन का बड़ा केंद्र बने। भारतीय भाषाओं के पुनर्जागरण की संभावना भी नजर आई

हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का डिजिटल विस्तार तेज हुआ। लोक और आदिवासी संस्कृति को पहचान मिली और सरकारी और सामाजिक स्तर पर नई पहल दिखी। युवा संस्कृति पर डिजिटल प्रभाव बढ़ता दिखाई दिया संस्कृति मंच से ज्यादा मोबाइल स्क्रीन पर दिखी।योग, आयुर्वेद और भारतीय जीवनशैली ने भी 2025 में भारत के छवि निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया।

निचोड़:

2025 बताकर गया है कि सिर्फ उपलब्धियां गिनाना काफी नहीं, सवाल उठाना भी ज़रूरी है। राजनीति में जवाबदेही, खेल में निवेश, सिनेमा में साहस, संस्कृति में संतुलन और अर्थव्यवस्था में समावेशन यही 2025 की बड़ी सीख रही।

अगर भारत को अगले दशक में सचमुच वैश्विक नेतृत्व करना है, तो 2025 को चेतावनी और संभावना, दोनों के रूपों में याद रखना होगा।

नई भोर का स्वागतम्।

मिटे सभी की दूरियाँ, रहे न अब तकरार।
नया साल जोड़े रहे, सभी दिलों के तार।।

बाँट रहे शुभकामना, मंगल हो नववर्ष।
आनंद उत्कर्ष बढ़े, हर चेहरे हो हर्ष।।

माफ करो गलती सभी, रहे न मन पर धूल।
महक उठे सारी दिशा, खिले प्रेम के फूल।।

गर्वित होकर जिंदगी, लिखे अमर अभिलेख।
सौरभ ऐसी खींचिए, सुंदर जीवन रेख।।

छोटी सी है जिंदगी, बैर भुलाये मीत।
नई भोर का स्वागतम, प्रेम बढ़ाये प्रीत।।

माहौल हो सुख चैन का, खुश रहे परिवार।
सुभग बधाई मान्यवर, मेरी हो स्वीकार।।

खोल दीजिये राज सब, करिये नव उत्कर्ष।
चेतन अवचेतन खिले, सौरभ इस नववर्ष।।

आते जाते साल है, करना नहीं मलाल।
सौरभ एक दुआ करे, रहे सभी खुशहाल।।

हँसी-खुशी, सुख-शांति हो, खुशियां हो जीवंत।
मन की सूखी डाल पर, खिले सौरभ बसंत।।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

ऐसी लापरवाही ऐसा मंजर देख दिल दुखता है सबके स्वच्छ शहर में

इन्दौर मध्यप्रदेश के भागीरथपुरा में दूषित पानी से कई लोग बीमार होने की घटना जिसमें जनहानि भी हुई। यहां कैसा सबसे स्वच्छ शहर है जहां दूषित पानी की सप्लाई निरन्तर जारी... पर जनता की परेशानी कौन सुनता है साहब । यहां तो बच्चे बूढ़े सभी परेशान परिजन के आंसु जो रुक ही नहीं रहे हैं । यहां कैसा पानी आ रहा था जो जहर बन गया । कुल मिलाकर इन्दौर नगर निगम जो अपनी वाहवाही में इतना फूल गया है कि उसे जनहित लोकसेवा की बात नज़र नहीं आती है वहां तो अपना खजाना भरने में लगा रहता है। मध्यप्रदेश की सबसे बड़े शहर में इस तरह की घटना सभी के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी घटनाएं क्यों होती है इस पर कौन किसे कुछ कहें समझ में नहीं आता है। एक कहावत है कि हमाम में सब एक जैसे ही नजर आते हैं? नगर निगम का अपना जलकर विभाग है, स्वस्थ विभाग है, वहीं जलकार्य समिति है। वहीं प्रदेश सरकार का महकामा अलग है। शहर सरकार की अपने महापौर क्षेत्रीय पार्षद हैं इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जिसमें तीन लोगों की मृत्यु और 50-60 लोग अस्पताल में भर्ती हैं।

विकास की रफ्तार के आगे

जनता के लिए भी सोचना समझना बहुत जरूरी है। दिनचर्या में मुख्य रूप से पानी बहुत जरूरी है लेकिन इस तरह जहरीला पानी हमारे शहर की उपलब्धियों पर कलंक के समान साबित हो रही है।

जनता जनार्दन है तो उनका भी ध्यान रखना जनसेवकों का पहला फर्ज है सिर्फ टेक्स लेकर सुविधाएं की बात दूर साफ व शुद्ध पानी नहीं मिल रहा है तो फिर और क्या कहें हम सरकार। जनता तो

बेचारी... है किससे कहें , किससे शिकायत करें... हमारे यहां तो वरिष्ठ राजनेताओं की नही सुनते अधिकारी हमारी.... कैसे सुने कोई? स्वच्छता की अष्टसिद्धियां की प्राप्ति के बाद इन्दौर सिरमौर बन गया वहां तो गुरु है और निरंतर हर साल सफाई का ऐसा दावा करने के बाद लापरवाही वह भी पानी में जहर....जनता ने तो कई बार की थी शिकायत पर नही होती हैं उनकी सुनवाई , क्यों कि कौन सुनेगा किसको सुनाएं इस लिए जनता को ऐसी परिस्थितियों का समना करना पड़ रहा है।

जिसे देश का सबसे स्वच्छ शहर कहा जाता है, जहां की सीख दुनिया जहान लेती है जिसे प्रदेश के मुखिया चाहे वह शिवराज जी हो या मोहन यादव जी सबके लिए इन्दौर सपनों का शहर..... वहां दूषित पानी पीने से लोगों की मौत हो गई और कई लोग बीमार हो गए। यह घटना प्रदेश के सबसे लोकप्रिय दबंग व बेबाक और वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय की विधानसभा में हुई है, जहां लोगों को गंदा पानी पीने के लिए मजबूर किया गया।

अब देखना यहां है कि

इस घटना के लिए जिम्मेदार कौन है? क्या नगर निगम ने अपनी जिम्मेदारी निभाई? क्या स्वास्थ्य विभाग ने अपनी ड्यूटी की? या फिर यह सिर्फ एक हादसा था? हमें इन सवालों के जवाब ढूंढने होंगे। हंगामा बहुत हुआ और भगीरथपुरा क्षेत्र में हड़कंप मचा हुआ है और

जनता में आक्रोश है, और यह आक्रोश सही भी है। जब एक शहर को स्वच्छ में नम्बर वन कहा जाता है, तो वहां के लोगों को साफ पानी मिलना चाहिए। यहां उनका अधिकार भी है।लेकिन यहां तो उल्टा ही हो रहा है। लोगों को गंदा पानी पीने के लिए मजबूर किया जा रहा है, और इसके परिणामस्वरूप लोगों की जान जा रही है। और लीपा-पोती से घटनाक्रम को समान्य व छोटी बात है कह कर सभी अपने आप को बेकसूर बताने में अभी से लग गये। स्वस्थ टीमें घर घर जाकर निगारनी अब कर रहे हैं जब चिड़िया चुग गई खेत.....?

मटमैला पानी गंदा पानी और गलियों में ड्रेनेज समस्या का अंबार होने के बाद कोई सुनवाई नहीं यहीं बहुत बड़ा सवाल है।

स्वतंत्र पत्रकार व लेखक
हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा हांसी जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया।

हांसी/हिसार

डॉ बी आर अंबेडकर छात्रावास हांसी में भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा एक मीटिंग बुलाई गई, जिसमें सूर्यपुत्र यशवंतराव अंबेडकर जी का जन्मदिन मनाया गया। जिसमें हरियाणा प्रदेश के अध्यक्ष जगदीश कुमार जोशीवाल, गुरु रविदास सभा हांसी के प्रधान रामलाल न्यूलिया, डॉ बी आर अंबेडकर सभा के प्रधान चांदराम जनागल ने बाबा साहब के बारे में विस्तार से बताया तथा गौतम बुद्ध जी के मार्ग पर चलने के संदेश दिए और साथ ही जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें अजय भाटला को भारतीय बौद्ध महासभा हांसी जिले का प्रधान नियुक्त किया गया है, जोरा सिंह, सुनील, महावीर प्रसाद को कैशियर त्रिलोक जनागल को ऑडिटर और जर्मिला भाटला को महिला उप प्रधान बनाया गया, अजय भाटला ने बताया कि बुद्ध धर्म की क्या पहचान, मानव -मानव एक समान तथा भविष्य में बुद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए वे हमेशा ही आगे रहेंगें। इस मौके पर हवा सिंह न्यूलिया, अंबेडकर सभा के पूर्व प्रधान वजीर सिंह, सुमन बाला, ज्योति, संदीप, प्रदीप, त्रिलोक जनागल, चंद्रप्रकाश कटारिया आदि मौजूद रहे ।

छात्रों द्वारा आत्महत्या का पर्याय बना आईआईटी कानपुर, 22 माह में 7 ने दी जान : जांच शुरु

– राजस्थान निवासी छात्र जयसिंह मीणा आत्महत्या मामले की जांच में जुटी पुलिस

सुनील बाजपेई

कानपुर। देश के प्रतिष्ठित उच्च तकनीकी शिक्षा संस्थानों में शुमार यहां का आईआईटी छात्रों द्वारा किसी वजह से आत्महत्या किए जाने का पर्याय बन चुका है। आईआईटी सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक यहां बीते 22 महीनों में संस्थान में सात छात्र आत्महत्या कर चुके हैं। यहां आत्महत्या की सातवीं घटना का संबंध राजस्थान के रहने वाले छात्र जयसिंह मीणा से है। उसने कल 29 दिसंबर को सुसाइड कर लिया था। उसका शव हॉस्टल के कमरे में लटका हुआ मिला था।

सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस द्वारा छात्र का शव कब्जे में ले लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ ही मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

सूचना के बाद राजस्थान से छात्र के परिजन भी कानपुर पहुंचे। 2 ब्लॉक E रूम नंबर 148 में रहने वाला जय सिंह मीणा पुत्र गौरीशंकर मीणा निवासी अवधपुरी चाणक्य विद्या मंदिर सेकेंडरी स्कूल अजमेर राजस्थान का है। जो यहां बायोलॉजिकल साइंस बीटेक चौथे साल का आईआईटी का छात्र था।

पटना के बारे में पुलिस उसके साथियों से भी पूछताछ कर रही है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक छात्र ने पहले नसें काटी और फिर अपने गले में फंदा डालकर झूल गया।

फिलहाल बीटेक के छात्र की आत्महत्या के मामले में अभी कोई सुराग नहीं मिला है। पुलिस द्वारा छानबीन की जा रही है। पुलिस द्वारा आत्महत्या की असल वजह का पता लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं। बता दें कि ऐसा पहली बार नहीं है। बीते 22 महीनों में संस्थान में सात छात्र आत्महत्या कर चुके हैं। छात्र जयसिंह मीणा द्वारा भी फांसी लगाकर आत्महत्या किए जाने की घटना ने आईआईटी में हड़कंप भी मचा रखा है। वहीं छात्र जय सिंह मीणा द्वारा आईआईटी में आत्महत्या किए जाने वास्तविक वजह समाचार लिखे जाने तक पता नहीं चल पाई है। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

धर्मेंद्र ने नितिन गडकरी को पत्र लिखकर रेढ़ाखोल में बाईपास बनाने की मांग की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : नेशनल हाईवे नंबर 55 पर हर दिन सैकड़ों भारी गाड़ियां चलती हैं। इस वजह से भयंकर ट्रैफिक जाम लग जाता है। एक्सीडेंट बढ़ने के साथ-साथ स्टूडेंट्स, मरीजों और सीनियर सिटिजन्स को आने-जाने में दिक्कत होती है। रेढ़ाखोल कस्बे के लोगों की लंबे समय से चली आ रही मांग को देखते हुए, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने केंद्रीय सड़क परिवहन और हाईवे मंत्री नितिन गडकरी को चिट्ठी लिखकर कस्बे के बाहर बाईपास बनाने की रिक्वेस्ट की है।धर्मेंद्र ने यह लेटर रेढ़ाखोल बार एसोसिएशन, ट्रक ओनर्स एसोसिएशन, सीनियर सिटिजन फोरम और लोकल पत्रकारों के सपोर्ट वाले एक डेलीगेशन से मिली अर्जी के आधार पर लिखा है। उन्होंने बताया कि नेशनल हाईवे नंबर 55 बहुत बिज़ी है, जिस पर सैकड़ों भारी गाड़ियां शहर से गुज़रती हैं। शहर की तंग सड़कें इतने ज़्यादा ट्रैफिक के लिए सही नहीं हैं। इस वजह से, हर दिन भयानक ट्रैफिक जाम लग जाता है। शहर में सरकारी ऑफिस, हॉस्पिटल और भीमभोई डिग्री कॉलेज जैसे एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन होने की वजह से ऑफिस टाइम में बहुत भीड़ रहती है। भारी ट्रैफिक की वजह से एक्सीडेंट बढ़ जाते हैं और स्टूडेंट्स, मरीज़ों और सीनियर सिटिजन को आने-जाने में दिक्कतें होती हैं।

रेढ़ाखोल शहर के तेज़ी से हो रहे डेवलपमेंट और पब्लिक सेफ्टी को ध्यान में रखते हुए, धर्मेंद्र ने सेंट्रल मिनिस्टर गडकरी से रिक्वेस्ट की है कि वे संबंधित अधिकारियों को एक नया बाईपास बनाने का ऑर्डर दें। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस बाईपास के बनने से रेढ़ाखोल शहर में एक्सीडेंट कम होंगे और लोगों को इन दिक्कतों से छुटकारा मिलेगा।

घर का तापमान: स्त्री के भीतर चलती ऋतुएँ

[घर के उत्थान—पतन में स्त्री की निर्णायक भूमिका]

घर केवल दीवारों और छत से बना ढाँचा नहीं होता, वह एक जीवंत चेतना है, जो प्रतिदिन मनुष्यों के व्यवहार, भावनाओं और निर्णयों से आकार लेती और बदलती रहती है। यह ऐसी व्यवस्था है जो दिखाई कम देती है, पर हर क्षण अपना असर छोड़ती है। इसमें पुरुष और स्त्री दोनों की भूमिका होती है, किंतु यह भी निर्विवाद सत्य है कि घर का सूक्ष्म संतुलन प्रायः महिलाओं के हाथों में रहता है। प्रत्यक्ष रूप से नहीं, किसी अधिकार या आदेश के माध्यम से नहीं, बल्कि अपने स्वभाव, संवेदना और मौन प्रभाव से। वे नेतृत्व का दावा नहीं करतीं, निर्देश नहीं देतीं, फिर भी वातावरण की दिशा अक्सर वही तय करती हैं। यही कारण है कि घर का स्वरूप कई बार स्त्री की मानसिक स्थिति और भावनात्मक अवस्था का प्रतिबिंब बन जाता है।

यह मान लेना भी उचित नहीं कि हर महिला जिम्मेदारी उठाना चाहती है। कुछ स्त्रियाँ उसे स्वेच्छा से स्वीकार करती हैं, कुछ उससे दूरी बनाए रखना चाहती हैं, और कुछ परिस्थितियों के दबाव में उसे ओढ़ लेने को विवश हो जाती हैं। फिर भी सामाजिक ढाँचा ऐसा है कि घर की भावनात्मक ज़िम्मेदारी अंततः उन्हीं के हिस्से आ जाती है। वे चाहें या न चाहें, उनका व्यवहार, उनकी प्रतिक्रिया और उनकी चुप्पी घर के वातावरण को प्रभावित करती है। यह प्रभाव किसी आदेश से नहीं, बल्कि उस अदृश्य उपस्थिति से जन्म लेता है जो दिखती कम है, पर हर क्षण महसूस की जाती है — और चुपचाप घर की दिशा तय कर देती है।

महिलाएँ घर को केवल संचालित नहीं करतीं, वे उसके स्वभाव की रचना करती हैं। वे तय करती हैं कि घर में संवाद बहता रहेगा या चुप्पी जम जाएगी, अपनापन साँस लेगा या औपचारिकता हावी होगी, सहयोग पनपेगा या तनाव फैलता जाएगा। यह सब किसी लिखित नियम या तय व्यवस्था से नहीं चलता, बल्कि उनके रोज़मर्रा के व्यवहार से आकार ग्रहण करता है। एक हल्की मुस्कान, एक तीखा वाक्य, एक मौन ठहराव या एक संवेदनशील संवाद — ऐसे ही सूक्ष्म क्षण मिलकर घर का व्यापक चरित्र गढ़ते हैं। इसी कारण कहा जाता है कि घर का वातावरण प्रायः स्त्री के मन की प्रतिध्वनि होता है।

यह भी उतना ही यथार्थ है कि जब स्त्री पर अपेक्षाओं का भार आवश्यकता से अधिक लाद दिया जाता है, तब यही शक्ति धीरे-धीरे दबाव में बदलने लगती है। समाज उससे हर भूमिका निभाने की आशा करता है, पर उसे चयन की स्वतंत्रता बहुत कम देता है। यदि कोई स्त्री जिम्मेदारी से दूरी बनाना चाहे तो उसे लापरवाह ठहरा दिया जाता है, और यदि वह जिम्मेदारी उठा ले तो उसे स्वाभाविक मान लिया जाता है। यही दोहरा मानदंड घर के भीतर तनाव की जड़ बनता है, जो समय के साथ रिश्तों को भीतर ही भीतर खोखला करने लगता है।

घर को गढ़ना या बिगाड़ना स्त्री के हाथ में है — इस कथन का आशय तभी स्पष्ट होता है जब "बिगाड़ने" के अर्थ को सही संदर्भ में समझा जाए। बिगाड़ना हमेशा टकराव, कटुता या हिंसा का रूप नहीं लेता। कई बार यह भावनात्मक दूरी, उपेक्षा या संवाद के अभाव के रूप में सामने आता है। जब स्त्री भीतर से थक जाती है, सुनी नहीं जाती या उसकी भूमिका को हल्का समझ लिया जाता है, तब वह अनजाने ही घर से अपना जुड़ाव ढीला करने लगती है। यह कमी दिखाई नहीं देती, पर धीरे-धीरे घर की आत्मा को रिक्त करती चली जाती है।

इसके विपरीत, जब वही स्त्री सम्मान, सहभागिता और भरोसे का अनुभव करती है, तो उसका प्रभाव सहज ही चमत्कारी हो उठता है। तब वह घर को केवल सुव्यवस्थित नहीं रखती, बल्कि उसे संवेदनशील और जीवंत बना देती है। वह बच्चों को संवाद की भाषा सिखाती है, बड़ों के भीतर धैर्य का विस्तार करती है और रिश्तों में संतुलन का सूत्र पिरोती है। ऐसी स्त्री आदेश नहीं देती, दिशा सुझाती है; नियंत्रण नहीं करती, समन्वय रचती है। उसका असर शोर में नहीं, स्थायित्व में दिखाई देता है — शांत, पर दूर तक फैलता हुआ। यही वह अदृश्य शक्ति है जो घर को केवल टिकाऊ नहीं, अर्थपूर्ण भी बनाती है।

यह समझना आवश्यक है कि हर स्त्री एक-सी नहीं होती। कोई नेतृत्व करना चाहती है, कोई सहयोग में सहज होती है, और कोई केवल शांति के साथ अपना जीवन जीना चाहती है। कठिनाई तब उत्पन्न होती है जब समाज सभी से एक ही भूमिका निभाने की अपेक्षा करता है। घर तभी संतुलित रह पाता है जब स्त्री को अपनी भूमिका स्वयं चुनने की स्वतंत्रता मिले — जब उसकी इच्छा, उसकी सीमा और उसकी क्षमता का आदर किया जाए। क्योंकि थोपी गई जिम्मेदारियाँ सृजन नहीं करतीं, वे केवल थकान, असंतोष और भीतर की रिक्तता को जन्म देती हैं।

यह स्वीकार करना होगा कि घर का बनना या बिगड़ना किसी एक व्यक्ति की मंशा का परिणाम नहीं, बल्कि स्त्री की भावनात्मक अवस्था से गहराई से जुड़ा होता है। वह प्रत्यक्ष रूप से सत्ता में न होकर भी प्रभाव के केंद्र में होती है। उसकी चुप्पी, उसकी सहमति और उसकी असहमति — सब मिलकर घर की दिशा तय करती हैं। इसलिए यदि समाज सचमुच सुदृढ़ और संवेदनशील घर चाहता है, तो उसे महिलाओं से केवल जिम्मेदारी नहीं, अधिकार और सम्मान भी देना होगा। क्योंकि घर ईंटों से नहीं, स्त्री के भीतर चलने वाले उस संसार से बनता है जो पूरे परिवेश को आकार देता है।

कृति आरके जैन

+2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल में क्या चल रहा है???

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर – ओडिशा सरकार के +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल के ऑफिस में एक गंभीर गड़बड़ी देखने को मिली है। सबसे हैरानी की बात यह है कि डिप्टी कंट्रोलर का ऑफिस सुबह से खुला है। लेकिन पता चला है कि वह सुबह से ऑफिस नहीं आए हैं। ऑफिस में RTI का कोई भी इंचार्ज ऑफिसर नहीं मिलता। कोई किसी के बारे में सही जानकारी देने में आनाकानी करता है। RTI अप्लाई करने वालों को चिट्ठी लिखकर बुलाया जाता है। लेकिन जब वे ऑफिस आते हैं, तो कोई पकड़ा नहीं जाता। ऐसे गंभीर आरोप राष्ट्रीय विकास सेना के प्रेसिडेंट और ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट और इन्फॉर्मेशन राइट्स एक्टिविस्ट श्री के. बालाराजू अचारी ने +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल पर लगाए हैं। जानकारी के मुताबिक, श्री आचार्य ने 11/11/2025 को +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल ऑफिस से कुछ जानकारी मांगी थी। और उस सारी जानकारी के लिए +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल अथॉरिटी ने श्री आचार्य को 66 रुपये देने के लिए लिखा था। वह भी बैंक चालान के ज़रिए। जो RTI एक्ट के तहत गैर-कानूनी है। लेकिन +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल अथॉरिटी ने ऐसा लेटर लिखा है। इसके लिए राइट टू इन्फॉर्मेशन एक्टिविस्ट श्री के. बालराजू आचार्य को बहुत दूर मलकानगिरी से भुवनेश्वर तक बहुत खर्च करके आना पड़ा। लेकिन इतनी दूर आने के बाद भी +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल का कोई अधिकारी नहीं मिला। न ही किसी ने उनसे जानकारी के लिए मांगे गए पैसे जमा किए। इसी तरह, +2 सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल की एडिटर श्रीमती सुभ्रद बाला बेहरा ने भी श्री आचार्य को बाहर इंतजार करने को कहा और आखिर में उन्हें किसी और दिन आने को कहा। जो बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है, ऐसा श्री के. बालराजू आचार्य ने कहा।

अंतरिक्ष चिकित्सा शोधकर्ताओं को दूसरे अंतरिक्ष युग में लाती है

विजय गर्ग

दो दशकों से अधिक समय तक, मनुष्य अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर रहते रहे हैं, तथा इस बारे में बहुमूल्य डेटा एकत्र कर रहे हैं कि सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण और अंतरिक्ष विकिरण मानव शरीर को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। मांसपेशियों में शोष, हड्डियों की घनत्व में कमी, हृदय संबंधी परिवर्तन और जीन अभिव्यक्ति में बदलाव पर किए गए अध्ययनों के परिणामों ने आईएसएस पर व्यायाम प्रोटोकॉल, सुरक्षा प्रौद्योगिकियों और जीवन-सहायक प्रणालियों में सुधार किया है। लेकिन यहां तक कि आईएसएस को भी पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र द्वारा कुछ सुरक्षा का लाभ मिलता है, जो भविष्य में चंद्र या मंगल ग्रह के खोजकर्ताओं की रक्षा नहीं करेगा।

जैसे-जैसे मानवता अधिक महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अन्वेषण योजनाओं पर काम शुरू करती है, पृथ्वी से परे चंद्रमा, मंगल और संभावित रूप से अन्य दुनियाओं की कक्षा में प्रवेश करना तथा यह समझना कि मानव शरीर अंतरिक्ष की कठोर परिस्थितियों का सामना कैसे करता है, एक केंद्रीय वैज्ञानिक प्राथमिकता बन गई है। अंतरिक्ष चिकित्सा, जो कभी मुख्य रूप से निम्न-पृथ्वी कक्षा में मिशनों पर केंद्रित थी, अब अनुसंधान के एक दूसरे अंतरिक्ष युग के केंद्र में खड़ी है जो लंबे समय तक चलने वाले मिशनों के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों को स्वस्थ रखने के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ दवा का मिश्रण करता है।

पृथ्वी की कक्षा से लेकर गहरे अंतरिक्ष तक

दो दशकों से अधिक समय तक, मनुष्य अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर रहते रहे हैं, तथा इस बारे में बहुमूल्य डेटा एकत्र कर रहे हैं कि सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण और अंतरिक्ष विकिरण मानव शरीर को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। मांसपेशियों में शोष, हड्डियों की घनत्व में कमी, हृदय संबंधी परिवर्तन और जीन अभिव्यक्ति में बदलाव पर किए गए अध्ययनों के परिणामों ने आईएसएस पर व्यायाम प्रोटोकॉल, सुरक्षा प्रौद्योगिकियों और जीवन-सहायक प्रणालियों में सुधार किया है। लेकिन यहां तक कि आईएसएस को भी पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र द्वारा कुछ सुरक्षा का लाभ मिलता है, जो भविष्य में चंद्र या मंगल ग्रह के खोजकर्ताओं की रक्षा नहीं करेगा।

एक नकली 378-दिवसीय मंगल मिशन ने लम्बे समय तक अलगाव, सीमित आपूर्ति और सीमित वातावरण की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का प्रदर्शन किया तथा अंतरिक्ष यात्रियों को पहले से कहीं अधिक दूर जाने के साथ आगे क्या होने वाला है, इसके लिए शोधकर्ताओं को तैयार किया।

अंतरिक्ष की चुनौतियाँ और चिकित्सा किस प्रकार मदद करती है

अंतरिक्ष यात्रियों को निम्नलिखित के लिए उजागर करता है:

सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण: अस्थि और मांसपेशियों के नुकसान, हृदय संबंधी विकार और द्रव वितरण में बदलाव का कारण बनता है।

विकिरण: गैलेक्टिक ब्रह्मांडीय किरणें और सौर कण डीएनए के लिए महत्वपूर्ण जोखिम प्रस्तुत करते हैं, जिससे कैंसर का खतरा बढ़ जाता है, संज्ञानात्मक प्रभाव पड़ते हैं, तथा अंगों की शिथिलता बढ़ती है।

अलगाव और कारावास: मनोवैज्ञानिक तनाव जो मूड, नींद और संज्ञानात्मक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

शोधकर्ता ऐसे प्रतिकारक उपाय विकसित कर रहे हैं जो उन्नत शील्डिंग सामग्रियों (जैसे, हाइड्रोजन-समृद्ध कंपोजिट) से लेकर दवाओं और जैविक हस्तक्षेपों तक विकिरण और सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण प्रभावों से सुरक्षा प्रदान करते हैं। लेकिन स्वस्थ अंतरिक्ष यात्रियों के लिए दवा बनाना विशेष रूप से कठिन है, क्योंकि इस तरह के उपचार लंबे मिशनों में अत्यधिक सुरक्षित और स्थिर होने चाहिए।

अभिनव अनुसंधान रणनीतियाँ

मनुष्यों को गहरे अंतरिक्ष के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए, शोधकर्ता नए जैविक मॉडलों की खोज कर रहे हैं

अंग-ऑन-चिप्स और कोशिका संस्कृतियां वास्तविक समय में कोशिकीय प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करने के लिए अंतरिक्ष में यात्रा करती हैं।

व्यक्तिगत अंतरिक्ष चिकित्सा, यह भविष्यवाणी करने के लिए प्रेरित प्लुरिपोटेंट स्टेम कोशिकाओं का उपयोग करती है कि अलग-अलग अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर किस प्रकार प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

स्वचालित अंतरिक्ष अनुसंधान मंच जो प्रत्यक्ष मानव भागीदारी के बिना प्रयोगों को चलाने में सक्षम बनाते हैं।

ऐसा नवाचार न केवल अंतरिक्ष स्वास्थ्य रणनीतियों को सूचित करता है, बल्कि जैव विज्ञान प्रौद्योगिकियों में भी तेजी लाता है, जिससे पृथ्वी-आधारित चिकित्सा को लाभ हो सकता है।

दोहरे लाभ: अंतरिक्ष और पृथ्वी

अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य से परे, अंतरिक्ष चिकित्सा अनुसंधान से ऐसी अंतर्दृष्टि प्राप्त हो रही है जो पृथ्वी पर स्वास्थ्य देखभाल में सुधार ला सकती है। अंतरिक्ष में ऑक्सीडेटिव तनाव, सूजन और परिवर्तित जीन अभिव्यक्ति के पैटर्न उम्र बढ़ने से संबंधित परिवर्तनों और न्यूरोडीजेनेरेशन तथा हृदय संबंधी गिरावट जैसी बीमारियों से मिलते जुलते हैं। इन प्रक्रियाओं को समझने से पृथ्वी पर वृद्ध जनसंख्या और विकिरण-संबंधी स्थितियों के लिए उपचार में सुधार हो सकता है।

द्वितीय अंतरिक्ष युग परिभाषित

हाल के वैज्ञानिक कार्य एक व्यापक प्रवृत्ति को रेखांकित करते हैं: दूसरा अंतरिक्ष युग केवल अधिक मिशन भेजने के बारे में नहीं है - यह आधुनिक बायोमेडिकल प्रौद्योगिकियों जैसे मल्टी-ओमिक्स, व्यक्तिगत चिकित्सा और वास्तविक समय की शारीरिक निगरानी को अंतरिक्ष अन्वेषण में एकीकृत करने के बारे में सुझाव देता है। ये उपकरण बायोमार्करों की पहचान करने, प्रतिकार उपायों को अनुकूलित करने तथा विविध अंतरिक्ष यात्री दल के लिए स्वास्थ्य योजना तैयार करने में मदद करते हैं।

वाणिज्यिक और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष उड़ान के तेजी से विस्तार के कारण, अंतरिक्ष चिकित्सा में अब न केवल सरकारी अंतरिक्ष एजेंसियां बल्कि निजी कंपनियां और वैश्विक अनुसंधान संस्थान भी शामिल हैं। यह गतिशील पारिस्थितिकी तंत्र खोज में तेजी लाता है और पूरे सौर मंडल में टिकाऊ जीवन के लिए मानवता को तैयार करता है।

संक्षेप में: अंतरिक्ष चिकित्सा निम्न-पृथ्वी कक्षा में अस्तित्व सुनिश्चित करने से लेकर गहरे अंतरिक्ष में निवास के लिए अग्रणी रणनीतियों तक विकसित हुई है। उन्नत बायोमेडिकल उपकरणों, व्यक्तिगत मॉडल और स्वायत्त प्रणालियों का लाभ उठाकर, शोधकर्ता मानवता को अंतरिक्ष अन्वेषण के एक नए युग में ले जा रहे हैं - जहां मनुष्यों को स्वस्थ रखना रॉकेट विज्ञान जितना ही महत्वपूर्ण है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर पंजाब

संपादकीय

चिंतन-मनन

नीला ग्रह बना लाल रेगिस्तान

डॉ विजय गर्ग

आज मंगल एक शुष्क लाल रेगिस्तान है, लेकिन अतीत में वह ऐसा नहीं था अरबों साल पहले मंगल की सतह पर तरल पानी और एक वायुमंडल ने उसे नीली दुनिया दिया था। एक बड़ा सवाल यह है कि मंगल लाल रेगिस्तान में कैसे तब्दील हुआ ? नासा का मावेन अंतरिक्ष यान इस समय मंगल के चारों तरफ घूम रहा है। उसने मंगल के बारे में जो नए आंकड़े जुटाए हैं उससे पता चलता है कि मंगल का वायुमंडल अरबों वर्ष से अंतरिक्ष में लीक हो रहा है, जिससे यह समझने में मदद मिलती है कि कैसे एक समय की नीली दुनिया एक लाल रेगिस्तान बन गई। नई रिसर्च का नेतृत्व कोलोराडो बोल्डर यूनिवर्सिटी में ग्रह भौतिकविद शैनन करी

किया है। वह नासा के मावेन मिशन की प्रमुख जांचकर्ता हैं। मंगल ग्रह पृथ्वी के आकार का लगभग आधा है, जिसका अर्ध व्यास 3390 किलोमीटर है और एक दिन 24.6 घंटे का होता है। इसकी झुकी हुई घूमने की धुरी इसे ऐसे मौसम देती है जो हमारे मौसम से ज्यादा लंबे होते हैं, क्योंकि ग्रह को सूर्य का चक्कर लगाने में 687 पृथ्वी दिवस लगते हैं। नासा के अंतरिक्ष यान से ली गई तस्वीरों में प्राचीन नदी घाटियां, झील के बेसिन और 4800 किलोमीटर से ज्यादा लंबी एक घाटी प्रणाली दिखाई देती हैं जो क्रस्ट (पपड़ी) पर बनी हुई हैं। इस तरह का लैंडस्केप ज्यादा घने आसमान के नीचे लंबे समय तक सतह पर बहते पानी से ही संभव था।

अपने इतिहास की शुरुआत में मंगल ग्रह पर शायद एक मैग्नेटोस्फीयर (चुंबकीय मंडल) था। चुंबकीय मंडल किसी ग्रह के चुंबकीय क्षेत्र द्वारा बनाया गया अंतरिक्ष का एक क्षेत्र है जो सूर्य से आने वाले विद्युत चार्ज वाले कणों को मोड़ देता है। जब चार अरब साल पहले मंगल की चुंबकीय सुरक्षा खत्म हो गई, तो ऊपरी वायुमंडल सौर पवन की पूरी ताकत के संपर्क में आ गया। मंगल पर चल रही मुख्य पलायन प्रक्रिया एटमास्फेरिक स्पटरिंग' कहलाती है, जिसमें ऊर्जावान कण वायुमंडलीय परमाणुओं से टकराते हैं और उन्हें अंतरिक्ष में धकेल देते हैं। मंगल ग्रह पर वे कण मुख्य रूप से सौर पवन के भारी आयन (एक या अधिक पाजिटिव या नेगेटिव चार्ज वाले अणु) हैं जो चुंबकीय क्षेत्र रेखाओं पर ऊपरी वायुमंडल में टकराते हैं। साथ ही, मावेन उपग्रह के अवलोकन से पता चलता है कि ऊपरी वायुमंडल में ले जाए गए पानी के अणु विखंडित हो जाते हैं और हाइड्रोजन छोड़ते हैं जो अंतरिक्ष में चली जाती है। मंगल पर रहने लायक स्थिति शायद ज्यादातर वायुमंडल के खत्म होने से पहले तक ही सीमित थी।

नासा के क्यूरियोसिटी, पर्सेवरेंस रोवर और मावेन उपग्रह अब यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि वह समय कितना लंबा चला। मंगल कैसे एक नीली दुनिया से लाल रेगिस्तान में बदल गया, यह समझ कर विज्ञानी यह तय कर पाएंगे कि दूर के बाहरी ग्रह अपने वायुमंडल और सतह के पानी को बनाए रख सकते हैं या नहीं।

"सतत विकास: समृद्धि और संरक्षण का साझा मार्ग !"

-सुनील कुमार महला

अरावली पहाड़ियों की जिस परिभाषा को पहले माननीय सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार किया था, उसी पर अब रोक लगाकर नई उच्चस्तरीय विशेषज्ञ समिति के गठन का आदेश देना स्वागत योग्य कदम है। वास्तव में, यह संकेत देता है कि पहले की रिपोर्ट को लेकर जो आम लोगों द्वारा जो आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, वे निराधार नहीं थीं। अरावली को केवल पहाड़ियों की एक भौगोलिक श्रृंखला मानना भूल होगी, क्योंकि यह उत्तर भारत के उपजाऊ मैदानों को मरुस्थलीकरण से बचाने वाली एक जीवन रेखा है। सरकारी समिति की सिफारिश पर तय की गई परिभाषा से यह आशंका पैदा हुई थी कि अरावली का बड़ा हिस्सा संरक्षण से बाहर हो सकता है, जिससे खनन और निर्माण जैसी गतिविधियों को बढ़ावा मिलता। केवल यह कह देने से कि रिपोर्ट को गलत समझा जा रहा है, आम लोगों की चिंताएं दूर नहीं होतीं। आज जब देश गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब नीति निर्धारण में स्पष्टता, पारदर्शिता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वतः संज्ञान लेना यह दर्शाता है कि उसने जनहित और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी चिंताओं को गंभीरता से समझा है।

अब उच्चस्तरीय विशेषज्ञों की समिति करेगी गहन अध्ययन:-

जानकारी के अनुसार अब विशेषज्ञों की समिति अलग-अलग समय की जानकारियों का अध्ययन करेगी। यानी पुरानी तस्वीरें, पुराने नक्शे और सैटेलाइट से ली गई तस्वीरों की आपसी तुलना की जाएगी। इससे यह साफ होगा कि पिछले कुछ दशकों में अरावली पहाड़ियों में क्या-क्या बदलाव हुए हैं। उम्मीद है कि इस जांच से यह सच्चाई सामने आएगी कि अवैध खनन, बिना योजना के निर्माण और पेड़ों की कटाई ने इस बहुमूल्य प्राकृतिक धरोहर को कितना नुकसान पहुंचाया है ।विवाद केवल 100 मीटर ऊँचाई तय करने को लेकर नहीं है। असल बात यह है कि पर्यावरण में छोटी-सी बात भी बहुत असर डालती है ।किसी पहाड़ी को उसके आसपास के जंगल, पानी, मिट्टी और जीव-जंतुओं से अलग करके नहीं समझा जा सकता ।अरावली को लेकर आम लोगों की कड़ी प्रतिक्रिया इसलिए आई, क्योंकि अब वहाँ पर्यावरण का बिगड़ना साफ दिखाई देने लगा है और उसका नुकसान सीधे लोगों को महसूस हो रहा है। इस वर्ष यानी कि वर्ष 2025 में देश के पहाड़ी राज्यों में आई विनाशकारी आपदाएँ, दिल्ली-एनसीआर और मुंबई जैसे महानगरों में लगातार जहरीली होती हवा कोई अचानक घटित घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि यह वर्षों से पर्यावरण के प्रति बरती गई लापरवाही और अदूरदर्शी नीतियों का सीधा परिणाम हैं। वास्तव में यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि इतनी गंभीर चेतावनियों के बाद भी शासन और समाज के स्तर पर पर्यावरण को लेकर अपेक्षित संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता।

उत्तराखंड में हजारों एकड़ वन भूमि पर अवैध कब्जों तथा राजस्थान के टिब्बी में राठीखेड़ा एथेनॉल फैक्ट्री मामला:-

एक ओर अरावली पर्वतमाला के संरक्षण को लेकर जनआंदोलन और विरोध-प्रदर्शन हो रहे थे, वहीं दूसरी ओर उत्तराखंड में हजारों एकड़ वन भूमि पर अवैध कब्जों का मामला सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन है, जिसमें राज्य में बड़े पैमाने पर वन भूमि पर अतिक्रमण का मुद्दा उठाया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर स्वतः संज्ञान लेते हुए कहा कि राज्य सरकार वन भूमि की रक्षा करने में गंभीरता नहीं दिखा रही है। कोर्ट के समक्ष आए तथ्यों के अनुसार हजारों हेक्टेयर वन क्षेत्र पर अवैध निर्माण और कब्जे हो चुके हैं, जो पर्यावरण, जैव विविधता और हिमालयी पारिस्थितिकी के लिए गंभीर खतरा हैं। अदालत ने राज्य सरकार को अतिक्रमण हटाने, नई गतिविधियों पर रोक लगाने और विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं, और मामले की आगे भी निगरानी की जा रही है। उधर, लगभग इसी समय राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में (राठीखेड़ा) किसान एथेनॉल फैक्ट्री के खिलाफ इसलिए सड़कों पर थे, क्योंकि उन्हें अपनी ज़मीन, पानी और आजीविका पर संकट दिखाई दे रहा था। गौरतलब है कि राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के टिब्बी (टिब्बी) तहसील में इथेनॉल फैक्ट्री लगाने को लेकर ग्रामीणों और किसानों का लंबा विरोध प्रदर्शन हुआ, जो पिछले कुछ दिनों में यानी कि दिसंबर 2025 में हिंसक हो गया था, जिसमें पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पें हुईं, आगजनी और तोड़फोड़ हुई; किसान फैक्ट्री से भूजल प्रदूषण, कृषि और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव की आशंका जता रहे थे। वास्तव में वहां के किसान यह चाहते थे कि प्लांट को या तो स्क्रैप कर दिया जाए या किसी ऐसी जगह शिफ्ट किया जाए जहाँ कृषि को नुकसान न हो और पर्यावरण मानकों का पालन हो। मामले को तूल पकड़ता देख प्रशासन ने कुछ समय के लिए इंटरनेट सेवाएं बंद कर दीं और कई लोगों, जिनमें किसान नेता और कांग्रेसी विधायक शामिल थे, को हिरासत में लिया। यहां तक कि इस मुद्दे को लेकर सत्ताधारी और विपक्षी दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप भी हुए, जिसके बाद किसानों की मांगों को मानते हुए निर्माण कार्य रोका गया और कंपनी ने प्लांट को राजस्थान से बाहर शिफ्ट करने का फैसला किया। वास्तव में, ये घटनाएँ अलग-अलग स्थानों की होने के बावजूद एक ही सच्चाई को उजागर करती हैं कि विकास के नाम पर प्रकृति को लगातार हाशिये पर धकेला जा रहा है और पर्यावरणीय संतुलन की कीमत आम जनता, किसान और आने वाली पीढ़ियाँ चुका रही हैं। जब तक नीति-निर्माण में पर्यावरण को केंद्र में रखकर ठोस और ईमानदार निर्णय नहीं लिए जाएंगे, तब तक ऐसी आपदाएँ और विरोध हमारे समय की स्थायी पहचान बनते चले जाएंगे।

विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन आज की अहम और महत्वपूर्ण आवश्यकता:-

अंत में यही कहूंगा कि यह सचमुच एक सकारात्मक संकेत है कि अरावली पर्वतमाला को लेकर सरकार, न्यायपालिका और जनता-तीनों स्तरों पर चिंता और सजगता दिखाई दे रही है। अरावली केवल पहाड़ियों की श्रृंखला नहीं, बल्कि उत्तर भारत के पर्यावरणीय संतुलन की रीढ़ है। इसका संरक्षण किसी एक संस्था की नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी है ।नई गठित कमिटी से अपेक्षा है कि वह विषय को केवल विकास बनाम पर्यावरण के टकराव के रूप में नहीं देखेगी, बल्कि दीर्घकालिक राष्ट्रीय हित के दृष्टिकोण से परखेगी ।यह बात ठीक है कि आज औद्योगिक विकास, आवासीय परियोजनाएँ, खनन गतिविधियाँ और आधारभूत संरचनाएँ, ये सभी बहुत आवश्यक हैं, लेकिन इनके लिए यदि प्राकृतिक ढांचे को ही कमजोर कर दिया जाए तो उसका खामियाजा निश्चित ही किसी न किसी रूप में हमारी आने वाली पीढ़ियों को ही भुगतना पड़ेगा और वे हमें इसके लिए कोसेंगी। वास्तव में कहना ग़लत नहीं होगा कि अरावली का महत्व केवल हरियाणा, राजस्थान और गुजरात तक ही सीमित नहीं है। यह रेगिस्तान के विस्तार को रोकने, भूजल रिचार्ज, जैव-विविधता संरक्षण और दिल्ली-एनसीआर के प्रदूषण नियंत्रण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अनियंत्रित खनन और अंधाधुंध निर्माण गतिविधियों ने पहले ही इस क्षेत्र को गंभीर नुकसान पहुँचाया है। ऐसे में कमिटी को यह चाहिए कि वह विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों, पर्यावरणीय रिपोर्टों, स्थानीय समुदायों के अनुभव और न्यायालय के निर्देशों सभी को समग्र रूप से ध्यान में रखे ।यह बात हम सभी को ध्यान में रखनी चाहिए कि विकास की परिभाषा केवल ऊँची इमारतें, सड़कें, बड़े-बड़े पुल, बांध, सुरंगे और उद्योग नहीं हो सकते हैं। वास्तव में विकास तो वही है जो प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर आगे बढ़े। यदि आज हमने पर्यावरण को नजरअंदाज किया, तो कल वही विकास मानव जीवन के लिए संकट बन सकता है ।इसलिए आज हमारे देश को एक ऐसे मॉडल की आवश्यकता है जहाँ विकास और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक बनें, विरोधी नहीं। तथ्य तो यह है कि अरावली का संरक्षण इस संतुलन की परीक्षा है। यदि हम इसमें सफल होते हैं, तो यह न केवल एक पर्वतमाला की रक्षा होगी, बल्कि सतत और संवेदनशील विकास की दिशा में एक मजबूत कदम भी साबित होगा। दूसरे शब्दों में संक्षेप में यह बात कही जा सकती है कि अरावली पर्वतमाला की रक्षा के लिए सर्वोच्च न्यायालय का हालिया रुख अत्यंत ही सकारात्मक व काबिले-तारीफ है। माननीय न्यायालय ने 20 नवंबर के अपने पूर्वनिर्णय पर रोक लगाकर यह एकदम स्पष्ट कर दिया है कि अरावली की परिभाषा और संरक्षण को सीमित दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। अब नई, व्यापक और वैज्ञानिक परिभाषा तय करने की दिशा में कदम बढ़ाया गया है, ताकि पर्यावरण से किसी भी तरह का खिलवाड़ न हो ।सर्वोच्च न्यायालय ने अरावली से जुड़े मामलों में स्वतः संज्ञान लेकर वास्तव में यह साफ व स्पष्ट संकेत दिया है कि इस विषय में गहन तथ्यान्वेषण जरूरी है। इसके लिए विशेषज्ञों की सहायता से एक उच्च-स्तरीय समिति गठित होगी, जो खनन, सीमांकन, मानचित्रण और नियमों की अच्छी तरह से समीक्षा करेगी। न्यायालय का यह स्पष्ट मत है कि खनन नियमों में ढिलाई अरावली को अपूरणीय क्षति पहुंचा सकती है। वहीं पर सरकार ने भी पूर्व आदेश की कमियों को स्वीकार किया है। केंद्र सरकार की ओर से यह सहमति जताई गई है कि अब अरावली क्षेत्र में खनन या नियमों में कोई भी बदलाव सर्वोच्च न्यायालय की अनुमति से ही होगा। यहां तक कि यह भी माना गया है कि नवंबर के फैसले को लेकर कई गलतफहमियां थीं। माननीय न्यायालय का उद्देश्य विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना है। यह बात ठीक है कि आज के समय में खनन को पूरी तरह रोकना संभव नहीं है, फिर भी यह सुनिश्चित करना बहुत ही जरूरी और आवश्यक है कि इससे प्रकृति और मानव जीवन को खतरा न हो। अंततः, अरावली की रक्षा केवल न्यायालय या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि आम नागरिकों की सतर्कता भी उतनी ही आवश्यक है, ताकि प्राकृतिक संसाधनों की अनियंत्रित लूट को रोका जा सके।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,

तकनीक और इनोवेशन के साथ बढ़ती जिम्मेदारियां

डॉ विजय गर्ग

हालांकि, वर्ष 2025 तकनीकी उपलब्धियों का साल रहा, लेकिन कई सवाल भी छोड़ गया। डेटा प्राइवेसी, साइबर सुरक्षा, रोजगार पर ऑटोमेशन का प्रभाव और डिजिटल असमानता जैसे मुद्दे और गहरे हुए। तकनीक ने अवसर बढ़ाए, लेकिन साथ ही सामाजिक-नैतिक ज़िम्मेदारियां भी बढ़ीं।

वर्ष 2025 तकनीक और इनोवेशन के इतिहास में निर्णायक पड़ाव के रूप में दर्ज हो रहा है। यह वर्ष तकनीक के आम जीवन, शासन, अर्थव्यवस्था और वैश्विक शक्ति-संतुलन पर गहरा प्रभाव डालने वाला रहा है। भारत से लेकर दुनिया तक, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, 5जी-6जी, ग्रीन टेक्नोलॉजी, स्पेस टेक और डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर नीति और विकास का केंद्रबिंदु बन चुके हैं।

वर्ष 2025 में एआई ने 'भविष्य की तकनीक' से निकलकर 'वर्तमान की वास्तविकता' का रूप ले लिया। जनरेटिव एआई अब कंटेंट लिखने या चैटबॉट तक सीमित नहीं रहा है। हेल्थकेयर में रोगों की प्रारंभिक पहचान, कृषि में फसल अनुमान, न्याय व्यवस्था में दस्तावेज़ विश्लेषण और उद्योगों में निर्णय-निर्माण तक एआई की पैठ गहरी हुई।

भारत में एआई का उपयोग सरकारी योजनाओं की निगरानी, डिजिटल शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट में तेज़ी से बढ़ा। वहीं दुनिया के स्तर पर एआई रेगुलेशन एक बड़ा मुद्दा बना। यूरोपियन यूनियन ने एआई एक्ट के ज़रिये नियंत्रण की कोशिश की, जबकि अमेरिका और चीन एआई नेतृत्व की होड़ में और आक्रामक होते दिखे। वर्ष 2025 यह भी सिखा गया कि एआई जितना शक्तिशाली है, उतना ही जिम्मेदारी और नैतिकता की मांग भी करता है। यह वर्ष तकनीकी आत्मनिर्भरता को एक वैश्विक रणनीतिक विषय के रूप में उभारने वाला रहा है। सेमीकंडक्टर अब केवल इलेक्ट्रॉनिक चिप नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक शक्ति का प्रतीक बन गए। भारत ने सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग की दिशा में ठोस कदम उठाए।

दुनिया में अमेरिका-चीन तकनीकी प्रतिस्पर्धा तेज़ हुई। टेक सप्लाई चेन को 'फ्रेंड-शोरिंग' की दिशा में मोड़ा गया। आने वाले वर्षों में तकनीक केवल बाज़ार का नहीं, बल्कि भू-राजनीति का भी हथियार बनेगी।

भारत सहित कई देशों में बड़े पैमाने पर 5जी आकार ले चुका है। लेकिन असली बदलाव इसके उपयोग में दिखा—स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थकेयर, इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन और स्मार्ट विलेज जैसी अवधारणाएं ज़मीन पर उतरती दिखीं। भारत में 5जी आधारित शिक्षा, कृषि सलाह और टेलीमेडिसिन ने डिजिटल डिवाइड को कम करने की नई उम्मीद जगाई है। इसी बीच दुनिया 6जी की तैयारी में जुट गई। 6जी रिसर्च, स्पीड और अल्ट्रा-लो लेटेंसी को लेकर प्रयोगों ने यह संकेत दे दिया कि आने वाला दशक 'हाइपर-कनेक्टेड' समाज का होगा।

वहीं, क्लाइमेट चेंज के बढ़ते खतरे ने ग्रीन टेक्नोलॉजी को नवाचार का केंद्र बना दिया। रिन्यूएबल एनर्जी, ग्रीन हाइड्रोजन, बैटरी स्टोरेज और कार्बन कैप्चर टेक्नोलॉजी पर निवेश बढ़ा। भारत ने सोलर और ग्रीन हाइड्रोजन में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में कदम बढ़ाए। दुनिया ने यह भी महसूस किया कि एआई और डेटा सेंटर्स की बढ़ती ऊर्जा खपत एक नई चुनौती है।

तकनीक के मोर्चे पर 2025 में देश की सबसे बड़ी पहचान डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर रही। आधार, यूपीआई, डिजिलॉकर और ओपन डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने देश के भीतर और वैश्विक मंच पर भी भारत को एक मॉडल के रूप में स्थापित किया। यूपीआई का अंतरराष्ट्रीय विस्तार, डिजिटल भुगतान की बढ़ती स्वीकार्यता और सरकारी सेवाओं का डिजिटलीकरण यह दिखाता है कि तकनीक कैसे लोकतांत्रिक विकास का औज़ार बन सकती है।

इस वर्ष अंतरिक्ष तकनीक केवल सरकारों तक सीमित नहीं रही। भारत में निजी स्पेस स्टार्टअप्स, सैटेलाइट, लॉन्च व्हीकल और स्पेस डेटा एनालिटिक्स के क्षेत्र में आगे बढ़े। इसरो की उपलब्धियों के साथ-साथ निजी कंपनियों की भागीदारी ने स्पेस इकोनॉमी को नई गति दी। दुनिया में भी स्पेस टेक, क्वांटम कंप्यूटिंग और बायोटेक जैसे क्षेत्रों में स्टार्टअप्स ने यह दिखाया कि नवाचार अब केवल सिलिकॉन वैली तक ही सीमित नहीं है। हालांकि, वर्ष 2025 तकनीकी उपलब्धियों का साल रहा, लेकिन कई सवाल भी छोड़ गया। डेटा प्राइवेसी, साइबर सुरक्षा, रोजगार पर ऑटोमेशन का प्रभाव और डिजिटल असमानता जैसे मुद्दे और गहरे हुए। तकनीक ने अवसर बढ़ाए, लेकिन साथ ही सामाजिक-नैतिक ज़िम्मेदारियां भी बढ़ीं।

सरकारी योजनाओं की मॉनिटरिंग, कृषि सलाह, भाषा अनुवाद और डिजिटल शिक्षा में एआई का उपयोग बढ़ा। वहीं दुनिया भर में एआई को लेकर यह बहस तेज़ हुई कि क्या मशीनें इंसानी नौकरियों को निगल जाएंगी। वर्ष 2025 ने साफ़ किया कि एआई रोजगार छीनने के साथ-साथ नए कौशल और नए अवसर भी पैदा कर रही है।

तकनीक के लिहाज़ से 2025 को 'संक्रमण का वर्ष' कहा जा सकता है—जहां दुनिया ने तय किया कि तकनीक केवल सुविधा नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाली शक्ति है। आने वाले वर्षों में यह इस बात पर निर्भर करेगा कि हम तकनीक को केवल तेज़ी से अपनाते हैं या उसे समझदारी, समावेशन और सतत विकास के साथ आगे बढ़ाते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

रफ्तार की सीमा : डॉ विजय गर्ग

कुछ समय से ऐसा प्रतीत होता है, मानो हर साल पिछले साल से कुछ अधिक तेज रफ्तार से गुजर रहा है। एक तरह की भ्रामक स्थिति कभी-कभी मन में निर्मित होने लगती है कि जो रफ्तार और व्यस्तता हम महसूस कर रहे हैं, वास्तव में भी क्या जीवन इतनी ही गति से आगे बढ़ रहा है। यह तो निश्चित है कि इस साल के हर महीने हम सब बहुत व्यस्त बने रहे। भले ही हम अपनी व्यावसायिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों में व्यस्त हों, पर इसके अतिरिक्त भी हमारे आसपास कोई न कोई महत्वपूर्ण विषय भी लगातार चर्चा में बना रहा। शायद हम सबने यह महसूस किया होगा कि खबरों और मुद्दों की रफ्तार इस बार पहले से अधिक तेज बनी रही। एक विषय आता, उतनी ही जल्दी वह गुजर जाता और उसकी जगह कोई नया विषय ले लेता ।

जब कुछ नया विषय हमें नहीं मिलता, तब हमारे पास अलग- अलग मनोरंजन के साधन बने रहे, हम सेकंडों और मिनटों के रील में उलझे रहे, तो कभी खुद के चित्रों को हमारे नए साथी कृत्रिम बुद्धिमत्ता या एआइ के जरिए अलग-अलग तेवर देते रहे। कुछ न कुछ अनोखा आजमाते रहे, जिसे हम चाह कर भी सीखना नहीं कह सकते, क्योंकि सीखने का मकसद व्यापक अर्थ लिए होता है। यह सब केवल सुगम मनोरंजन की श्रेणी में ही रहा। अवधि में बड़ा मजा इस साल का सबसे बड़ा आकर्षण हम सब के लिए रहा। जहां फिल्मों में जीवन से प्रेरित कहानियों को लगभग तीन घंटे में प्रस्तुत किया जाता रहा है, हमने अपने वास्तविक जीवन के किसी सामान्य से दिन को कुछ मिनटों और सेकंडों में ही बांट दिया है। यही हमारी एकाग्रता की अवधि का सर्वोच्च समय बन गया है ।थोड़ी-सी जानकारी से ही हम सब कुछ सीख-समझ लेते हैं और कुछ मिनट में ही प्रसारित भी कर देते हैं । हम गंभीर मुद्दों पर भी त्वरित प्रतिक्रिया देने में सक्षम हो गए हैं, क्योंकि हम आनलाइन माध्यम पर बहुत से प्रभावशाली या नामी-गिरामी हस्तियों का लिखा पढ़ते रहते हैं और हमें सब जानकारी मिल जाती है। खबरों की हम तक पहुंचने की रफ्तार बहुत अधिक है, इसलिए खुद से सोचने-समझने का समय अब हमारे पास बचता ही नहीं है। हम केवल मूकदर्शक से बने हुए हैं, जो बिना थमे सब कुछ ग्रहण किए जा रहे हैं। यह सोचना जरूरी है कि ये दौड़ते पहिए इस जीवन पर किसने कस दिए हैं। क्या हम वास्तविकता देख रहे हैं ? क्या सकारात्मक बदलाव की लहर भी उतनी ही रफ्तार से जीवन में और दुनिया में खुशियां फैला रही है ? या हम सब केवल आभासी दुनिया में ही व्यस्त बने हुए हैं ? जो कुछ हो रहा है, वह स्क्रीन के उस तरफ है और हमारी आंखों के ठीक सामने।

जरूरत है कि स्क्रीन को हटाकर हम अपने आसपास खुली आंखों के से जीवन को देखें। देश और दुनिया की वास्तविकता का खुद विवेक से अवलोकन करें। फटाफट भागते युग में पलक झपकते ही कोई एक देश से दूसरे देश पहुंच जाता है, तो हमें लगता है दुनिया तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है, पर किसी के रोज की भोजन थाली में रोटी और चटनी के साथ सब्जी को जोड़ने में उसे कई साल लग जाते हैं।

बदलाव की रफ्तार, उसकी चाल, दिशा और मकसद को समझना पेचीदा है। कुछ बदलाव पल भर में आ जाते हैं, कुछ को पूरा जीवन लग जाता है और उसके बाद भी जरूरी बदलाव नहीं आ पाते। कार चलाते व्यक्ति का हवाईजहाज में बैठने का सफर संभव है, कुछ वर्षों में तय हो जाए, पर पैदल चलते मुसाफिर को सामान्य सुरक्षित परिवहन तक मिलना भी मुश्किल हो सकता है।

जब संपन्न परिवार के बच्चों के लिए विदेश में पढ़ाई करना सामान्य होता जा रहा है, तो हमें लगने लगता है, आज का समय कितनी संभावनाएं लिए हुए है। वहीं किसी मजदूर ने वर्षों तक रुपए जुटा कर अपने बच्चे को शिक्षित किया है, पर अब बच्चा नौकरी के लंबे इंतजार में है, उनका समय वहीं रुक-सा जाता है। अपनी ही तरह अपने बच्चे को मजदूर न बनाने का दृढ़ इरादा, मेहनत के अनुसार पारिश्रमिक और सम्मान न मिल पाने की हताशा से उपजा निर्णय है। जो आगे बढ़ने के सारे दरवाजे किसी के लिए बंद कर देता है ।इस तरह का संघर्ष बरसों से एक- सा बना हुआ है। अगर वास्तव में इस रफ्तार से समय बेहतर हो रहा है, तो यकीनन मूलभूत सुविधाएं सबकी पहुंच में हो रही होंगी। अगर हमारा समाज शिक्षित और सभ्य बन रहा है, तो हमारे विषय अब पहले से अलग होंगे, हमारा शब्दकोश शिष्टाचार के शब्दों से भरा हुआ होगा, हमारे भीतर उदारता और सहिष्णुता होगी। हम सब अब सुरक्षित और भविष्य को लेकर निश्चित महसूस करते होंगे।

यह जीवन चकाचौंध रोशनी से कभी नहीं भर सकता। उसमें तो ठीक से देखना भी मुश्किल होता है। हम कितनी देर तक देख सकते हैं अपने मोबाइल की स्क्रीन से बिखरती रंग-बिरंगी चमकीली रोशनी को ? हमें मद्धिम रोशनी की जरूरत है, जिसमें धीरे-धीरे स्वाभाविक रूप से चीजें बदलती हुई स्पष्ट नजर आएं। प्रगति होती है, तो मुस्कुराहट हमारे आसपास ही खिलती नजर आती है। छोटे- छोटे ईमानदार प्रयास धीरे-धीरे शक्ल लेते हैं।

हमें अपनी इंद्रियों पर विश्वास करके खुद देखना और महसूस करना चाहिए। भले ही हमें सब कुछ तेज गति में देखने की आदत - सी हो गई है, पर वास्तविकता ठहराव की मांग करती है। अपने मोबाइल, लैपटाप की स्क्रीन को कोने में रखकर हम एक बार खुद पर और अपने आसपास पर गौर कर सकते हैं। आम आदमी आज भी मेहनत कर अपना संघर्ष से भरा रास्ता तय कर रहा है, जहां आज भी उसकी यात्रा बहुत लंबी और मद्धिम बनी हुई है। गैरजरूरी व्यस्तताओं से खुद को मुक्त कर आज के समय की इस रफ्तार की लगाम को पकड़, इसे सही दिशा देना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

उपलब्धियों के शोर में दबे सच: 2025 का आत्ममंथन

बीता साल, बचे सवाल : 2025 का भारत

- डॉ सत्यवान सौरभ

इतिहास केवल तारीख़ों और घटनाओं का संग्रह नहीं होता, वह समाज की सामूहिक चेतना का आईना भी होता है। बीते कुछ वर्ष, और विशेष रूप से वर्ष 2025, भारत के लिए ऐसा ही एक आईना बनकर सामने आए—जिसमें हमने अपनी उपलब्धियाँ भी देखीं और अपनी असहज सच्चाइयाँ भी। यह वर्ष उम्मीद और हताशा, प्रगति और पिछड़ेपन, गर्व और ग्लानि—इन सभी भावों का एक साथ साक्षी बना।

2025 में भारत ने कई मोर्चों पर दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा। डिजिटल भुगतान प्रणाली ने आम नागरिक के जीवन को अपेक्षाकृत सरल बनाया। यूपीआई जैसी तकनीकों ने यह दिखाया कि यदि नीयत हो तो तकनीक जनसाधारण तक पहुँच सकती है। स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं में उद्यमिता का विश्वास जगाया, अंतरिक्ष अनुसंधान में भारत ने सीमित संसाधनों में असाधारण क्षमताओं का परिचय दिया, और बुनियादी ढाँचे—सड़कों, रेल, हवाई अड्डों—के विस्तार ने 'तेज़ी से बढ़ते भारत' की छवि को मज़बूत किया। इन उपलब्धियों से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन यहीं आत्ममंथन की ज़रूरत भी पैदा होती है, क्योंकि सवाल केवल विकास का नहीं, बल्कि उसके सामाजिक प्रभाव का है।

विकास के चमकदार आँकड़ों के समानांतर 2025 में बेरोज़गारी और महंगाई की सच्चाई भी उतनी ही तीखी रही। पढ़े-लिखे युवाओं के हाथों में डिग्रियाँ थीं, लेकिन रोज़गार नहीं। भर्ती परीक्षाओं की अनिश्चितता, परिणामों में देरी और निजी क्षेत्र की अस्थिरता ने एक पूरी पीढ़ी को मानसिक दबाव में डाल दिया। महंगाई ने आम आदमी की रसोई से संतुलन छीन लिया। दाल-सब्ज़ी, गैस, शिक्षा और स्वास्थ्य—सब कुछ महँगा होता गया, पर आय उसी अनुपात में नहीं बढ़ी। यह आर्थिक असंतुलन धीरे-धीरे सामाजिक असंतोष में बदलता चला गया।

2025 में किसान और मज़दूर की स्थिति भी किसी से छिपी नहीं रही। मौसम की मार, फसल के उचित दाम न मिलना, बढ़ता कर्ज़ और नीति-स्तर की अनदेखी ने किसान को लगातार असुरक्षा में रखा। कहीं संवाद टलता रहा, कहीं आंदोलनों को दबाने की कोशिश हुई। यह विडंबना है कि जो देश को भोजन देता है, वही सबसे अधिक अनिश्चित भविष्य से घिरा है। मज़दूरों की स्थिति भी इससे भिन्न नहीं रही। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले करोड़ों लोग सामाजिक सुरक्षा, स्थायी रोज़गार और सम्मानजनक जीवन से वंचित रहे। विकास की इमारत जिन हाथों से खड़ी होती है, वे हाथ अक्सर सबसे ज़्यादा थके और सबसे कम सुरक्षित होते हैं।

सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था की जर्जर हालत 2025 में और अधिक उजागर हुई। सरकारी स्कूलों और अस्पतालों की बदहाली अब किसी एक राज्य की समस्या नहीं, बल्कि राष्ट्रीय

चुनौती बन चुकी है। शिक्षक संसाधनों की कमी और प्रशासनिक दबाव के बीच काम करते रहे, वहीं स्वास्थ्यकर्मी अत्यधिक कार्यभार, सीमित सुविधाओं और असुरक्षा के वातावरण में अपनी ज़िम्मेदारी निभाते रहे। निजीकरण ने विकल्प तो दिए, लेकिन समानता नहीं। शिक्षा और स्वास्थ्य धीरे-धीरे अधिकार की जगह बाज़ार की वस्तु बनते चले गए, और इसका सबसे बड़ा नुकसान उन लोगों को हुआ जो पहले से ही सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर थे।

लोकतंत्र की दृष्टि से भी 2025 एक बेचैन करने वाला वर्ष रहा। असहमति को देशविरोध से जोड़ने की प्रवृत्ति ने सार्वजनिक विमर्श को संकुचित किया। लेखकों, पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं पर बढ़ता दबाव यह संकेत देने लगा कि सत्ता से सवाल पूछना जोखिम भरा होता जा रहा है। सोशल मीडिया पोस्ट के आधार पर गिरफ्तारियाँ, अभिव्यक्ति की सीमाएँ तय करने की कोशिशें और संवैधानिक संस्थानों की स्वायत्तता पर उठते प्रश्न यह याद दिलाते रहे कि लोकतंत्र केवल चुनावी प्रक्रिया से जीवित नहीं रहता। वह जीवित रहता है स्वतंत्र प्रेस, निर्भीक नागरिकों और जवाबदेह संस्थानों से।

धर्म और पहचान की राजनीति ने 2025 में समाज को बार-बार विभाजित किया। धार्मिक उन्माद, भीड़तंत्र की मानसिकता और नैतिक पुलिसिंग ने संविधान में निहित समानता, बंधुत्व और धर्मनिरपेक्षता के मूल विचारों को चुनौती दी। धर्म, जो व्यक्ति का निजी आस्था-क्षेत्र होना चाहिए था, वह सत्ता और राजनीति का औज़ार बनता चला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि समाज में अविश्वास बढ़ा, संवाद टूटा और मानवीय रिश्तों में दरारें गहराती चली गईं।

इन तमाम निराशाजनक स्थितियों के बीच 2025 ने उम्मीद की कुछ ठोस झलकें भी दीं। युवाओं ने सवाल पूछे, छात्रों ने अपनी आवाज़ बुलंद की, किसानों और कर्मचारियों ने संगठित होकर अपने अधिकारों की माँग की। नागरिक संगठनों और स्वतंत्र पत्रकारिता ने यह साबित किया कि भारतीय लोकतंत्र पूरी तरह मौन नहीं हुआ है। यह प्रतिरोध केवल सत्ता के विरुद्ध नहीं था, बल्कि उस सामाजिक उदासीनता के विरुद्ध भी था जो धीरे-धीरे हमें भीतर से खोखला कर देती है।

2025 ने यह स्पष्ट कर दिया कि विकास को केवल जीडीपी के आँकड़ों से नहीं मापा जा सकता। जब तक गाँव सुरक्षित नहीं होंगे, किसान आश्वस्त नहीं होगा, मज़दूर सम्मान के साथ नहीं जिएगा, शिक्षक और स्वास्थ्यकर्मी संरक्षित नहीं होंगे, और छात्र भविष्य को लेकर भयमुक्त नहीं होंगे, तब तक 'विकसित भारत' केवल एक आकर्षक नारा ही बना रहेगा। तकनीक तभी सार्थक है जब वह मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी हो, और शासन तभी सफल माना जा सकता है जब उसका प्रभाव अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचे।

बीते वर्षों, और विशेषकर 2025 की सबसे बड़ी सीख यही है कि भारत को बचाने की ज़िम्मेदारी केवल सरकारों की नहीं, बल्कि जागरूक नागरिकों की भी है। लोकतंत्र में चुप्पी तटस्थता नहीं होती; वह अक्सर अन्याय की सबसे मज़बूत सहयोगी बन जाती है। जब हम अन्याय देखकर चुप रहते हैं, तब हम अनजाने में उसके पक्ष में खड़े हो जाते हैं। 2025 ने हमें यह एहसास कराया कि अब चुप रहना विकल्प नहीं रहा। सवाल करना, असहमति जताना और संवाद बनाए रखना ही आज का सबसे बड़ा देशप्रेम है।

2025 केवल एक बीता हुआ वर्ष नहीं है, बल्कि एक चेतावनी और एक अवसर दोनों है। चेतावनी इस बात की कि यदि हमने असमानता, असहिष्णुता और दमन को सामान्य मान लिया, तो लोकतंत्र भीतर से खोखला हो जाएगा। और अवसर इस बात का कि हम विकास की दिशा, राजनीति की भाषा और नागरिक भूमिका—तीनों पर गंभीर पुनर्विचार कर सकते हैं। यदि 2025 से हमने सच में कुछ सीखा है, तो वही सीख आने वाले वर्षों को अधिक मानवीय, अधिक न्यायपूर्ण और अधिक लोकतांत्रिक बना सकती है।

- डॉ० सत्यवान सौरभ,
कवि,स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार,
आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट,
333, परी वाटिका, कौशल्या भवन,
बड़वा (सिवानी) भिवानी

कार्तिक जतरा में राष्ट्रपति ने कहा मुझे राष्ट्रमाता कहलाने का समय नहीं आया है आपकी वहन मां बनकर रहना पसंद करूंगी

गुमला कार्तिक जतरा में राज्यपाल झारखंड के अलावे राज्यपाल व मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ भी मंच मंचासिन रहे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। राष्ट्र पति द्रौपदी मुर्मू मंगलवार को गुमला जिले के रायडीह प्रखंड स्थित मांझाटोली में आयोजित दो दिवसीय अंतरराज्यीय जन सांस्कृतिक समागम 'कार्तिक जतरा 2025' में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं. कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच हवाई मार्ग से गुमला पहुंचीं राष्ट्र पति को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और भव्य स्वागत किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया. शिव शंकर उरांव ने सोहराई कला का प्रतीक चिन्ह भेंट कर राष्ट्र पति का अभिवादन किया. राष्ट्र पति द्रौपदी मुर्मू ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की. उनके साथ छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका, झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने मंच साझा किया. सोमवार को उन्हें जमशेदपुर के मंच से राष्ट्र माता कहा गया था जिसपर उन्होने आज स्वयं को आदिवासी की बेटी तथा 140 करोड़ उनकी परिवार में मां वहन बन कर रहने का उद्गार व्यक्त किया .

जनसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्र पति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि पंखराज कार्तिक उरांव बाबा का सपना गुमला जिले में विश्वविद्यालय की स्थापना करना है. यह हमारे जीवन का भी लक्ष्य है और इसे जल्द पूरा किया जाएगा. विकास को गति देनी है. जनजातीय समुदाय के पास संगीत, नाटक और कला जैसी कई प्रतिभाएं हैं, जिनसे 100 से अधिक लोगों को पद्म श्री पुरस्कार मिल चुका है, जो गौरव की बात है.

राष्ट्र पति ने आगे कहा कि राष्ट्र पति भवन में राष्ट्रीय जनजातीय नृत्य समारोह आयोजित होता रहता है. भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर भी ऐसे मौके मिलते रहते हैं. यहां आना तीर्थ यात्रा जैसा लग रहा है. राष्ट्र पति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि शिक्षा विकास की कुंजी है. बाबा कार्तिक उरांव ने गुमला में विश्वविद्यालय का सपना देखा था. गुमला में विश्वविद्यालय हो, इसके लिए मुझसे आग्रह किया गया है. इसके लिए मैं अपनी तरफ से प्रयास करुंगी. इसके लिए राज्य सरकार के स्तर पर प्रयास होगा तो यह प्रस्ताव एक ना एक दिन जरूर पूरा होगा. क्योंकि शिक्षा ही सामाजिक न्याय का माध्यम बनती है. उन्होंने कहा शिक्षा विकास की पूंजी है. शिक्षा का विकास होगा तभी राज्य का विकास होगा. आपके प्रयास सराहनीय हैं, लेकिन इसके लिए जमीन संबंधित बाधाएं पूरी होने पर यह संभव होगा. एक न एक दिन यह प्रयास जरूर सफल होगा

कार्तिक उरांव सभी के लिए प्रेरणा हैं. वे भारत के गौरव हैं. उन्होंने शिक्षा के महत्व पर विशेष जोर दिया था. विदेश में शिक्षा ग्रहण की, लेकिन अपनी माटी के लिए उनकी सोच गहरी थी. उन्होंने सपना देखा था कि यहां एक विश्वविद्यालय होगा, जहां जतरा के रूप में इस स्थान पर उन्हें याद किया जाएगा. संयोग से झारखंड के मुख्यमंत्री भी जनजातीय समुदाय से हैं.

राष्ट्र पति ने कार्यक्रम की सराहना की. उन्होंने कहा कि झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा को जोड़ने वाली नदियां, पहाड़, पठार और जंगल देश की प्राचीनतम परंपराओं की साक्षी रहे हैं. इस आयोजन में जनजातीय और सदान समुदाय का संगम हो रहा है. उन्होंने कहा कि 140 करोड़ देशवासियों को मेरा परिवार है. मैं इस परिवार के जनजातीय समुदाय की बेटी हूं. मुझे राष्ट्र माता होने का गौरव नहीं आया है. इसके लिए और समय चाहिए तब शायद वो जगह नहीं ले पाऊंगी. इसलिए आपकी बहन और मां होकर रहना ज्यादा पसंद करुंगी. झारखंड में सेवा करना तीर्थयात्रा जैसा अनुभव हो रहा है. राष्ट्र पति ने गुमला के वीर सपूत परमवीर अलबर्ट एक्का, स्वतंत्रता सेनानी जतरा टाना भगत के योगदान को अविस्मरणीय बताया.

राष्ट्र पति ने कहा कि पंखराज कार्तिक उरांव ने जनजातीय चेतना और पहचान को मजबूत बनाया. उन्होंने जनजातीय समाज के उत्थान और देश में सामाजिक एकता के लिए योगदान दिया है. वे हमेशा अमर रहेंगे. वे जनजातीय समाज और भारत के गौरव हैं. वे हमेशा अपनी मिट्टी से जुड़े रहे. उन्होंने शिक्षा को विकास की पूंजी कहा. राष्ट्र पति ने शिक्षा के विकास पर जोर दिया. राष्ट्र पति ने कहा कि जब झारखंड की राज्यपाल थीं जब टाना भगतों की जमीन का रजिस्ट्रेशन एक-एक रुपए देकर किया गया. हम सभी को मिलकर जनजातीय समाज के उत्थान के लिए मिलकर काम करना पड़ेगा. सभी को गांव जाना पड़ेगा. मैं अपने गांव को गोद ले रही हूं. वो मेरी मां है. आर्थिक रूप से ना सही लेकिन दिग्दर्शन तो दे सकते हैं. राष्ट्र पति ने कहा कि जनजातीय हस्तशिल्प की पूरे विश्व में प्रतिष्ठा और मांग है. इस क्षेत्र को प्रोत्साहित करना होगा. अब स्वयं सहायता ग्रुप के माध्यम से महिलाएं सशक्त हो रहीं हैं. उन्होंने जनजातीय समाज के लिए केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का जिक्र किया।

महिलाएं स्वरोजगार से आत्मनिर्भर बन सकती हैं : दीपमाला कश्यप

ब्यूटी पार्लर, केक व रेजिन आर्ट में युवतियां–महिलाएं हुईं दक्ष

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महिला सशक्तिकरण कम्युनिटी सर्विस प्रोजेक्ट के तत्वावधान में ब्यूटी पार्लर, केक मेकिंग एवं रेजिन आर्ट का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर रोटरी भवन, बिलासपुर में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में बड़ी संख्या में युवतियों एवं महिलाओं ने भाग लेकर विभिन्न हुनर सीखकर आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाया।

रेजिन आर्ट का प्रशिक्षण हर्षिता सोनी द्वारा तथा केक मेकिंग का प्रशिक्षण प्रीति घोरे द्वारा दिया गया। शिविर की संचालिका सुधा शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि वे अब तक 1500 से अधिक महिलाओं एवं युवतियों को निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान कर चुकी हैं, जिनमें से अधिकांश आज स्वयं का रोजगार सफलतापूर्वक संचालित कर रही हैं। प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन 50 से अधिक प्रतिभागियों की उपस्थिति रही।समापन समारोह की मुख्य अतिथि एडिशनल पुलिस अधीक्षक दीपमाला कश्यप थीं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि महिलाएं यदि अपने हुनर को पहचान कर स्वरोजगार अपनाएं तो वे न केवल आत्मनिर्भर बन सकती हैं, बल्कि समाज और परिवार को भी सशक्त बना सकती हैं।

शिविर के समापन अवसर पर चार दिवसीय प्रशिक्षण पूर्ण करने वाली सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को हुनरमंद बनाकर आर्थिक रूप से सशक्त करना रहा, जिसमें यह शिविर पूर्णतः सफल रहा।

बिलासा साहित्य शिक्षण संस्थान का दीक्षांत समारोह सफल संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

रायपुर - तुलसी मंगलम भवन रायपुर में बिलासा साहित्य शिक्षण संस्थान का अंतर्राष्ट्रीय स्तरीय दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में का सम्मान हुआ इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छंद के छ के संस्थापक आदरणीय अरुण निगम जी, विशिष्ट अतिथि छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध लोकगीतकार डॉ पीसीलाल यादव जी अध्यक्ष, श्री सुधीर शर्मा वैभव प्रकाशन की उपस्थित में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। संस्थान के संस्थापक डॉ रामनाथ साहू ₹ननकीर (सक्ती), अध्यक्ष डॉ माधुरी डड़सेना ₹मुदिता₹ (धमतरी) व सचिव डॉ ओमकार मृदुल जी (अंबिकापुर) के अथक प्रयास से कार्यक्रम सफल हुआ।

डॉ रामनाथ साहू ₹ननकीर ₹ द्वारा नवप्रस्तारित (2048 अर्ध समवृत्त) छंदग्रंथ "प्रणत" में छंद लेखन हेतु मैजिक बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड से सभी 129 सृजनकारों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। डॉ रामनाथ साहू द्वारा प्रस्तारित निम्न छंदग्रंथ को भी मैजिक बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से सम्मानित किया गया था उनके सृजनकारों को इसी मंच से वर्ल्ड रिकार्ड सम्मान पत्र वितरण कर सम्मानित किया गया---

(1) विश्वामित्र- 41 मात्रा, संपूर्ण 3504 दण्डक, सुनीता केसरवानी+ श्रद्धा पाठक (2) महान- 15 यति, 3667 अर्ध सममात्रिक छंदग्रंथ, अशोक

पटसारिया+प्रियंका भूतड़ा (3) चेतना- 208 समवार्णिक दण्डक रोहिणी पटेल "चंचला" (4) व्यास- 33 मात्रा का 786 सममात्रिक दण्डक माधुरी दुबे (5) ज्ञानेश्वरी साहू ₹ज्ञानेशर- ज्ञानवापी 39 मात्रा।

डॉ. रामनाथ साहू ₹ननकीर ₹ की अन्य नवप्रस्तारित छंद पुस्तकें जो विमोचित हुई

आँगन- नव प्रस्तारित सममात्रिक, आचार्य- नव प्रस्तारित अर्ध समवृत्त, आतुरी- नव प्रस्तारित विषम वृत्त, आरक्त- नव प्रस्तारित समवृत्त, आँचल- नव प्रस्तारित विषम मात्रिक, अनमोल नव प्रस्तारित सवैया, आकृति- प्रस्तारित त्रिपदी, आदित्य- नव प्रस्तारित अर्ध सममात्रिक, आदर्श- नव प्रस्तारित घनाक्षरी, आरंभ- नव प्रस्तारित मात्रिक दण्डक, आत्मभू- नव प्रस्तारित वार्णिक दण्डक

छंद महालय के कलमकारों की विमोचित पुस्तकें--

नरेंद्र सिंह- प्रयास, डॉ अशोक पटसारिया "नादान" की पाँच पुस्तकें--

1.आदि शंकराचार्य विरचित विवेक चूड़ामणि-- भावानुवाद -चौपाई छंद में

2.शब्दानुशासन- पिंगल शास्त्र के विविध छंद

3.छंदानुभूति- छंद आधारित गीत

4.अल्फ़ाज़ अनकहे चुनिंदा ग़ज़लें*

5 मेरा देश महान 15,12 नव प्रस्तारित छंद*

सिद्धेश्वरी सराफ ₹शीलू--- गीत सरिता,

डॉ ललिता यादव- ललिता के लीलाधर,

डॉ रंजना सिंह- आँचल में आकाश,

भारती दिशा- विवेक चूडामणी,

ज्ञानेश्वरी साहू ₹ज्ञानेशर-- छंद रत्नाकर,

माधुरी डड़सेना ₹मुदिता₹ के-- छत्तीसगढ़ी गीत- छुछुंदरी, ग़ज़ल संग्रह-- माधुरी मुस्कान, नवप्रस्तारित गीत-- माधुरी मयंक, बाल साहित्य-- माधुरी महक, क्षणिका संग्रह-- माधुरी मलय, मेरी माँ बालगीत

कार्यक्रम 10 बजे से सुबह से शाम 7 बजे तक हुआ। इसका लाइव प्रसारण भी किया गया। 500 संख्या से भरे सभागार में मिडिया चेनल की उपस्थिति वंदनीय थी। सभी की सराहना प्राप्त हुई। विशेष सहयोग के लिए रायपुर निवासी श्रद्धा पाठक, देवेन्द्र पाठक को, आई हुई मिडिया प्रभारी निर्मला शर्मा ने आभार प्रदर्शन किया।

बड़ा ही पावन व मंगलकारी है प्रभु का नाम : अंकित कृष्ण महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। चैतन्य विहार फेस-2 स्थित गोविन्द धाम में सन्त प्रवर रामदास महाराज (अयोध्या) के पावन सानिध्य में चल रहे नव-दिवसीय दिव्य श्रीराम कथा महोत्सव के अंतर्गत व्यासपीठ से प्रख्यात कथा वाचक श्रीहरिदास अंकित कृष्ण महाराज अपनी रसमयी वाणी में समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीराम कथा श्रवण कराते हुए कहा कि भगवान श्रीराम का चरित्र अत्यंत महिमामयी है।उनकी कथा को श्रवण कर आत्मसात करने से अपने देश व समाज का कल्याण हो सकता है।उनका नाम बड़ा ही पावन व मंगलकारी है।

उन्होंने कहा कि हर मनुष्य को अपने जीवन में श्रीराम नाम का सुमिरन अवश्य करना चाहिए ऐसा करने से व्यक्ति के समस्त पापों व बुराइयों का नाश हो जाता है।साथ ही उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस अवसर पर जगद्गुरु श्रीपीपाद्वाराचार्य बाबा बलरामदास

देवाचार्य महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी राधाप्रसाद देवजू महाराज, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, भागवताचार्य सुरेशचन्द्र शास्त्री, पंडित बिहारी लाल वशिष्ठ, पण्डित दिनेश फलाहारी, धर्म रत्न स्वामी बलरामाचार्य महाराज, बाल कृष्ण व्यास (कांच मन्दिर), आचार्य पूर्णचंद्र कौशिक महाराज, महामंडलेश्वर साध्वी राधानंद गिरि, महंत मोहिनी शरण महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, श्रीमती भारती-दीपक अग्रवाल, श्रीमती दुर्गा-प्रशान्त अग्रवाल, सौरभ राणा, श्रीमती सरोज राणा-ओमचन्द्र राणा, श्रीमती महिमा राणा-सुबोध राणा, श्रीमती निधि चौहान-अभिषेक राणा, श्रीमती सोनम-दीपक अग्रवाल, श्रीमती किरण-होमचन्द्र अग्रवाल आदि की उपस्थिति विशेष रही।

सेवा, सहयोग और करुणा ही धर्म, राष्ट्र व मानवता सर्वोपरि

डॉ. विक्रम चौरसिया

ईश्वर को कोई भगवान कहता है, कोई अल्लाह, कोई वाहेगुरु, तो कोई बुद्धत्व या सत्य का नाम देता है। नाम भिन्न हो सकते हैं, किंतु ईश्वर का अस्तित्व है, तो उसका स्वरूप एक ही होनी चाहिए सार्वभौमिक, समन्वयकारी और जीवनदायी। समस्या नामों या उपासना-पद्धतियों की नहीं, बल्कि उस असहिष्णुता की है, जो विभिन्न व्याख्याओं के कारण समाज में टकराव और विभाजन को जन्म देती है। यदि सृष्टि के संचालन में परस्पर विरोधी इच्छाएँ होतीं, तो प्रकृति में संतुलन के स्थान पर अराजकता दिखाई देती। इसलिए ईश्वर का वास्तविक अर्थ सत्य, चेतना और करुणा से जुड़ा हुआ है, न कि विभाजन से।आज विश्व जिन संघर्षों, युद्धों और घृणा की घटनाओं से गुजर रहा है, उनका मूल कारण ईश्वर की विविध व्याख्याएँ नहीं, बल्कि मानवता की उपेक्षा है। मेरे लिए ईश्वर एक ऐसी सार्वभौमिक चेतन शक्ति है, जो पूरे ब्रह्मांड को संचालित करती है और प्रत्येक जीव में समान रूप से विद्यमान है। एकत्व की भावना समाज को तोड़ती नहीं, बल्कि जोड़ने का कार्य करती है। यह बोध कराती है कि हम सभी उसी एक चेतना के अंश हैं; इसलिए मनुष्य–मनुष्य के बीच ऊँच-नीच, भेदभाव और घृणा का कोई नैतिक औचित्य नहीं हो सकता।

भारतीय दर्शन और चिंतन-परंपरा इस एकत्व की सशक्त साक्षी रही है। महावीर ने अहिंसा को सर्वोच्च धर्म बताया, बुद्ध ने करुणा को मुक्ति का मार्ग माना और महात्मा गांधी ने सत्य को ही ईश्वर का स्वरूप कहा। जैन और बौद्ध दर्शन से लेकर आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन तक, सभी का मूल संदेश यही रहा है कि प्रत्येक जीव में चेतना है और इसलिए हर जीवन सम्मान के योग्य है। इन विचार परंपराओं का निष्कर्ष स्पष्ट है—मानवता सर्वोपरि है, और उसी भावना से राष्ट्र भी सशक्त, सुरक्षित और समरस बनता है।

यदि हम सबका जन्म एक ही प्राकृतिक प्रक्रिया से होता है और अंततः सभी को इसी मिट्टी में विलीन होना है, तो जाति, वर्ग, धर्म या संपत्ति के आधार पर श्रेष्ठता का दावा किस तर्क पर किया जा सकता है? राजा और रंक, अमीर और गरीब अंततः सबकी नियति समान है। जीवन की क्षणभंगुरता हमें यह सिखाती है कि अहंकार नहीं, बल्कि संवेदना ही मनुष्य का वास्तविक आभूषण है।

हाल की घटनाएँ जैसे अहमदाबाद की विमान दुर्घटना इस सत्य को और गहराई से उजागर करती हैं। लोग अपने परिवारों, सपनों और भविष्य की योजनाओं के साथ यात्रा पर निकले थे, लेकिन एक क्षण में सब कुछ समाप्त हो गया। ऐसी घटनाएँ हमें यह स्मरण कराती हैं कि जीवन स्थायी नहीं है। इसलिए संग्रह, प्रतिस्पर्धा और प्रदर्शन से अधिक आवश्यक है सेवा, सहयोग और करुणा।

नववर्ष केवल कैलेंडर बदलने का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन और संकल्प का समय है। इस नए वर्ष में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम धार्मिक, सामाजिक और वैचारिक विभाजनों से ऊपर उठकर मानवता को प्राथमिकता देंगे। हम शक्ति का उपयोग शोषण के लिए नहीं, बल्कि संरक्षण के लिए करेंगे और धर्म को केवल पूजा-पद्धति तक सीमित न रखकर उसे अपने आचरण और सामाजिक व्यवहार में उतारेंगे।

एक नागरिक और एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में मेरा दृढ़ विश्वास है कि विचार केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहने चाहिए। समाज के सबसे उपेक्षित और वंचित वर्गों तक शिक्षा, चेतना और आशा की रोशनी पहुँचाना ही सच्ची साधना है। मलिन बस्तियों में शिक्षा, अधिकारों और मानवीय गरिमा के लिए किया गया हर प्रयास इसी विचारधारा का व्यावहारिक रूप है।

धर्म यदि मनुष्य को मनुष्य से जोड़ न सके, तो वह आस्था नहीं, केवल पहचान बनकर रह जाता है। जब तक जीवन है, किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयास ही सबसे बड़ा धर्म है। एक ईश्वर, एक मानवता और एक ही धरती यदि हम इस सत्य को आत्मसात कर लें, तो हमारा समाज अधिक न्यायपूर्ण, शांत और मानवीय बन सकता है।

चिंतक / मेंटर /सामाजिक कार्यकर्ता
दिल्ली विश्वविद्यालय

विधायक डॉ. जसबीर सिंह द्वारा मिलाप एवेन्यू में इंटरलॉकिंग टाइल्स के कार्य का उद्घाटन

अमृतसर, 30 दिसंबर (साहिल बेरी)

आज आम आदमी पार्टी के अमृतसर पश्चिमी विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने वार्ड नंबर 82 के मिलाप एवेन्यू, गली नंबर 1 में इंटरलॉकिंग टाइल्स लगाने के कार्य का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर वार्ड काउंसलर संदीप सिंह, क्षेत्र के निवासी तथा पार्टी कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

इस मौके पर डॉ. संधू ने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत मान के नेतृत्व में राज्य में विकास की लहर हर गली-मोहल्ले तक पहुंच रही है। उन्होंने कहा कि जनता की लंबे समय से लंबित मांगों को त्वरित प्रभाव से पूरा करना आम आदमी पार्टी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

डॉ. संधू ने यह भी बताया कि अमृतसर पश्चिमी क्षेत्र में सड़कों, गलियों, पानी की आपूर्ति और स्ट्रीट लाइट्स सहित कई विकास परियोजनाएं निर्धारित समय-सारणी के अनुसार तेजी से जारी हैं। सरकार का उद्देश्य प्रत्येक वार्ड में बेहतर बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराना है, ताकि आम लोगों को सुविधाओं का वास्तविक लाभ मिल सके।

अंत में विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने क्षेत्रवासियों को आश्वासन दिया कि वे हमेशा जनता की समस्याओं के समाधान और विकास कार्यों की निगरानी के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी और सरकार का एकमात्र लक्ष्य जनकल्याण और सतत विकास है।

इस अवसर पर बाऊ सिंह, बाऊ गुमानपुरा, जसबीर निक्की, पी.ए. माधव शर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद रहे।

परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ का शिक्षा विभाग में ज्ञापन, शिक्षकों की समस्याओं के शीघ्र समाधान का आश्वासन

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार प्रदेश के प्रतिनिधिमंडल ने सचिवालय, पटना में अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, माननीय शिक्षा मंत्री एवं निदेशक, प्राथमिक शिक्षा को शिक्षकों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु ज्ञापन सौंपा।

प्रतिनिधिमंडल में कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष नवनीत कुमार, प्रदेश संगठन महामंत्री शिशिर कुमार पाण्डेय, प्रदेश कोषाध्यक्ष सौम्या रानी, प्रमंडलीय अध्यक्ष (मुंगेर) जितेन्द्र पाण्डेय सहित अन्य पदाधिकारी शामिल थे।

इस अवसर पर कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष नवनीत कुमार एवं प्रदेश संगठन महामंत्री शिशिर कुमार पांडेय ने संयुक्त रूप से कहा कि महासंघ द्वारा सौंपे गए मांग-पत्र में शिक्षकों की जमीनी समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया है। विभागीय स्तर पर कुछ समस्याओं के निराकरण से संबंधित पत्र अविलंब जारी होने की संभावना है, जिससे शिक्षकों को शीघ्र राहत मिलेगी।

वहीं प्रदेश अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षक प्रकोष्ठ अशोक कुमार एवं एवं महासंघ के प्रदेश कोषाध्यक्ष सौम्या रानी ने बताया कि शिक्षकों के हित से जुड़े सभी मुद्दों को तथ्यों और तर्कों के साथ रखा गया है। शिक्षा विभाग से सकारात्मक पहल का भरोसा मिला है और महासंघ सतत रूप से इसकी समीक्षा करता रहेगा।

प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने कहा कि परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ सदैव शिक्षक हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करता आया है और आगे भी पूरी प्रतिबद्धता के साथ करता रहेगा। उन्होंने कहा कि महासंघ का उद्देश्य केवल समस्याएं उठाना नहीं, बल्कि उनके स्थायी और न्यायसंगत समाधान तक पहुंचना है। शिक्षक समाज की एकता और संगठित प्रयास से ही शिक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाया जा सकता है। अंत में महासंघ की ओर से प्रदेश के समस्त शिक्षकों को नववर्ष की शुभकामनाएं दी गईं तथा ईश्वर से सभी के लिए सुख, समृद्धि और सकारात्मक परिवर्तन की कामना की गई।

भूलवश और जानबूझकर : सांप्रदायिकता विरोधी योद्धा, कवि-समालोचक नासिर अहमद सिकंदर नहीं रहे, जलेसं ने दी श्रद्धांजलि, कहा : अपूरणीय क्षति

रायपुर, 30 दिसंबर 2025। जाते-जाते वर्ष 2025 ने हिंदी साहित्य जगत को एक झटका और दे दिया। विगत चार दशकों से हिंदी कविता और आलोचना के क्षेत्र में प्रगतिशील-जनवादी दृष्टिकोण के साथ अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने वाले नासिर अहमद सिकंदर का आज सुबह बजे हृदयाघात से निधन हो गया। वे विगत कुछ वर्षों से शारीरिक व्याधियों से जूझ रहे थे। उनका अंतिम संस्कार कल शाम को भिलाई में किया गया। उत्तरप्रदेश से संबंध रखने वाले नासिर भिलाई स्टील प्लांट से सेवा निवृत होने के बाद भिलाई में ही बस गए थे। कई साहित्यिक मित्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर उन्हें अंतिम विदाई दी। नासिर अहमद छत्तीसगढ़ के नवोदित कवियों को लेखन-प्रकाशन का संबल देने के लिए जाने जायेंगे। विगत दो वर्षों से वे यह महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। दैनिक नवभारत में छत्तीसगढ़ के युवा कवियों की कविताओं पर आधारित स्तंभ 'अभी बिल्कुल अभी' के उन्होंने संपादन के लिए वे काफी चर्चित हुए थे। इसके अलावा उन्होंने देशबंधु सहित कई दैनिक समाचार पत्रों के साहित्यिक पृष्ठों का भी संपादन किया था और भास्कर राय चौधरी तथा रजत कृष्ण जैसी छत्तीसगढ़ की बेहतरीन काव्य-प्रतिभाओं को सामने लाया था। साक्षात्कारों पर केन्द्रित श्रृंखला 'आमने सामने' के संपादन के लिए भी वे काफी चर्चित हुए थे। हाल ही में कवि संतोष चतुर्वेदी के ब्लाग 'पहली बार" में युवा कवियों की कविताओं पर उनकी नियमित टिप्पणी भी उल्लेखनीय है।

साहित्य के क्षेत्र में नासिर अहमद सिकंदर का योगदान जो कुछ भी घट रहा है दुनिया में, खोलती है खिड़की, इस वक्त मेरा कहा, भूलवश और जानबूझकर, अच्छा आदमी होता है अच्छा, चयनित कविताएं (चयन एवं संपादन सुधीर सक्सेना) आदि कविता संग्रहों, बयपन का बाइस्कोप, प्रगतिशीलता की पैरवी आदि आलोचनात्मक पुस्तकों और कुछ साक्षात्कार (प्रसिद्ध लेखकों से लिए गये साक्षात्कार) आदि के जरिए याद किया जाएगा। उन्होंने साहित्यिक पत्रिका 'समकालीन हस्ताक्षर' के केदारनाथ अग्रवाल तथा चन्द्रकांत देवताले पर केन्द्रित दो अंकों का संपादन भी किया था। इन अंकों के कारण पूरे देश के साहित्य जगत का ध्यान उनके संपादकीय कौशल पर गया।

अपनी जनवादी रुझान की रचनाओं के साथ नासिर अहमद न केवल उत्कृष्ट साहित्यकार थे, बल्कि कुशल संगठनकर्ता भी थे। छत्तीसगढ़ निर्माण के बाद से ही वे जनवादी लेखक संघ के केंद्रीय कार्यकारिणी के सदस्य और छत्तीसगढ़ जलेसं के महासचिव थे। उनके स्वास्थ्य में गिरावट के बाद उनके ही अनुरोध पर पिछले सम्मेलन में उन्हें महासचिव पद से निवृत कर उपाध्यक्ष बनाया गया था। जनवादी लेखक संघ ने उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना का इजहार किया है। अपने बयान में जलेसं के छत्तीसगढ़ सचिव पूर्णचंद्र रथ ने कहा है कि देश में सांप्रदायिक मनोभाव के विकास से वे काफी व्यथित थे। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और सांप्रदायिकता के खिलाफ लेखकों को एकजुट करने के काम में लगे रहे। साहित्य में प्रचलित 'कला, कला के लिए' सिद्धांत का विरोध करते हुए उन्होंने कला को जीवन और राजनीति से जोड़ने की पहलकदमी की। इस प्रकार, उनका पूरा साहित्य कलावाद की उलटबांसियों और सांप्रदायिकता के खिलाफ युद्ध का घोषणापत्र है, जो साहित्य को प्रगतिशील-जनवादी राजनीति और मानवीय सरोकारों के साथ जोड़ने का काम करता है। उनके देहावसान पूरे संगठन और साहित्यिक सरकारों के लिए अपूरणीय क्षति है।

पूर्णचंद्र रथ, सचिव, जनवादी लेखक संघ, छत्तीसगढ़

हर वर्ष की भांति नगर निगम पेंशनर्ज यूनियन अमृतसर द्वारा धार्मिक कैलेंडर 2026 का विमोचन किया गया, जिसे श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की 350वीं शहादत शताब्दी को समर्पित किया गया है।

अमृतसर, 30 दिसंबर (साहिल बेरी)

यह धार्मिक कैलेंडर नगर निगम के सहायक आयुक्त सुरिंदर सिंह जी द्वारा जारी किया गया। कैलेंडर का विमोचन करते हुए उन्होंने यूनियन सदस्यों को बधाई दी तथा शहरवासियों से अपील की कि वे शहर की स्वच्छता बनाए रखने के लिए नगर निगम का सहयोग करें। इस अवसर पर मेयर जतिंदर सिंह मोती भाटिया को धार्मिक कैलेंडर भेंट कर सम्मानित किया गया।

यूनियन अध्यक्ष कर्मजीत सिंह के.पी. ने निगम कर्मचारियों एवं शहरवासियों को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों और पेंशनरों की मांगों के लिए संघर्ष करने हेतु यूनियन हर समय तैयार है, चाहे यह संघर्ष पंजाब सरकार के साथ हो या नगर निगम प्रशासन के साथ।

इस अवसर पर बलजीत सिंह बाजवा, तरसेम सिंह, सतवंत सिंह, मुलख राज सफरी, सुखदेव सिंह अजनाला, जसपाल सिंह सोहल, बलकार सिंह, विनोद हांडा, कुलवंत सिंह, अमरपाल सिंह, देविंदर सिंह, तिलक राज, मनजीत सिंह सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पंजाब के उद्योगों पर विचार-विमर्श के लिए पहुंची संसदीय स्थायी समिति

औद्योगिक विकास और रोजगार के अवसरों पर रहा फोकस
स्थानीय उद्योगों की चुनौतियों पर संसदीय समिति ने किया विचार-विमर्श

अमृतसर, 30 दिसंबर (साहिल बेरी)

उद्योगों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति द्वारा अमृतसर में औद्योगिक विकास, मौजूदा चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने तथा जमीनी स्तर की स्थिति के आधार पर नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से अध्ययन दौरा किया गया। इस दौरान समिति के चेयरपर्सन श्री तिरुची शिवा, माननीय राज्यसभा सदस्य, ने पंजाब के विभिन्न उद्योगपतियों से उद्योगों से संबंधित विस्तृत जानकारी भी प्राप्त की।

इस अवसर पर समिति के माननीय सदस्यों के साथ स्थानीय उद्योगपति, विभिन्न औद्योगिक संघों के प्रतिनिधि, जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी तथा बैंकिंग क्षेत्र के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान अमृतसर और आसपास के क्षेत्रों में संचालित छोटे, मध्यम और बड़े उद्योगों की स्थिति पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक को संबोधित करते हुए चेयरपर्सन श्री शिवा ने स्थानीय उद्योगपतियों द्वारा उठाए गए औद्योगिक नीतियों के क्रियान्वयन, बिजली, कच्चा माल, बुनियादी ढांचा, परिवहन, निर्यात सुविधाएं, श्रम से जुड़े मुद्दे और वित्तीय सहायता जैसी प्रमुख चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि उद्योगों के लिए ऋण प्रक्रिया को सरल बनाने, ब्याज दरों में राहत देने और समय पर वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए बैंकों को इस संबंध में उपयुक्त नीतियां बनानी चाहिए।

बैठक में उपस्थित बैंकिंग क्षेत्र के अधिकारियों ने उद्योगों के लिए उपलब्ध विभिन्न ऋण योजनाओं, केंद्र और राज्य सरकार की वित्तीय योजनाओं, मुद्रा लोन, एमएसएमई सेक्टर के लिए विशेष नीतियों और ऋण सहायता तंत्र के बारे में विस्तार से जानकारी साझा की। बैंक अधिकारियों ने उद्योगपतियों को बैंकिंग नीतियों के अनुसार दस्तावेजी प्रक्रिया पूरी करने के लिए भी जागरूक किया।

बैठक को संबोधित करते हुए पंजाब के प्रधान सचिव श्री के.के. यादव ने कहा कि छोटे और मध्यम उद्योगों को मजबूत करने के लिए पंजाब सरकार द्वारा मजबूत नीतिगत समर्थन, सरल और समयबद्ध नियामक प्रक्रियाएं तथा इन्वेस्ट पंजाब के माध्यम से सक्रिय हैंडहोल्डिंग जैसे कदम उठाए जा रहे हैं, ताकि परियोजनाओं को शीघ्र मंजूरी मिल सके और उनकी सुचारु कार्यप्रणाली सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये उद्योग पंजाब की औद्योगिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और रोजगार सृजन, नवाचार तथा संतुलित क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

श्री यादव ने आगे कहा कि पंजाब सरकार लगातार औद्योगिक हितधारकों के संपर्क में है ताकि उनकी जरूरतों और चुनौतियों को समझा जा सके। सरकार का प्रयास है कि उद्योगपतियों को प्रक्रियात्मक जटिलताओं से मुक्त कर उन्हें विकास और उत्पादकता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सहयोगी शासन उपलब्ध कराया जाए।

जिला प्रशासन द्वारा औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उठाए जा रहे कदमों, उद्योग-अनुकूल नीतियों, सिंगल विंडो प्रणाली, सरकारी मंजूरियों और बुनियादी सुविधाओं में किए जा रहे सुधारों के बारे में भी जानकारी दी गई। प्रशासन ने उद्योगपतियों को हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

संसदीय स्थायी समिति के सदस्यों ने सभी हितधारकों द्वारा दिए गए सुझावों और मुद्दों को ध्यानपूर्वक सुनते हुए कहा कि इस प्रकार के अध्ययन दौरे नीति निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। समिति ने भरोसा दिलाया कि अमृतसर सहित पंजाब के औद्योगिक क्षेत्र को मजबूत करने के लिए प्राप्त सुझावों को केंद्र सरकार के स्तर पर रिपोर्ट में शामिल किया जाएगा। समिति ने कहा कि औद्योगिक विकास से रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को और गति मिलेगी।

बैठक के दौरान विभिन्न उद्योगपतियों द्वारा चेयरपर्सन श्री शिवा और समिति के सदस्यों को स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित भी किया गया।

इस बैठक में समिति के अन्य सदस्य श्रीमती समिता उदय वाघ, श्री दरोगा प्रसाद सरोज, श्री नीरज डांगी, श्रीमती सुलातो दियो, श्री अफ़ज़ल अंसारी, श्री हनुमान बेनीवाल, श्रीमती वीना देवी, श्री हसमुख भाई, सोमा बाई पटेल, के.एम. सुधा आर., डॉ. मल्लू रवि, श्री विभू प्रसाद तराई, उपायुक्त अमृतसर श्री दलविंदरजीत सिंह, अतिरिक्त उपायुक्त श्री रोहित गुप्ता सहित उद्योग विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

हेरोइन–आईसीई सप्लाई चेन का पर्दाफाश; 4 किलो हेरोइन, 1 किलो आईसीई, एक ग्लॉक पिस्टल सहित सात गिरफ्तार

– आगे की जांच जारी, आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां व बरामदगियां संभव : सीपी अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा-निर्देशों के अनुसार पंजाब को नशामुक्त राज्य बनाने के लिए चल रही मुहिम के तहत बड़ी सफलता हासिल करते हुए अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने सात आरोपियों को 4.075 किलोग्राम हेरोइन, 1 किलोग्राम मेथामफेटामाइन (जिसे आम तौर पर 'आईसीई' कहा जाता है) और एक 9 एमएम ग्लॉक पिस्टल सहित गिरफ्तार कर पाकिस्तान-आधारित हैंडलरों से जुड़े सीमा पार संचालित नशा तस्करी कार्टेल का पर्दाफाश किया है। यह जानकारी आज यहां पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान अमृतसर के गांव जसरोर के जजबीर सिंह उर्फ जज (21), अमृतसर के अजनाला के जसपाल सिंह उर्फ जस्स (22), गुरदासपुर के गांव लोपां के अनमोलप्रीत सिंह (19), गुरदासपुर के गांव संदलपुर के हरपिंदर सिंह उर्फ भिंदा (32), गुरदासपुर के गांव संदलपुर के तरुनप्रीत सिंह (20), अमृतसर के गांव बुआ नंगली के देविंदर सिंह उर्फ बाऊ (33) तथा अमृतसर के गांव बुआ नंगली के मनदीप सिंह (24) के रूप में हुई है।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच से सामने आया है कि ये नशीले पदार्थ पाकिस्तान से तस्करी कर हैंडलरों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से स्थानीय मॉड्यूलों के जरिए पूरे राज्य में वितरित किए जा रहे थे। उन्होंने कहा कि इस मामले में आगे–पीछे के सभी संबंधों का पता लगाने के लिए विस्तृत जांच की जा रही है।

इस ऑपरेशन का विवरण साझा करते हुए पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि पुख्ता सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने पहले जजबीर सिंह उर्फ जज को गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से 225 ग्राम हेरोइन बरामद की। जांचकर्ताओं ने डिजिटल संचार के माध्यम से लगातार पूछताछ और तकनीकी विश्लेषण की मदद से सप्लाई चेन को तोड़ते हुए उसके साथी जसपाल सिंह उर्फ जस्स को गिरफ्तार कर 1.6 किलोग्राम हेरोइन बरामद की गई।

उन्होंने बताया कि लगातार खुलासों के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने अनमोलप्रीत सिंह, हरपिंदर सिंह उर्फ भिंदा और तरुनप्रीत सिंह को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 2.2 किलोग्राम हेरोइन और बरामद की। उन्होंने कहा कि जांच में सामने आया है कि ये आरोपी पाकिस्तान-आधारित हैंडलरों के स्पष्ट निर्देशों पर काम कर रहे थे और कूरियर व डिस्ट्रीब्यूटर के रूप में जिले भर में नशीले पदार्थों की आपूर्ति का समन्वय कर रहे थे।

सीपी ने बताया कि इसी कार्रवाई के दौरान नेटवर्क के अगले चरण का खुलासा तब हुआ, जब पुलिस ने नियमित गश्त के दौरान 9 एमएम ग्लॉक पिस्टल और एक मोटरसाइकिल सहित देविंदर उर्फ बाऊ और मनदीप सिंह को गिरफ्तार किया। आगे की गहन पूछताछ में उनके कब्जे से 1 किलोग्राम आइस बरामद की गई।

सीपी गुरप्रीत भुल्लर ने बताया कि आपराधिक रिकॉर्ड से पता चलता है कि गिरफ्तार आरोपी जजबीर उर्फ जज पहले ही हत्या के प्रयास के एक मामले में शामिल है, जसपाल सिंह उर्फ जस्स आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमे का सामना कर रहा है और देविंदर सिंह उर्फ बाऊ एनडीपीएस एक्ट के तहत दो मामलों में आरोपी है। उन्होंने यह भी बताया कि जांच के दौरान सामने आया है कि आरोपी देविंदर उर्फ बाऊ लगभग दस वर्ष दुबई में रहने के बाद करीब डेढ़ वर्ष पहले ही भारत लौटा था, जिसके दौरान उसने अंतरराष्ट्रीय नशा तस्करों से संपर्क स्थापित किए थे।

इस संबंध में दो अलग-अलग मामले दर्ज किए गए हैं। थाना सदर अमृतसर में एफआईआर नंबर 272 दिनांक 23-12-2025 को एनडीपीएस एक्ट की धारा 21-बी, 21-सी और 29 के तहत तथा थाना छावनी अमृतसर में एफआईआर नंबर 279 दिनांक 27-12-2025 को आर्म्स एक्ट की धारा 25 तथा एनडीपीएस एक्ट की धारा 21-सी और 29 के तहत दर्ज की गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**